Vol.19, Issue 4 | Annual Subscription ₹420

February 2020

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

INDIA
www.rotarynewsonline.org

Rotary

IA से एक पल

इंटरनेशनल असेंबली, सैन डिएगो में रो ई निदेशकों भरत पांड्या और कमल संघवी के साथ DGE यों के जीवनसाथी।

चित्र: DGE चिन्नपा रेड्डी

विषयसूची

12 क्षेत्रीयकरण और संघवाद, आगे बढ़ने का मार्ग: भरत पांड्या

एक भव्य बधाई समारोह के साथ रोटरी क्लब कलकत्ता ने उसकी 100वीं सालगिरह मनाई जिसमें भारत एवं विदेश के वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं ने हिस्सा लिया। .

16 होल्गर नेक रोटरी के बदलने और उन्नति करने के अवसरों को देखते है

सैन डिएगो में सम्पन्न हुई अंतर्राष्ट्रीय सभा में नवनिर्वाचित रो ई अध्यक्ष ने अगले वर्ष की उनकी विषयवस्तु की घोषणा की।

22 आइए हम ऐसी सेवा परियोजनाएं करें जो 10 प्रतिशत सरकारी कार्यों का प्रतिबिंब हों: शेखर मेहता

रोटेरियनों को अब सरकार का हाथ बंटाने और बड़ी सामुदायिक सेवा परियोजनाएं करने की आवश्यकता है।

26 कॉलेज की लड़कियाँ के लिए शिक्षा का उपहार

रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ जरूरतमन्द कॉलेज छात्राओं को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।

32 आइये हम संग्रहित दान के बल का लाभ उठाएं: RIDN वेंकटेश

रो ई मंडल 3232 एक स्वदेशी नेतृत्वकर्ता का उत्सव मनाता है।

48 इंस्टिट्यूट दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले सफल व्यक्तियों को सम्मानित करता है

डेयर टू ड्रीम अवार्ड्स उन लोगों को प्रदान किए गए जिन्होंने चुनौतियों का सामना किया और सफल हुए।

52 अपने 75वें स्थापना दिवस पर रोटरी क्लब नागपुर मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए बना सांता

क्लब ने विभिन्न पहलों के साथ समुदाय को प्रसन्न करके उसकी प्लैटिनम जयंती का उत्सव मनाया।

कवर पर: सैन डिएगो में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सभा में कुछ भारतीय DGEयों की पत्नियाँ।

चित्र: © **rotary.org**

रंगीन पन्नों पर इंदौर इंस्टिट्यूट

जनवरी अंक के कवर पर इंदौर इंस्टिट्यूट में वी मुत्तुकुमारण द्वारा खेंची गई दुर्गा वंदना की अनोखी भावपूर्ण तस्वीर को देखकर मैं खुश हूँ। संपादक का सन्देश जिसका शीर्षक है *याद रखने योग्य एक इंस्टिट्यूट* में, इंस्टिट्यूट का सार प्रस्तुत किया गया। रो ई निदेशक भरत पांड्या ने अपनी विलक्षण योग्यता द्वारा कार्यक्रमों पर कड़ा नियंत्रण रखा। रोटरी की जानकारी और क्लब परियोजनाओं से भरी एक खूबसूरत पत्रिका प्रकाशित करने के लिए संपादक और उनकी टीम को मेरी शुभकामनाएँ।

अन्य विचारोत्तेजक लेख है *सफल होने के लिए महिलाओं को अवसर चाहिए, एहसान नहीं।* महिलाओं के सशक्तिकरण को लेकर हल्ला मचा हुआ है लेकिन अगर निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाएं शामिल नहीं हो सकती तो वे सशक्त कैसे बनेंगी।

स्वामी विवेकानंद ने उचित ही कहा था, उन्हें केवल शिक्षा दीजिए और वह सशक्त होने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम है। सामाजिक परिवर्तन के लिए महिलाओं एवं लड़कियों को सशक्त बनाना महत्वपूर्ण है।

हमारे घरों और समाज में पितृसत्ता व्याप्त है क्योंकि महिलाऐं आज भी घर पर क्रूरता, दुर्व्यवहार और अधीनता का सामना करती है। ऐसी महिलाऐं बोलने की हिम्मत कैसे कर सकती है?

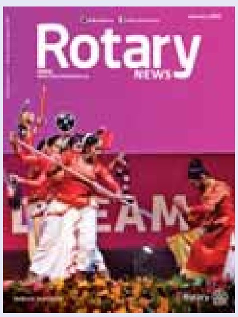

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूपनगर - रो ई मंडल 3080

इंदौर इंस्टिट्यूट में प्रतिष्ठित पोलियो पायनियर पुरस्कार मिलने पर PRID अशोक महाजन को बधाइयाँ। टीआरएफ के सितारा प्रदर्शक उनकी दरियादिली के लिए प्रशंसा के हक़दार है। इंस्टिट्यूट में रोटरी नेतृत्वकर्ताओं द्वारा दिए गए सभी भाषण बढ़िया थे। सत्रों की रंगीन तस्वीरें इस अंक को पढ़ने और देखने दोनों में रोचक बनाती है।

स्मृति ईरानी का कथन कि ''हमें घर से शुरुआत करनी होगी, क्योंकि इस बात के लिए हम जिम्मेदार है कि हमारे लड़के महिलाओं को किस तरह से देखते है या हमारी लड़कियाँ उनके अधिकारों के लिए किस तरह खड़ी होती है'' विचारोत्तेजक है।

रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी द्वारा व्यावसायिक प्रशिक्षण पर दिया गया सन्देश रोटरी से जुड़ने का उद्देश्य बताता है। पढ़कर ख़ुशी हुई कि रोटरी क्लब कलकत्ता जनवरी 2020 में 100 वर्ष का होने जा रहा है। रोटरी द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों पर मलोनी की टिप्पणी आँखें खोल देने वाली है।

परियोजनाओं के लिए टीआरएफ निधि को विवेकपूर्ण ढंग से खर्च करने पर न्यासी प्रमुख PRIP के आर रविन्द्रन का भाषण उल्लेखनीय है। मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि AKS सदस्यों की संख्या 1,000 के पार हो गई है और सूची में भारत दूसरे स्थान पर है। देने के लिए मदर टेरेसा का सिद्धांत अद्भुत है: ''जब तक तकलीफ ना हो तब तक दें, और फिर थोड़ा और। कुलमिलाकर, जनवरी अंक शानदार है और इसने अपनी गुणवत्ता को बरकरार रखा है।

फिलिप मुलापोने एम टी, रोटरी क्लब
त्रिवेंद्रम सबअर्बन - रोई मंडल 3211

मैं हर माह *रोटरी न्यूज़* का इंतजार करता हूँ और इसे एक बार में ही पढ़ता हूँ। जनवरी अंक में इंदौर इंस्टिट्यूट को इतनी अच्छी तरह से कवर किया गया है कि मुझे ऐसा लगा मैं उस कार्यक्रम में मौजूद था। तस्वीरें बहुत ही बढ़िया है और इंस्टिट्यूट के सभी पहलुओं को कवर किया गया है।

अध्यक्ष के संदेश में चार-मार्ग परीक्षण पर ज़ोर दिया गया है। हमारे क्लब ने सिंधुताई सपाकल को फोर वे टेस्ट पुरस्कार दिया, जिन्होंने 1,400 बच्चों को गोद लिया है। इस पुरस्कार समारोह में RIPN शेखर मेहता ने भाग लिया जिन्होंने सिंधुताई को रोटरी से हर तरह की मदद मिलने का आश्वासन

रोटरी में समूह गतिशीलता

लेख *रोटरी में समूह गतिशीलता सबसे अच्छी तरह कार्य करती है: शेखर मेहता* नव निर्वाचित गवर्नरों को उत्कृष्ट मार्गदर्शन प्रदान करता है। रोटेरियनों की एक सामूहिक टीम समाज के लिए नेक कार्य करना संभव बनाती है। भारत से पोलियो का उन्मूलन ऐसे ही कार्य की एक समूह गतिशीलता है। इस पहल ने बच्चों की जिंदगियों को बचाया है खासकर उनकी जो सुविधा से वंचित परिवारों से थे और इस अपंग कर देने वाली बीमारी से अवगत नहीं थे।

टी डी भाटिया, रोटरी क्लब दिल्ली
मयूर विहार - रो ई मंडल 3012

यह एक अत्यावश्यक सेमीनार था जिसे रोटरी क्लब सेवन हिल्स - धारवाड़, रो ई मंडल 3170, द्वारा MHM पर आयोजित किया गया था। रोटरी एक ऐसा मंच है जहाँ पर महिलाऐं और पुरुष एक साथ मिलकर बिना किसी अवरोध के मासिक धर्म के दौरान उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर चर्चा कर सकते है।

दोबारा इस्तेमाल किये जा सकने वाले पैड और मेन्सट्रूअल कप की अवधारणा एक नवीन विचार है। स्कूली लड़कियों को हैप्पी किटों का वितरण करना और उन्हें हाथों की धुलाई और शौचालय का इस्तेमाल करने की महत्ता के बारे में शिक्षित करना इस सेमीनार के प्रमुख मुद्दे थे। इस समारोह ने चार रोटरी मंडलों के बीच के संबंध को प्रतिबिंबित किया जो एक आम सामाजिक मुद्दे हेतु एकत्रित हुए थे।

चिन्मय महापात्रा
रोटरी क्लब भुवनेश्वर, हेरिटेज
रो ई मंडल 3262

दिया। टीआरएफ सेमीनार पर रिपोर्ट सूचनाप्रद और रोचक है। हमारा क्लब ₹1 करोड़ के मूल्य का एक वैश्विक अनुदान कार्यान्वित कर रहा है जो कोलकाता और पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों के 20 स्कूलों में WinS परियोजना को करेगा। अगले अंक का इंतज़ार रहेगा।

आर के बुबना
रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

इंदौर इंस्टिट्यूट की व्याख्यात्मक तस्वीरों के साथ विहंगम दृश्य जनवरी अंक को अभिनव और पूर्ण बनाते है। यह टीम रोटरी न्यूज़ द्वारा उत्कृष्ट पत्रकारिता किए जाने का सबूत है। बधाई हो और इसी तरह प्रयास करते रहें।

डॉ बी नागलिंगम पिल्लई
रोटरी क्लब नागेरकॉइल - रो ई मंडल 3212

मैं RIPN शेखर मेहता के DGEयों के संबोधन से प्रभावित हूँ। उनका संदेश - दिल से सोचों, दिमाग से नहीं - एकदम उपयुक्त है और अगर उसका अनुसरण किया जाए, तो यह हमारे समाज में बड़ा परिवर्तन लाएगा। चलिए हम सभी मिलकर भारत को 2025 तक साक्षर बनाने के उनके सपने को साकार करने हेतु कार्य करें।

आर तायुमानवन, रोटरी क्लब कडुलोर
मिडटाउन - रो ई मंडल 2981

रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी ने उच्च नैतिक मानकों पर निर्मित व्यावसायिक सेवा के बारे में उचित ही कहा है। 20 वर्षों से अधिक समय से रोटेरियन होने के नाते, मैं ऐसे गुणों वाले क्लब सदस्यों और चार मार्ग परीक्षण के पूर्ण अनुयायियों से मिला हूँ।

इंदौर के सराफा बाज़ार पर संपादक रशीदा का लेख बताता है कि उन्होंने और उनके साथियों ने स्वाद की विविधता के लिए प्रसिद्ध इस बाज़ार में मिलने वाले विभिन्न जायकों का कितना आनंद लिया। उन्होंने अपने संपादक के संदेश में रो ई निदेशक डॉ भरत पांड्या और इंस्टिट्यूट अध्यक्ष राजू सुब्रमण्यम को एक सुव्यवस्थित ज़ोन इंस्टिट्यूट के लिए जोशपूर्ण श्रद्धांजलि दी। RIPN शेखर मेहता ने DGEयों से दिमाग के बजाय, दिल से सोचने का आग्रह किया है, आगामी मंडल नेतृत्वकर्ताओं के लिए एक सामयिक सलाह। सदस्यता में ठहराव से निपटने के लिए, प्रत्येक रोटेरियन को एक नया सदस्य शामिल करना चाहिए, यदि ऐसा किया जाता है तो यह रोटरी की सदस्यता को दोगुनी कर देगा।

आइए हम सभी डॉ बीना व्यास, नवनिर्वाचित IIW अध्यक्ष, को उनके सर्वोत्तम प्रयास के लिए शुभकामनाएँ दें। वह इस प्रतिष्ठित पद को संभालने वाली सातवी भारतीय होंगी और हम कामना करते है कि IIW प्रमुख के रूप में उनका एक बढ़िया सफल कार्यकाल हो।

यह पढ़कर ख़ुशी हो रही है कि शिकागो में रोटरी संस्थापक पॉल हेरिस के घर को रोटेरियनों के अनुदानों की मदद से पुनर्निर्मित किया जाएगा। मुझे आशा है कि इस कार्य के समय से पूर्ण होने के लिए अधिक योगदान मिलेंगे।

एस मुनिआंदी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट
रो ई मंडल 3000

लेख *इंदौर के स्ट्रीट फ़ूड का मज़ा* लेना ने मेरे परिवार को इतना प्रभावित किया है कि हमने फरवरी में इंदौर जाने के लिए हमारी टिकटें बुक कर ली है। कवरेज और तस्वीरें जानकारीपूर्ण है। हमारी छुट्टी की योजना बनाने में हमारी मदद करने के लिए आपका धन्यवाद।

राकेश भाटिया
रोटरी क्लब बेलूर - रो ई मंडल 3291

एक बार फिर संपादक अपनी मनोरम ढंग से लिखी गई संपादकीय के द्वारा हमारे समक्ष ज़ोन इंस्टिट्यूट की घटनाओं का सजीव प्रसारण प्रस्तुत करने में सफल रही। इसे जारी रखें।

वी जी देओधर
रोटरी क्लब नासिक - रो ई मंडल 3030

कवर स्टोरी *आत्महत्या मदद के लिए एक पुकार है* को पढ़कर, मैं यह जानकर हैरान था कि लोग शिक्षा, पारिवारिक समस्याओं से लेकर स्वास्थ्य मुद्दों तक, विभिन्न कारणों के लिए कड़े कदम उठाने हेतु तैयार है। लेकिन आत्महत्या का प्रमुख कारण अवसाद की तीव्रता को सहन करने की असमर्थता है।

डॉ लक्ष्मी द्वारा स्थापित हेल्पलाइन स्नेहा के बारे में जानकर ख़ुशी हुई, जो स्वयंसेवकों के एक दल की मदद से अवसाद से ग्रस्त लोगों को 24x7 सेवा देने की पेशकश करती है। मित्रों और सामाजिक संबंधों के साथ एक अच्छा पारिवारिक जीवन आत्महत्या के विचारों से बचने का सफल साधन है।

एन जगदीसन, रोटरी क्लब एलुरु
- रो ई मंडल 3020

हमारे विमानन अधिकारियों को टीसीए श्रीनिवास राघवन द्वारा लिखित लेख *आउच... वे देर रात्रि की उड़ानें!* में दिए गए प्रासंगिक संदेश पर ध्यान देना चाहिए और सुधारात्मक कदम उठाने चाहिए। सम्पादकीय दल को एक खुशहाल और समृद्ध नव वर्ष के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

के देवराजन, रोटरी क्लब
कोयम्बटूर ईस्ट - रो ई मंडल 3201

अपने विचार संपादक को भेजें:
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com
पर ई-मेल करें।
Click on Rotary News Plus in our website
www.rotarynewsonline.org
to read about more Rotary projects.

अपने संयोग को मजबूत बनायें

साथी रोटेरियनों और रोटरी परिवार के सदस्यों,

115वें जन्मदिन की बधाइयाँ! 1905 से लेकर अब तक दुनिया में बहुत कुछ बदल चुका है। तब, वैश्विक जनसंख्या लगभग 1.7 बिलियन थी। आज, यह 7.7 बिलियन है। 115 वर्ष पहले, संयुक्त राज्य में प्रति 100 लोगों पर पांच टेलीफ़ोन हुआ करते थे। 2020 में, ऐसा अनुमान है कि 96 प्रतिशत यूएस की जनसंख्या के पास एक सेलफोन है - और चीन और भारत दोनों में एक बिलियन से अधिक सेलफोन इस्तेमाल में है।

रोटरी की स्थापना के 115 वर्षों के भीतर, ऐसा प्रतीत होता है कि रोटरी के मूल्यों को छोड़कर सभी चीज़ें बदल गई है। हमने शुरुआत की, और हम साहचर्य, अखंडता, विविधता, सेवा और नेतृत्व के प्रति प्रतिबद्ध रहे। जबकि हमारा *स्वयं से बढ़कर सेवा* का सिद्धान्त वर्ष 1911 का है, उन शब्दों के पीछे की धारणा पहले से ही रोटरी संस्थापकों के मन में बैठी हुई थी।

चूंकि दुनिया भर में बदलाव की गति बढ़ती ही जा रही है, इसलिए रोटरी सेवा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। सेवा परियोजनाओं के बारे में पढ़ना एक बात होती है, उन्हें कार्यान्वित होते देखना एक और उन परियोजनाओं से लाभान्वित हुये लोगों के कृतज्ञ चेहरों को देखना एक अलग बात होती है। रोटरी परियोजनाएं ज़िंदगियों को परिवर्तित करती है और दुनिया को जोड़ती है। और पिछले एक वर्ष में, मैंने कुछ अद्भुत परियोजनाओं को कार्यान्वित होते देखा है।

पिछले वर्ष गे और मैंने जापान के फुकुशिमा प्रांत का दौरा किया था। दुनिया के कुछ क्षेत्रों को मार्च 2011 में फुकुशिमा में आई तबाही का सामना पड़ा, जब भूकंप के कारण उत्पन्न हुई सुनामी नाभिकीय विद्युत संयंत्र में त्रासदी का कारण बनी। लेकिन आज फुकुशिमा की कहानी तबाही की कहानी नहीं है, बल्कि उम्मीद और नवीकरण की है। रोटरी अनुदानों ने आपदा से पीड़ित लोगों के लिए चिकित्सीय एवं मानसिक स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच को बेहतर बनाने में मदद की है और इन समुदायों के अकेलेपन को दुनिया के अन्य हिस्सों के उन लोगों के साथ अनुभवों को साझा करके कम किया है जो आपदाओं से उबर चुके है। हमारे अनुदानों ने स्व-प्रेरण को प्रोत्साहित करने और क्षेत्र में स्थायी दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ को बहाल करने में भी मदद की है।

शंघाई में, मैंने कैरियर्स इन केयर कार्यक्रम के बारे में जाना। यह प्रवासी श्रमिकों द्वारा वरिष्ठजन देखभाल ग्रहों में कुशल पेशेवरों की आवश्यकता की पूर्ति करने में मदद करता है। एक कोर्स करने के बाद, प्रशिक्षुओं को अपने रोजगार की संभावना को बढ़ाने हेतु प्रमाणन प्राप्त होता है वहीं देखभाल उद्योग इस विस्तारित प्रतिभा समूह से लाभान्वित होता है। इस प्रकार की रोटरी परियोजनाएं इसलिए सफल होती है क्योंकि वे एक स्थानीय जरूरत को संबोधित करती है, और अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए इनके पास स्थानीय सरकारों से वित्त प्राप्त करने की क्षमता होती है।

ग्वाटेमाला में, गे और मैं सेंगम्पो गए। वहाँ पर वैश्विक अनुदान सोया दूध उत्पादन के लिए मशीनीकृत गाय; एक बेहतर जल वितरण प्रणाली; पानी के फ़िल्टर; स्वच्छ कोंपोस्ट शौचालय; पारिवारिक बगीचे; आय सृजन के लिए सहायता; और WASH और साक्षरता कार्यक्रमों के लिए समर्थन प्रदान करते है। वहां पर बेचे जाने वाले खाद्य पदार्थ ना केवल महिलाओं एवं बच्चों को पोषण प्रदान करते है बल्कि स्थानीय महिलाओं के लिए आय के स्रोत का निर्माण भी करते है।

प्रत्येक ध्यानाकर्षण क्षेत्र में, और दुनिया के प्रत्येक हिस्से में, रोटरी परियोजनाएं ज़िंदगियों को बेहतर बना रही है और समुदायों को तीव्र बदलाव के समय में अनुकूल बनने में मदद कर रही है। जब हम रोटरी के एक अन्य महान वर्ष का उत्सव मना रहे है, आइए हम सभी उन सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिए फिर से समर्पित हो जो हमारी सेवा को इतना प्रभावपूर्ण बनाते है। हम ज़िंदगी को बेहतर बनाएंगे क्योंकि *रोटरी दुनिया को जोड़ती है।*

मार्क डेनियल मलोनी
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

आशा, अवसर और सेकंड सेक्स

जब रो ई अध्यक्ष मनोनीत होल्गर नैक ने अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में अपनी रोटरी थीम का अनावरण किया- *Rotary opens Opportunities* (रोटरी अवसरों को प्रदान करती हैं) - सबसे पहले ज़ेहन में निदेशक भरत पांड्या के पसन्दीदा मंत्र का ख़याल आया था जो कि आशा और अवसरों के बारे में ही था। ठीक नव वर्ष की शुरुआत पर, रोटरी क्लब ऑफ़ कलकत्ता के 100 वें जन्मदिन समारोह के आयोजन में, उन्होंने पुनः दोहराया ''समाज को रोटरी से उम्मीद है कि ... यह उनके जीवन में सुधार लाकर और इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए कुछ करेगी।''

हमारे रो ई निदेशक भी अपने आगामी अध्यक्ष के साथ पूरी तरह से एकमत थे जब उन्होंने कहा कि ''रोटरी आपको और मुझे उस उम्मीद को पूरा करने का अवसर देती है जिससे हमारी दुनिया खूबसूरत और बेहतर बने।'' नैक के यही विचार थे जब उन्होंने कहा कि लोगों के लिए रोटरी क्लब सिर्फ सदस्य बनने के लिए नहीं था। बल्कि यह एक निमंत्रण था अनन्त अवसरों का, और रोटरी की सदस्यता, सदस्यों के जीवन को और उन लोगों के जीवन को बेहतर बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है जिनकी मदद वे सेवा परियोजनाओं के माध्यम से करते हैं। ''हम मानते हैं कि हमारे द्वारा किये गए सेवा के छोटे या बड़े कार्य, उन लोगों की मदद के अवसर पैदा करते हैं, जिन्हें हमारी जरूरत है नैक का कहना था।''

इसके साथ ही, रोटरी नेतृत्व के अवसर भी देती है और सदस्यों को दुनिया में सफर करते हुए सेवा के अपने विचारों को परिणीत करने के साथ साथ आजीवन संबंध स्थापित करने का मौका देती है। ''हम जो कुछ भी करते हैं वह कहीं ना कहीं, किसी ना किसी के लिए अवसरों के द्वार खोलती है।''

नैक के गंभीर वक्तव्य के सार और गहराई पर गौर करें जिसके बारे में उन्होंने अपनी थीम के माध्यम से विस्तार से बताया। रोटरी दोनों को अवसर प्रदान करती है अपने सदस्यों और समाज के जरूरतमंद लोग जिनकी रोटेरियन सहायता करते हैं। यदि आप इसके सम्पूर्ण प्रभाव को देखते हैं तो - एक रोटेरियन को उसकी सेवा के माध्यम से भलाई करने का अवसर मिला और साथ ही नेतृत्व करने का मौक़ा, दुनिया की यात्रा करने, नए दोस्त और नए सम्बन्ध बनाने का अवसर और इसके अलावा यह उन लोगों को अवसर देती है जिसके द्वारा उनके जीवन और आजीविका में सुधार हो। आपको यह देखने के लिए गणित की आवश्यकता नहीं है कि यहां कुछ नहीं बल्कि कई गणा अवसर हैं।

क्या 'अवसर' एक चमत्कारिक शब्द नहीं है? यह बहुत सारे अद्भुत और सकारात्मक गुणों को समाहित करता है... आशा, शक्ति, कड़ी मेहनत, सफलता। यह ठीक वैसा ही है जैसा कि 'सेकंड सेक्स,' जैसा कि फ्रांसीसी बौद्धिक सिमोन डी बेवॉयर ने 1949 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक का शीर्षक दिया था, महिलाओं का ज़िक्र करते हुए लिखा था, की ज़रुरत है। दिलचस्प बात यह है कि प्रसिद्ध फ्रांसीसी दार्शनिक ज्यां पॉल सार्त्र, जो 51 वर्षों तक उनके साथ रहे (उन्होंने सिमोन को प्रोपोज़ किया था, वो बोली ''बेवकूफ मत बनो''), जब तक 1981 में उनकी मृत्यु नहीं हो गई, उन्होंने एक बार सिमोन सेकहा था कि उनके अंदर एक पुरुष की बुद्धि है और लंबे समय तक सिमोन ने इसे प्रशंसा के रूप में लिया था, जब तक कि वह इस पर विचार नहीं करने लगी कि इस का तात्पर्य क्या है। तात्पर्य है, वह बाद में लिखती है, कि ''मानवता पुर्लिंग है और पुरुष महिला को परिभाषित करता है!''

बुद्धिमानी की बारीकियां तो छोड़िये एक तरफ, ये वो विषय है जो किसी भी मंच से गरमा गरम बहस के लिए उपयुक्त है। यह अवसर है उनके लिए जो इससे वंचित रह गए हैं या पीछे रह गए। और महिलाओं का सम्बन्ध निश्चित रूप से इसी समूह से हैं। जैसे-जैसे रोटरी में महिलाओं की सदस्यता बढ़ती है, जिस लक्ष्य का पीछा दुनिया भर में वरिष्ठ रो इ नेता कर रहे हैं और रोटरी के भीतर महिलाओं के लिए नेतृत्व के पद बढ़ रहे हैं,धीरे धीरे ही सही पर निश्चित रूप से, संगठन के भीतर और बाहर महिला सशक्तिकरण और प्रखर होगा। दुनिया पहले से ही जर्मनी की एंजेला मर्केल में उत्कृष्ट महिला नेतृत्व देख रही है और न्यूज़ीलैंड की जेसिंडा आरडर्न में एक अलग तरह का नेतृत्व।

महिला नेतृत्व में बढ़ोत्तरी हो।

रशीदा भगत

Governors Council

RI Dist 2981	DG N Manimaran
RI Dist 2982	DG Natesan A K
RI Dist 3000	DG Dr A Zameer Pasha
RI Dist 3011	DG Suresh Bhasin
RI Dist 3012	DG Deepak Gupta
RI Dist 3020	DG M Veerabhadra Reddy
RI Dist 3030	DG Rajendra Madhukar Bhamre
RI Dist 3040	DG Dhiran Datta
RI Dist 3053	DG Harish Kumar Gaur
RI Dist 3054	DG Bina Ashish Desai
RI Dist 3060	DG Anish Shah
RI Dist 3070	DG Sunil Nagpal
RI Dist 3080	DG Jitendra Dhingra
RI Dist 3090	DG Rajeev Garg
RI Dist 3100	DG Hari Gupta
RI Dist 3110	DG Kishor Katru
RI Dist 3120	DG Sanjay Agrawal
RI Dist 3131	DG Ravee Dhotre
RI Dist 3132	DG Suhas Laxmanrao Vaidya
RI Dist 3141	DG Harjit Singh Talwar
RI Dist 3142	DG Dr Mohan Chandavarkar
RI Dist 3150	DG Pandi Sivannarayana Rao
RI Dist 3160	DG Nayan S Patil
RI Dist 3170	DG Dr Girish R Masurkar
RI Dist 3181	DG Joseph Mathew
RI Dist 3182	DG Ramesh B N
RI Dist 3190	DG Dr Sameer Hariani
RI Dist 3201	DG R Madhav Chandran
RI Dist 3202	DG A Karthikeyan
RI Dist 3211	DG Shirish Kesavan
RI Dist 3212	DG S Sheik Saleem
RI Dist 3231	DG Sridar Balaraman
RI Dist 3232	DG G Chandramohan
RI Dist 3240	DG Dr Debasish Das
RI Dist 3250	DG Gopal Khemka
RI Dist 3261	DG Ranjeet S Saini
RI Dist 3262	DG Debasish Mishra
RI Dist 3291	DG Ajay Agarwal

Printed by PT Prabhakar at Rasi Graphics Pvt Ltd, 40, Peters Road, Royapettah, Chennai - 600 014, India, and published by PT Prabhakar on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

रो ई निदेशकों

सीधी बात

शांति के लिए काम करना हमेशा से ही रोटरी की प्राथमिकता रही है। रोटरी की यात्रा दो सरल उद्देश्यों - दोस्ती और आपसी सहयोग की भावना - के साथ शुरू हुई जो शांति के महत्वपूर्ण घटक है। शांति के लिए हमारा कार्य सम्मेलनों और सेमीनारों में नहीं होता; यह व्यक्तिगत संबंधों, बुनियादी मानवीय जरूरतों, और संघर्षों का समाधान करने हेतु आमने-सामने बैठकर काम करने से होता है। शांति के दो पहलू होते है - संघर्ष और युद्ध की अनुपस्थिति; और हमारे समुदायों में ऐसी स्थिति उत्पन्न करना जो लोगों को विकास करने दें, बुनियादी जरूरतों को पूरा करने दें और शांति में सहायक एक गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने दें।

जब बुनियादी जरूरतें पूरी नहीं होती है तो शांति प्राप्त करना मुश्किल होता है। हर बार जब हम उन लोगों तक पानी पहुँचाते है जिनके पास पानी नहीं है, साक्षरता के लिए अवसर प्रदान करते है, एक बच्चे को पोलियो की बूँद पिलाते है, हम वही करते है जो रोटेरियन करते है, मतलब शांति के लिए आवश्यक बुनियादी जरूरतों को पूरा करते है। उत्तराखंड में स्कूलों का पुनर्निर्माण करना हो, आंध्र प्रदेश के स्कूलों में बेंच प्रदान करना हो, ग्रामीण महाराष्ट्र की महिलाओं को सशक्त बनाना हो, तमिलनाडू में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना हो या केरल में बाढ़ राहत पहुँचाना हो, रोटेरियन शांति हेतु कार्य करने में सबसे आगे होते है।

शांति का अर्थ एक ऐसी जगह पर रहना नहीं होता जहाँ शोर ना हो, समस्या ना हो, दर्द ना हो और कड़ी मेहनत ना करनी पड़े। शांति का अर्थ यह होता है कि इन सभी चीज़ों के बीच रहने के बावजूद भी हम शांत रहते है। यही शांति का वास्तविक अर्थ है। जब भी हम समाचार चैनलों को चालू करते है, हम हमारे ग्रह पर हिंसा, पीड़ा, और अन्याय होते देखते है। कभी हम खामोश रहते है, कभी हम आवाज़ उठाते है और कार्यवाही करते है।

लेकिन हम कैसे कार्यवाही करते है और क्या कहते है यह हमेशा हमारे विचारों और भावनाओं से मार्गदर्शित होता है, जिन पर हमारा नियंत्रण और जिम्मेदारी होती है। सबसे पहले परिवर्तन बनकर जैसा गाँधी जी ने कहा था - *शांतिपूर्ण रहकर, प्रेमपूर्ण रखकर और स्वयं को शांत रखकर* - हम हमारे आसपास की दुनिया में महान शांति, प्रेम और ज्ञान ला सकते है।

वह शांति बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते है। यह हम में से प्रत्येक के भीतर से शुरू होती है और वहाँ से सभी जगह फैलती है। यह सही मायनों में सुनिश्चित करेगा कि *रोटरी दुनिया को जोड़ती है।* रोटरी का आनंद लें, स्वयं आनंद करें।

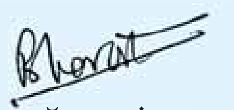

डॉ भरत पांड्या

रो ई निदेशक, 2019-21

का संदेश

विश्व शांति को प्रत्साहन देना

प्रिय रोटरी लीड़र्स,

पिछले वर्ष संघर्ष और हिंसा के कारण 68 मिलियन लोग विस्थापित हुये, जिनमें से आधे बच्चे थे। हम रोटेरियनों को संघर्ष को जीने का एक तरीका मानने से इंकार करना चाहिए। रोटरी परियोजनाएं प्रशिक्षण प्रदान करती है जो समझ को बढ़ावा देती है और ऐसे संघर्षों का हल निकालने के लिए समुदायों को कौशल प्रदान करती है।

हमारी सेवा परियोजनाओं, शांति फैलोशिप एवं छात्रवृत्तियों के माध्यम से, हमारे सदस्य संघर्ष के पीछे के कारणों को संबोधित करने के प्रयास कर रहे है, जिनमें गरीबी, असमानता, जातीय तनाव, शिक्षा तक पहुँच की कमी, और संसाधनों का असमान वितरण शामिल है।

हमारे लिए शांति का अर्थ है भूखे को खाना देना, नि:शक्त को हाथ देना, नेत्रहीन को नेत्र देना, बेघर को घर देना, प्यासे को पानी देना और अनपढ़ को पढ़ने का अवसर देना।

यदि हम चाहते है कि समाज में शांति रहे, समाज प्रगतिशील बने, और उसमें हर एक व्यक्ति गरिमा के साथ रह सकें, तो हमें इस विचार को सार्थक बनाने के लिए पथप्रदर्शक बनना होगा। मैं हर एक रोटेरियन को चहरे पर खुशी लाने वाला, अच्छाई का जादूगर, और जरूरतमंदों का साथी बनने की चुनौती देता हूँ।

शांति स्थापित करने के सबसे महत्वपूर्ण प्रयासों में से एक है रोटरी पीस सेंटर्स कार्यक्रम जो 2002 में शुरू हुआ था। हर साल, यह कार्यक्रम दुनिया के कुछ सबसे समर्पित एवं प्रतिभाशाली पेशेवरों को प्रशिक्षित करके उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने एवं संघर्ष का समाधान करने हेतु तैयार करता है। उनमें दो साल की मास्टर डिग्री एवं रोटरी के साथी विश्वविद्यालयों में तीन माह के पेशेवर प्रमाणपत्र कार्यक्रम के स्नातक शामिल होते है।

आज, 900 से अधिक शांति मित्र विभिन्न क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता का उपयोग कर रहे है। वे पश्चिमी अफ्रीका में सीमा विवाद हल कर रहे है, विश्व बैंक में सहायता कार्यक्रम विकसित कर रहे है, ब्राज़ील में शोषित बच्चों की सुरक्षा के लिए कानून बना रहे है, राजनयिकों को सुरक्षा दे रहे है, और शांति के लिए समर्पित अन्य कैरियर मार्गों पर आगे बढ़ रहे है।

एलेनोर रूज़वेल्ट के शब्दों में कहे तो: ''केवल शांति की बात करना काफी नहीं होता। एक व्यक्ति को उसपर विश्वास करना होता है। और केवल विश्वास करना ही काफी नहीं होता। उसके लिए एक व्यक्ति को काम करना होता है।'' इसलिए मैं आप सभी से दान करने का दूत बनने का आग्रह करता हूँ।

कमल संघवी

रो ई निदेशक, 2019-21

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
RIPN Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID P T Prabhakar	RI Dist 3232
PRID Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
PRID C Basker	RI Dist 3000
TRF Trustee Gulam A Vahanvaty	RI Dist 3141
RID Dr Bharat Pandya	RI Dist 3141
RID Kamal Sanghvi	RI Dist 3250

Executive Committee Members (2019–20)

DG Deepak Gupta Chair – Governors Council	RI Dist 3012
DG Nayan Patil Secretary – Governors Council	RI Dist 3160
DG Dhiran Datta Secretary – Executive Committee	RI Dist 3040
DG Ajay Agarwal Treasurer – Executive Committee	RI Dist 3291
DG Rajendra Madhukar Bhamre Member – Advisory Committee	RI Dist 3030

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers,
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org
Website: www.rotarynewsonline.org

Now share articles from *rotarynewsonline.org* on WhatsApp.

District Wise TRF Contributions as on December 2019

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	23,627	5,986	0	8,480	$38,093	106	2.3
2982	23,622	12,418	161,362	720	$198,122	106	3.5
3000	67,090	2,403	3,703	296	$73,491	91	1.8
3011	23,303	1,089	21,923	0	$46,315	53	1.5
3012	160,932	5,615	129,552	30,000	$326,099	141	3.8
3020	26,155	31,775	0	12,029	$69,958	100	2.6
3030	1,804	7	1,423	2,000	$5,234	6	0.1
3040	6,359	145	8,917	0	$15,421	8	0.4
3053	27,873	32	64,331	0	$92,236	74	2.6
3054	5,743	168	35,809	0	$41,720	18	0.3
3060	39,415	57,014	125,678	21,678	$243,785	420	10.4
3070	22,234	705	9,674	0	$32,613	83	2.7
3080	43,197	4,286	14,219	1,013	$62,716	83	2.4
3090	10,813	1	0	0	$10,814	29	1.5
3100	22,865	0	0	0	$22,865	66	3.5
3110	16,220	1,609	833	0	$18,662	27	0.7
3120	60,245	141	0	0	$60,386	131	3.9
3131	126,819	1,640	248,055	43,000	$419,513	474	9.0
3132	5,388	292	9,538	15,000	$30,218	27	0.7
3141	251,021	11,518	269,961	66,392	$598,892	598	10.9
3142	96,256	1,916	80,282	7,000	$185,454	296	9.1
3150	53,901	6,336	35,504	170,368	$266,109	398	11.2
3160	2,107	1,029	0	0	$3,136	13	0.5
3170	43,147	5,110	5,388	0	$53,646	137	2.4
3181	129,001	6,509	0	0	$135,510	276	7.7
3182	36,324	7,606	4,723	0	$48,653	191	6.1
3190	86,054	11,391	37,025	0	$134,469	529	11.1
3201	31,449	22,113	96,212	0	$149,774	63	1.2
3202	46,949	41,128	36,138	1,000	$125,215	66	1.3
3211	14,467	57	46,879	436	$61,839	22	0.5
3212	25,808	20,584	4,474	0	$50,866	59	1.5
3231	2,091	1,500	3,083	0	$6,674	33	0.9
3232	36,134	38,248	151,918	7,500	$233,800	125	2.4
3240	70,586	34,129	33,004	0	$137,719	220	7.3
3250	24,488	0	(85)	10,000	$34,403	43	1.1
3261	5,261	0	30,770	0	$36,031	6	0.2
3262	32,589	3,848	5,507	0	$41,944	64	1.9
3291	56,471	1,630	33,250	0	$91,351	56	1.6
India Total	**1,757,811**	**339,976**	**1,709,049**	**396,911**	**$4,203,747**	**5,238**	**3.6**
3220 **Sri Lanka**	46,936	5,307	26,404	0	$78,647	77	3.9
3271 **Pakistan**	3,401	8,167	20	0	$11,588	10	0.7
3272 **Pakistan**	10,195	992	300	0	$11,487	40	2.4
3281 **Bangladesh**	82,707	3,100	83,661	5,000	$174,469	184	3.2
3282 **Bangladesh**	22,543	13,347	0	2,000	$37,890	25	0.5
3292 **Nepal**	135,661	12,737	330,223	0	$478,622	249	5.3
South Asia Total	**2,059,254**	**383,627**	**2,149,658**	**403,911**	**$4,996,450**	**5,823**	**3.5**
World Total	**59,477,837**	**16,502,650**	**12,042,178**	**22,722,129**	**$110,744,794**		

Source: RI South Asia Office

TRF एंडोमेंट का निर्माण

नी हाओ, रोटेरियनों!

अप्राचीन काल से, लोगों ने पानी के आसपास समुदायों का निर्माण किया है। एक कुएं से साफ, ताजा पानी ले पाने की क्षमता से पता चलता है कि गाँव में टिके रहने और मुश्किल समय को सहन करने की क्षमता है। दुनियाभर में लोगों के लिए कुएं जरूरी होते है, लेकिन रूपांतर करके कहे तो, वे उतने ही शक्तिशाली भी होते है। रोटरी संस्थान का ''कुआं'' क्या है? दुनिया भर में जीवन की रक्षा करने वाले अद्भुत वैश्विक अनुदानों को करते रहने के लिए हम किस स्रोत से पैसों की पुनः पूर्ति कर सकते है?

शक, रोटरी संस्थान का कुआं है उसका एंडोमेंट। हम बहुत ही गहरे, मजबूत कुएं का निर्माण कर रहे है जो आने वाली कई पीढ़ियों तक प्रमुख परियोजनाओं का नीधियन सुनिश्चित करेगा। एक मजबूत अक्षयनिधि हमारे संस्थान की दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को सुनिश्चित करेगी और भविष्य में और अधिक मानवीय सेवाओं को करने हेतु आवश्यक संसाधन प्रदान करेगी। हम बिल्डिंग TRF एंडोमेंट: 2025 बाइ 2025 पहल के माध्यम से 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर की अक्षयनिधि बनाने का एक ऊंचा लक्ष्य रख रहे है। तब तक हम उम्मीद करते है कि संस्थान के पास कम से कम 1 बिलियन डॉलर की शुद्ध संपत्ति होगी, और बाकी प्रत्याशित और उत्तरदान प्रकार की प्रतिबद्धताएँ होगी।

कल्पना कीजिये कि 2 बिलियन डॉलर के एंडोमेंट के साथ हम कितने अच्छे काम कर पाएंगे! निवेश से कमाई रोटेरियनों को दुनिया भर की सभी प्रकार की जीवन-परिवर्तक परियोजनाओं को करने हेतु सालाना 100 मिलियन डॉलर प्रदान करेगी। एक साथ मिलकर, हम ऐसा कर सकते है। जैसे-जैसे हमारे आसपास की दुनिया बदल रही है, रोटरी संस्थान का कुआं समय की कसौटी पर खड़ा होगा और दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालता रहेगा।

कन्फ्यूशियस ने पानी से अत्यंत आनंद की प्राप्ति की थी। उन्होंने कहा: ''महान पानी बिना रुके लगातार आगे बढ़ सकता है। यह जहां जाता वहाँ भूमि को सिंचित करता है, फिर भी वह ऐसा नहीं समझता कि उसने कोई महान काम किया है। यह ठीक सदाचार की तरह है।'' उपलब्धियों की बात करे तो, रोटरी क्लब शंघाई ने अभी उसकी स्थापना के 100वें वर्ष का उत्सव मनाया। और क्लब ने हाल ही में एक अन्य उपलब्धि हासिल की है: उसका पहला आर्च क्लम्फ़ सोसाइटी सदस्य, फ्रैंक यी। शंघाई में हमारे मित्रों को *गोंग शी* (बधाई)!

गेरी सी के हुआंग

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष

टीआरएफ और उसका प्रोग्राम्स ऑफ़ स्केल

1907 में, रोटरी क्लब शिकागो ने शिकागो में सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण करके उसकी पहली सार्वजनिक सेवा परियोजना की शुरुआत की। इस कदम ने रोटरी को दुनिया के पहले सेवा क्लब में परिवर्तित कर दिया। यह छोटी सी शुरुआत दुनियाभर के रोटेरियनों द्वारा की जा रही हजारों सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के लिए प्रणेता थी। आज, जिन समुदायों की हम सेवा करते है उनमें जीवन-परिवर्तक परिवर्तनों को लाने के लिए हम हमारे ध्यानकर्षण क्षेत्रों में बड़ी पहुँच वाली एवं बड़ी लागत वाली परियोजनाओं को कर रहे है।

जैसे-जैसे हमारा आत्मविश्वास बढ़ रहा है, क्लब और मंडल उनके द्वारा की जाने परियोजनाओं में वृद्धि कर रहे है, अक्सर कॉर्पोरेटों से प्राप्त उठ्ठ निधि की मदद से। 'प्रोग्राम्स ऑफ़ स्केल' (अधिक जानकारी के लिए *www.rotary.org* पर जाएं) के आरंभ होने के साथ ही हमारा संस्थान एक कदम और आगे बढ़ रहा है। अनुदान सीमित है और ये प्रतिस्पर्धी स्तर पर प्रदान किए जाएँगे। यह क्लबों के लिए वास्तव में बड़े पैमाने पर परियोजनाओं की शुरुआत करने का एक शानदार अवसर है जो उल्लेखनीय रूप से समुदाय को प्रभावित करेगा।

अब मैं योगदानों की बात पर आता हूँ। पिछले वर्ष इस समय तक, हमारा कुल योगदान इस वर्ष के योगदान की तुलना में अधिक था। हालाँकि हम हमारे EPNCयों - पीडीजी ई के सगधेवन और पीडीजी केशव कुंवर - के निरंतर प्रयासों की वजह से पोलियो कोष संग्रहण में काफी अच्छा प्रदर्शन कर रहे है, फिर भी हम अन्य सभी क्षेत्रों में पिछड़ रहे है।

सभी डीजीयों से मेरी गंभीर रूप से अपील है कि वे क्लबों और रोटेरियनों को संस्थान में योगदान देने हेतु प्रेरित करें। हम सब ने मिलकर 2019-20 के लिए 30 मिलियन डॉलर का लक्ष्य निर्धारित किया है। मुझे विश्वास है कि हम इस चुनौती को पूर्ण करेंगे और हमारे संस्थान को दुनिया को जोड़ने और निरंतर दुनिया में अच्छा करते रहने के लिए सशक्त बनाएँगे।

किसी भी सार्थक चीज़ को हासिल करने के लिए, हमें उन चीज़ों को करने का प्रयास करना चाहिए जो असंभव प्रतीत होती है।

एक स्वस्थ, शान्तिप्रद और खुशहाल 2020 के लिए आप सभी को मेरी शुभकामनाएँ।

गुलाम ए वाहनवती

ट्रस्टी, रोटरी इंटरनेशनल

क्षेत्रीयकरण और संघवाद, आगे बढ़ने का मार्ग: भरत पांड्या

रशीदा भगत

एक बार जब रोटरी और रोटेरियन सम्पूर्ण विश्व से पोलियो उन्मूलन की अपनी लंबी यात्रा का समापन कर लेंगे, ''विविध क्षेत्रों की प्राथमिकताएं भिन्न - भिन्न हो सकती हैं। रोटरी के भीतर हम ऐसे संघीय ढांचे की परिकल्पना कर रहे हैं, जिस के अंतर्गत भारत और एशिया को सम्मिलित कर एक क्षेत्र बनाया जा सकता है, अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका प्रत्येक क्षेत्र का अलग-अलग निर्माण किया जा सकता है। कदाचित अफ्रीका में एड्स और साक्षरता पर अपना ध्यान केंद्रित किया जा सकता है, जबकि एशिया में साक्षरता और स्वास्थ्य पर। मेरा मानना है कि क्षेत्रीयकरण और संघीकरण आगे बढ़ने का मार्ग है,'' 1 जनवरी 2020 को रोटरी क्लब ऑफ़ कलकत्ता के 100 वें जन्मदिन पर आयोजित भव्य बधाई समारोह को संबोधित करते हुए रो ई निदेशक भरत पांड्या ने अपने विचार रखे।

इस दिशा में आगे बढ़ते हुए, उन्होंने कहा, ''रोटरी को चार महत्वपूर्ण सिद्धांतों का पालन सख्ती

PDG सोमेंद्र चंद्र नेंडी, डेविड पामर, रो ई मंडल 1130, PRIP राजेंद्र साबू, रोटरी क्लब कलकत्ता की सचिव अनुसुवा दास, क्लब अध्यक्ष पूर्णेंदु रॉय चौधरी, RID भारत पांड्या और शताब्दी समिति के अध्यक्ष सौमेन रे।

से करना होगा - प्रासंगिक रहें, साझेदारियां करें, कार्यक्रमों और परियोजनाओं में हो रही निरंतरता की कमी से निपटें तथा क्षेत्रीयकरण या एक संघीय ढाँचे की रचना करें। पांड्या ने कहा कि दुनिया में सबसे अच्छी इबादत है दूसरों की मदद जो आप 100 साल से कर रहे हैं, और आपकी झोली में ढेर सारी उपलब्धियां भी हैं।, रो ई बोर्ड की ओर से, मैं आपका निदेशक सभी क्लब सदस्यों को बधाई देता हूं, आपका अभिनंदन करता हूं।''

वह जहां भी जाते है, रोटेरियन सवाल करते हैं कि रोटरी की उनसे क्या अपेक्षाएं हैं। ''मेरा जवाब है - स्वच्छ दिमाग और मैले नाखून। हमें अपनी कथनी और करनी में सत्यनिष्ठा का आचरण रख दृष्टान्त स्थापित करना होगा। मेरा ज़ोर नैतिकता पर नहीं है क्योंकि नैतिकता के मायने हर सदी में बदल सकते हैं, लेकिन विचारों, क्रिया और कर्मों में ईमानदारी अनन्त काल से विद्यमान है।''

सभी रोटेरियन से उन्होंने आग्रह किया कि वे ''अपने क्लब, सेवा, प्रशासन और मंडल, जोन और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वालेचुनावों में निष्ठा व ईमानदारी का ख़याल रखें। मैं बार बार कहता रहा हूँ, कि केवल एक चीज जो कब्रिस्तान से शोक मनाने वालों के साथ वापस चलती है वह व्यक्ति का चरित्र है जो मृत्युपर्यन्त भी जीवित रहता हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि क्लब का अतीत शानदार रहा है; हम अतीत पर गर्व करते हैं लेकिन ये समय भविष्य में आगे बढ़ने का है। नेतृत्व की मशाल पूर्णेंदु रॉय चौधरी के हाथों में है। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उस मशाल को थोड़ा अधिक ऊंचा रखें, थोड़ा और तेज करें और इसे भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचाएं।''

हम अतीत पर गर्व करते हैं लेकिन ये समय भविष्य में आगे बढ़ने का है। नेतृत्व की मशाल पूर्णेंदु रॉय चौधरी के हाथों में है। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि उस मशाल को थोड़ा अधिक ऊंचा रखें, थोड़ा और तेज करें और इसे भविष्य की पीढ़ियों तक पहुंचाएं।

पांड्या ने कहा कि सभी नदियों की शुरुआत छोटे से होती है; ''जैसे जैसे ये पहाड़ से बह कर नीचे आती है, अन्य छोटी धाराएँ मिल कर एक नदी का रूप ले लेती हैं और जब यह मैदानों में पहुँचती है तो एक विशाल, शक्तिशाली नदी में परिवर्तित हो जाती है। रोटरी के साथ भी ऐसा ही है। सौ साल पहले, दुनिया जबरदस्त परिवर्तन के दौर से गुजर रही थी। पहला विश्व युद्ध समाप्त हो गया था, पहली प्लास्टिक सर्जरी हो चुकी थी, बहुत ज़्यादा बदलाव हो रहे थे, और भारत के इस कोने में, एक रोटरी क्लब का जन्म हुआ था। एक चीनी कहावत है, 1,000 मील की यात्रा की शुरुआत सिर्फ एक छोटे कदम से होती है। रो क्लब कलकत्ता ने भी उस कदम के साथ जनवरी 1920 में अपनी यात्रा शुरू की थी।''

और जैसे-जैसे इसका सफर आगे बढ़ता गया, ''अन्य संभ्रांत एवं विशिष्ट व्यक्ति, फिर महिलाएं इसमें शामिल हुए और आपस में उन में विचार, ज्ञान और राय का आदान-प्रदान हुआ और आज यह क्लब रो ई मंडल 3291, दक्षिण एशिया में तो नहीं पर सम्पूर्ण भारत का एक अग्रणी क्लब ज़रूर है।'' कई चुनौतियों के साथ इस यात्रा में उतार चढ़ाव भी बहुत रहे होंगे एक रोलर कोस्टर की भांति, ''लेकिन इस सब के बाद अंततः यह एक सुखद, संतोषप्रद, समृद्ध यात्रा रही है... 'स्वयं से पहले सेवा' की यात्रा।''

रो ई निदेशक ने कहा: ''अगर आप मुझसे रोटरी का वर्णन दो शब्दों में करने के लिए कहेंगे, तो

वो दो शब्द हैं आशा और अवसर; समाज को रोटरी से आशा है कि वह समुदाय में सुधार ला कर दुनिया को थोड़ा बेहतर बनाने के लिए कुछ करेगा और मुझे और आपको उस आशा को पूरा करने का अवसर मिला है, जिससे हमारी दुनिया कुछ बेहतर हो सके।''

पिछली शताब्दी में रोटरी ने बहुत कुछ हासिल किया था, जो कुछ भी हासिल किया है, इनमें से कोई भी , कम से कम दुनिया से पोलियो उन्मूलन के इतने करीब नहीं है। लेकिन फिर भी, इसे चार चुनौतियों का सामना करना पड़ा; क्या यह हमारे समय के लिए प्रासंगिक रह सकता है, क्या यह कार्यक्रमों और परियोजनाओं की निरंतरता सुनिश्चित कर सकता है (''ऐसा नहीं करने से हमारी छवि एक अनिश्चित संगठन की बनती है''); ज़्यादा ध्यान केन्द्रित करना और साझेदारीयां।

क्लब चार्टर के 100 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई देते हुए, PRIP राजेंद्र साबू ने कहा कि उन्हें एक आदमी से शिकायत थी जो कभी रो क्लब कलकत्ता नहीं आये और वह थे रोटरी संस्थापक पॉल हैरिस। उन्हें संबोधित करते हुए उन्होंने कहा: ''पूरे सम्मान के साथ कह रहा हूँ, आपने सब कुछ अस्त व्यस्त कर दिया है। क्योंकि सामान्यतः जो लोग वैसे तो अपने व्यवसाय या पेशे को आगे बढ़ाने में व्यस्त रहते, वे आज यहाँ उपस्थित हैं ... ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और दुनिया के अन्य हिस्सों से, अपने पैसे खर्च कर फेलोशिप, सेवा, इत्यादि की चर्चा कर रहे थे। हम अपने काम, व्यापार से पैसा कमा रहे थे और अपने परिवारों के साथ अपना समय बिताने में खुशी मिल रही थी। लेकिन देखिये हम यहाँ क्या कर रहे हैं! इसके बावजूद हम आपको पूरी ईमानदारी से धन्यवाद

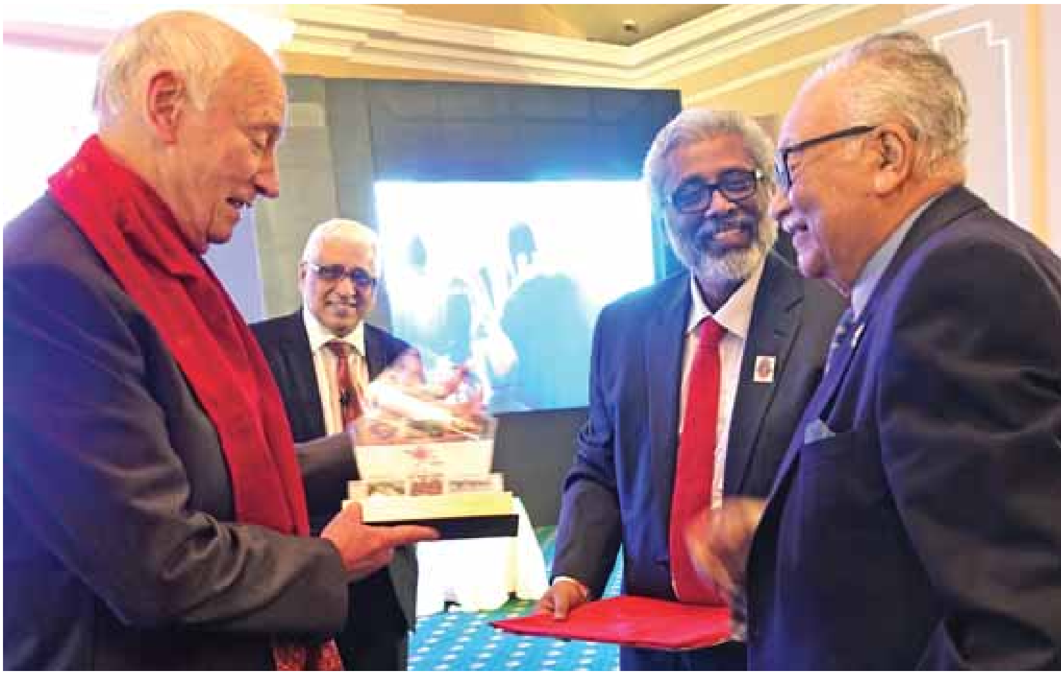

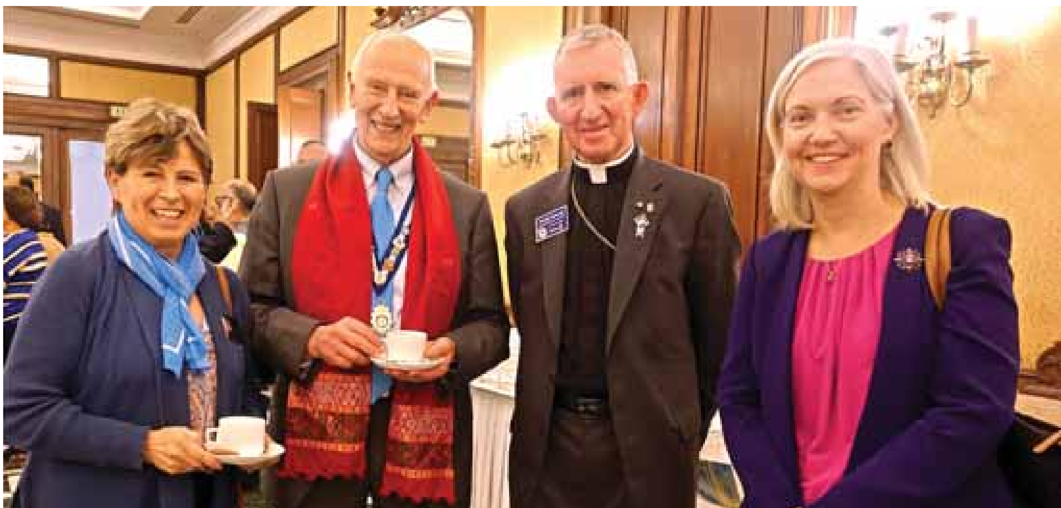

दक्षिणावर्त: RID भरत पांड्या ने पीडीजी नेंडी को एक शताब्दी पिन दी; PRIP राजेंद्र साबू रोटरी क्लब कलकत्ता के पहले अध्यक्ष विनय निवाटीया के साथ; कोलकत्ता के लिए अमेरिका के महावाणिज्य दूत पेटी हॉफमैन और डेविड पामर के साथ अंतराष्ट्रीय प्रतिनिधि; बाएं से:सौमेन रे, रोटेरियन पामर, PDG नेंडी और PP रित्विक गुप्ता; क्लब अध्यक्ष चौधरी और सचिव अनुसुआ दास की उपस्थिति में सौमेन रे ने अमेरिकी वाणिज्य दूतावास जनरल पेटी हॉफमैन का स्वागत किया।

देते हैं क्योंकि आपने हमारे दिल में ये बीज बोया है कि हमारा जीवन अपने लिए नहीं बल्कि उन लोगों के लिए है, जिन्हें हमारी ज़रुरत है।''

क्लब इतिहास के एक हिस्से पर प्रकाश डालते हुए साबू ने याद किया कि रो क्लब कलकत्ता की स्थापना करने के लिए शुरू में 45 लोगों को इकट्ठा करने में कितनी कठिनाई हुई थी। 1925 में क्लब बुलेटिन चाका शुरू किया गया था और ये आज भी निकलता है। ''ये क्लब सर सुरेंद्रनाथ बनर्जी की सदस्यता से और महात्मा गांधी द्वारा संबोधित होने से भी सम्मानित हुआ है। कलकत्ता में बहुत सारे महत्वपूर्ण व्यक्ति या तो इसके सदस्य थे या इसे संबोधित किया है। और हाँ, आपके यहां नीतीश लाहिड़ी थे, जो प्रथम भारतीय क्लब सचिव रहे थे।''

साबू ने खुलासा किया कि उनके दिवंगत पिता भी रो क्लब कलकत्ता के सदस्य रह चुके थे, भले ही वह अपनी व्यस्त यात्रा की वजह से क्लब की बैठकों में नियमित रूप से उपस्थित नहीं हो पाते थे। ''लेकिन पहली बार रोटरी का नाम और इसके बारे में मैंने उन्हीं से सुना था। हमारे घर में, अक्सर रोटरी की बात करते रहते थे, एक बार मैंने उनसे पूछा था कि आप रोटरी की बैठकों में क्यों नहीं जाते और उनका कहना था कि वे बहुत दयालु हैं, हर बार मुझे छुट्टी दे देते हैं!''

1960 में जब वे कोलकाता से चंडीगढ़ शिफ्ट हुए और उन्हें रोटरी से जुड़ने के लिए आमंत्रित किया गया, तो पहले से ही उनका संगठन से जुड़ाव था और ''मुझे भी रो ई अध्यक्ष के रूप में यहां आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और यहां आ कर मैं बहुत खुश हूँ जब भारत से रो ई के चौथे अध्यक्ष - शेखर मेहता - पद ग्रहण करेंगे और वे तो कोलकाता के बेटे भी हैं!''

एक वीडियो संदेश में रो ई अध्यक्ष मार्क मैलोनी ने क्लब को शताब्दी वर्ष की बधाई दी। ''इसका विशिष्ट इतिहास रहा है; 26 सितंबर, 1919 को इसकी स्थापना के समय इंग्लिश चैनल और चीन सागर के बीच

PRIP राजेंद्र साबू ने क्लब अध्यक्ष चौधरी, सचिव अनुसुवा दस और शताब्दी समिति के अध्यक्ष सौमेन रे की उपस्थिति में एक विशेष डाक टिकट जारी किया।

RID भरत पांड्या, क्लब अध्यक्ष चौधरी और PP सौमेन रे के साथ डॉ वी के राजू (बाएं से चौथे), अध्यक्ष,आई फाउंडेशन ऑफ अमेरिका।

यह एकमात्र रोटरी क्लब हुआ करता था और एशिया में सबसे लंबे समय तक निरंतर अस्तित्व में रहने वाला यह एकमात्र रोटरी क्लब है। यह लाहौर, बॉम्बे, मद्रास, दिल्ली और ढाका में रोटरी क्लबों के संगठन के लिए भी जिम्मेदार है। मैं अपनी पत्नी गे के साथ, फरवरी में आपके साथ व्यक्तिगत रूप से जश्न मनाने के लिए आतुर हूँ,'' उन्होंने कहा।

रो ई मंडल 1130 से डेविड पामर, जो ब्रिटेन में उस मंडल के क्लबों के साथ रो क्लब कलकत्ता की कुछ सार्थक साझेदारीयों में सहयोगी रहे हैं , उन्होंने दर्शकों को अपनी वाक्पटुता से आनंदित किया। उन्होंने अपना भाषण यह कहते हुए शुरू किया कि यहां मौजूद रोटेरियन में से एक ने - ''आप स्वयं जानते हैं कि आप कौन हैं - कल रात एक रूसी बैले डांसर के साथ मेरी बहुत नज़दीकी तस्वीर पोस्ट कर दी (नए साल की रात जहां एक भव्य उत्सव आयोजित किया गया था)।'' इसके परिणामस्वरूप उनकी बेटी ने फोन किया और पूछा: ''आप रूस में क्या कर रहे हैं हमने तो सोचा था कि आप एक रोटरी इवेंट के लिए भारत में थे!''

क्लब के पूर्व अध्यक्ष और शताब्दी समिति के अध्यक्ष सौमेन रे के साथ हुई अपनी मुलाक़ात

RID भरत पांड्या और माधवी रोटरी क्लब कोलकाता को उनके 100 वें जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए।

डेविड पामर के साथ RIPN शेखर मेहता।

DG अजय अग्रवाल और उनकी पत्नी ममता के साथ सौमन रे।

ग्रैंड होटल की भव्यता से जुड़ी पुरानी यादें

इस कार्यक्रम में यूके, यूएस, ऑस्ट्रेलिया, मिस्र, बांग्लादेश और अन्य देशों के कई विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया। लेकिन विशिष्ट उपस्थिति रो ई मंडल 1130 से स्कॉटलैंड के रोटरी क्लब की थी, जिसके साथ लंबे समय से रो क्लब कलकत्ता की सामुदायिक सेवा परियोजनाएं करने की मजबूत साझेदारी रही है। कोलकाता के ग्रैंड होटलके आलीशान बैंक्वेट हॉल में समारोह आयोजित किया गया था, जिससे क्लब के पुराने और वरिष्ठ सदस्यों की कई यादें जुडी हुई हैं, क्योंकि 40 साल तक क्लब ने अपनी बैठकें यहीं पर आयोजित की थी। लेकिन जब रो क्लब कलकत्ता ने रोटरी सदन का निर्माण कर दिया, तो इसकी बैठकें सदन में स्थानांतरित हो गईं।

लेकिन कई वरिष्ठ सदस्य अक्सर इस होटल में वापसी की इच्छा व्यक्त करते हैं; खाने की बात छोड़ो, वो तो स्वादिष्ट है ही, लेकिन ग्रैंड होटल की तरह कोलकाता में बिस्कुट और पेस्ट्री और कोई नहीं बना सकता, एक वरिष्ठ सदस्य ने कहा।

जैसे जैसे वक्ता और वरिष्ठ रोटरी नेता क्लब के अतीत को याद करते गए, अलग तरह की यादें भी ताज़ा होती गईं। इसमें 1920 में चरखे के महत्व पर क्लब को संबोधित करने वाले महात्मा गांधी शामिल थे, उस समय क्लब के सभी सदस्य गोरे पुरुष थे। उन के सम्मान में, उस बैठक में, केवल शाकाहारी भोजन परोसा गया था ।जब उन्होंने कहा कि: आज रोटेरियन बंगाली विधवाओं जैसा भोजन कर रहे हैं! तो आप महात्मा की आँखों में चमक की कल्पना कर सकते हैं।

निश्चित रूप से कई बार इस बात का स्मरण और गर्व से उल्लेख किया गया था कि रो ई अध्यक्ष बनने वाले पहले भारतीय - नीतीश लाहिड़ी - 1926 की शुरुआत में अपने क्लब में कैसे शामिल हुए और 1926-27 में क्लब के पहले भारतीय सचिव बने। हालांकि उस समय वह एक शांत और काफी संकोची युवक थे । लेकिन लाहरी के बारे में और अधिक अगले अंक में!

की यादें ताज़ा करते हुए, उन्होंने कहा, रे के साथ मुलाक़ात की वजह और सौभाग्य से उनके मंडल में रो क्लब कलकत्ता के साथ एक बड़ी साझेदारी हुई। उन्होंने बताया कि अपनी पहली बैठक लंदन के पैडिंगटन रेलवे स्टेशन में किस प्रकार हुई थी और ''कोल्ड वॉर जासूसों की तरह हमने तय किया कि हमारी जेब में गुलाब या कार्नेशन का फूल होगा और मेरे हाथ में एक अख़बार । अब सौमेन, इस बात को ठीक से नहीं समझे और पैडिंगटन स्टेशन पर, जहां लंदन के कुछ बहुत ही प्रतिष्ठित लोग आते हैं, गुलाब जेब में अटकाने की बजाय वो गुलाब को पकड़ कर लहराते हुए इधर उधर घूमने लगा, पैडिंगटन स्टेशन पर ऐसा करना कोई अच्छी बात नहीं थी ! मैंने उसे पहचान लिया और उस शर्मिंदगी से बचा लिया जिसका सामना बाद में करना पड़ सकता था और यहाँ तक कि पुलिस से मुलाक़ात भी!''

सौमेन रे और PDG प्रभात कृष्णा रोहतगी।

उन्होंने कुछ समय तक बातचीत की और ''ये जानकर मैं हैरान रह गया कि कलकत्ता में सिर्फ एक क्लब के रोटेरियनों ने फाउंडेशन के लिए कितने ज़्यादा काम किये थे।''

फिर उन्होंने अपने मंडल में किये जा रहे काम की जानकारी दी ; परिणाम तत्काल मिले थे, ''कई क्लबों ने उसके साथ जुड़ने में सकारात्मक रुचि दिखाई।'' हाल ही में, जब वह अपने मंडल सम्मेलन के अध्यक्ष थे, उन्होंने रे को आमंत्रित किया था ''टीआरएफ और इसकी फंडिंग के लिए एक खुला दृष्टिकोण रखने से नाटकीय परिणाम मिल सकते हैं इस विषय पर सम्बोधित करने के लिए। उनकी बातों का मंडल के सदस्यों पर अविश्वसनीय प्रभाव पड़ा था।'' रे ने Centennial Bell शताब्दी की घंटी डिजाइन करने में उन से मदद मांगी थी। इस घंटी को पीडीजी प्रभात कृष्णा रोहतगी ने प्रायोजित किया है।

WinS पर चर्चा करते हुए, PDG रवि सहगल ने बड़ी दिलचस्प कहानी सुनाई कि सेवा परियोजनाओं के लिए साझेदारी कैसे की जाती है, जो दिल को छू गई। करीब 20 साल पहले, जॉर्जिया के रोटेरियनों की एक जीएसई टीम ने रो ई मंडल 3291 द्वारा की जा

रही एक परियोजना का दौरा किया था। एक नलकूप का उद्घाटन करने के बाद, लौटते समय, उन्होंने देखा कि की लंबी कतार में बच्चे धूप में खड़े हो कर टिफिन बॉक्स से खाना खा रहे हैं। स्वाभाविक रूप से मन में एक सवाल उठा, हम स्कूल के अंदर गए और पूछा तो पाया "कि 600 बच्चों के लिए पूरे स्कूल में केवल एक ट्यूबवेल था। और जब तक बच्चे टिफिन खत्म करते, तब तक कई बच्चों के पास पानी पीने का समय नहीं रहता था। इसलिए जब उनकी बारी आती है तो वे सिर्फ एक घूंट पानी पीते हैं चाहे उनका खाना खत्म हुआ हो या नहीं। बस इतना ही पानी मिलता था उन्हें, जीएसई टीम के नेता की आँखें भर आईं, जिन्होंने मुझे बताया कि अमेरिका में वो मानते हैं कि ये सब तो हमेशा मिलेगा ही, इस को अपना अधिकार समझते थे। आप स्विच चालू करो और बिजली मिलेगी ; नल चालू करो, पानी आता है। पर ये स्थिति देखकर दुख होता है।"

दुर्भाग्य से, आज भी कई स्कूलों में यही स्थिति है। 110 मिलियन से अधिक स्कूली बच्चों को मिड डे मील योजना के तहत सरकार से भोजन मिल रहा है, लेकिन उन्हें पीने के पानी की उचित सुविधा उपलब्ध नहीं है। पांच साल पहले, रोटरी ने चुनौती स्वीकार की और स्कूलों में हैंडवाशिंग और टॉयलेट की सुविधा बेहतर बनाने / उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार के साथ मिलकर काम कर रही थी ।

RIPN शेखर मेहता और PRIP राजेंद्र साबू।

सौमेन रे ने बैठक का संचालन किया और अतीत के कई किस्सों के साथ दर्शकों को आनंदित किया। क्लब के अध्यक्ष पूर्णेंदु रॉय चौधरी ने कहा कि अपने शताब्दी वर्ष के दौरान क्लब ₹20 करोड़ की परियोजनाऐं करेगा। इससे पहले, दिन में क्लब ने एक स्थानीय अस्पताल को ₹25 लाख का कैमरा दिया था, जो समय से पहले जन्मे शिशुओं में अंधेपन को रोकने में मदद करेगा। इस अवसर पर डाक विभाग द्वारा एक विशेष कवर जारी किया गया। RIPN शेखर मेहता, मंडल अध्यक्ष अजय अग्रवाल और कोलकाता में अमेरिकी कॉउन्सिल जनरल पट्टी हॉफमैन ने क्लब के सदस्यों की जमकर तारीफ की।

बाएं से: *PP ऋत्विक गुप्ता, शशि रोहतगी, PDGयों सोमेंद्र चंद्र नेंडी और प्रभात रोहतगी।*

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

होल्गार नेक रोटरी के बदलने और

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष-मनोनीत होल्गार नेक रोटेरियनों को उनके जीवन और जिन समुदायों की वे सेवा करते है उन्हें संपन्न बनाने के लिए रोटरी द्वारा पेश किए जाने वाले अनेक अवसरों को हाथ से ना जाने देने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है।

नेक, रोटरी क्लब हर्जोगटम लानबर्ग-मोल, जर्मनी, के एक सदस्य ने 20 जनवरी को सेन डिएगो में संपन्न हुई रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सभा में नवनिर्वाचित मंडल गवर्नरों के सामने 2020-21 की अध्यक्षीय थीम, *रोटरी अवसरों को प्रदान करती है,* का खुलासा किया।

रोटरी लोगों के जुड़ने हेतु केवल एक क्लब ही नहीं है, ''बल्कि यह अनंत अवसरों के लिए एक निमंत्रण है,'' नेक ने कहा, जो 1 जुलाई को अध्यक्ष बनेंगे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि रोटरी सदस्यों के लिए रास्ते बनाती है ताकि वे अपनी और उन लोगों की ज़िंदगियाँ सुधार सकें जिनकी मदद वे सेवा परियोजनाओं के माध्यम से करते है।

''हम मानते है कि हमारे छोटे-बड़े सेवा कार्य, उन लोगों के लिए अवसरों का सृजन करते है जिन्हें हमारी मदद की आवश्यकता है,'' नेक ने कहा। उन्होंने आगे कहा कि रोटरी नेतृत्व के अवसरों का निर्माण करती है और सदस्यों को दुनिया में घूमने का मौका देती है ताकि वे अपने सेवा विचारों को कार्यान्वित कर सकें और आजीवन टिकने वाले संबंधों का निर्माण कर सकें। ''जो भी हम करते है वह कहीं पर, किसी के लिए एक अवसर का सृजन करता है,'' नेक ने कहा।

भविष्य के लिए परिवर्तन

नेक ने सदस्यों से परिवर्तन को अपनाने का भी आग्रह किया ताकि रोटरी विस्तारित होकर उन्नति कर सकें। सदस्यों की संख्या बढ़ाने के लिए एक विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करने के बजाए, नेक ने कहा कि वह क्लबों और मंडलों से एक स्थायी और संगठित तरीके से विकास करने के बारे में सोचने के लिए कह रहे है। वह चाहते है कि क्लब वर्तमान सदस्यों को व्यस्त रखने और उनके क्लब के लिए उचित नए सदस्यों को जोड़ने पर ध्यान केन्द्रित करें।

''हमें सदस्यों को उन लोगों के रूप में सोचना बंद करना होगा जिन्हें हम केवल आंकड़े बढ़ाने के लिए चिन्हित करते है और फिर उन्हें भूल जाते है,'' नेक ने कहा। ''हर नया सदस्य हमें थोड़ा परिवर्तित करता है। वह एक नया दृष्टिकोण, नए अनुभव लाता है। हमें इस निरंतर नवीनीकरण को अपनाने की आवश्यकता है। नए सदस्यों से कुछ नया सीख कर हम मजबूत होते जाएँगे।''

नेक ने रोटरी की कार्य योजना को एक दिशा सूचक की तरह बताया जो क्लबों के विकसित होने में उनका मार्गदर्शन कर सकता है। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक क्लब की कम से कम साल में एक बार एक रणनीतिक योजना

उन्नति के अवसरों पर करते है चर्चा

बैठक होनी चाहिए। उस बैठक में, क्लबों को पूछना चाहिए कि वे पांच वर्षों में कहाँ पर पहुँचना चाहते है और वे कैसे अपने सदस्यों को अधिक अहमियत प्रदान कर सकते है।

नेक अधिक महिलाओं को नेतृत्वकर्ता की भूमिका में देखना चाहते है और यह भी देखना चाहते है कि कैसे नए क्लबों का गठन करने और उन्हें संचालित करने में रोटरेकटर अहम भूमिका निभाते है। उन्होंने मंडल नेतृत्वकर्ताओं को नए क्लब मॉडलों का निर्माण करने और दोबारा यह सोचने कि रोटरी में होने का क्या अर्थ है, और युवाओं को इन नए क्लबों का शिल्पकार बनने का मौका देने के लिए प्रोत्साहित किया।

''हमें नए दृष्टिकोणों के लिए खुला होना पड़ेगा, और युवाओं के लिए अनोखे क्लबों का निर्माण करना केवल समाधान का एक हिस्सा है, नेक ने कहा। रोटरेकटरों को निश्चय करने दें कि उनके लिए कौन सा रोटरी अनुभव सबसे सही है। ये युवा तीव्र बुद्धि वाले, ऊर्जावान होते है, और वे कार्यों को अच्छी तरह पूर्ण करते है।''

रोटरी सदस्यों द्वारा परिवर्तन को अपनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए, नेक ने कहा कि रोटरी के लिए समय की गति कम नहीं होगी: ''हम तेज़ी से हो रहे बदलाव से हार नहीं सकते। रोटरी को आगे बढ़ाने, मजबूत और अधिक अनुकूल बनाने, और हमारे मूल्यों के साथ अधिक तालमेल में लाने के लिए हम इस मौके को हाथ से जाने नहीं देंगे।''

© rotary.org

आइए हम ऐसी सेवा परियोजनाएं करें जो 10 प्रतिशत सरकारी कार्यों का प्रतिबिंब हों: शेखर मेहता

रशीदा भगत

भारत में रोटेरियनों द्वारा संचालित साक्षरता परियोजनाओं की सफलता - चाहे वो हैप्पी स्कूल हो, शिक्षक प्रशिक्षण या फिर ई-लर्निंग का प्रसार, ''इनकी सफलता से मालूम चलता है कि हम जो काम करते हैं अगर इसे अपने पूरे मन से दिल, दिमाग और जुनून के साथ करें तो कितना कुछ हासिल कर सकते हैं,'' आरआईपीएन शेखर मेहता ने रो इ मंडल 3232 द्वारा चेन्नई में आयोजित एक बधाई समारोह में कहा।

''मेरी विचारधारा को इससे एक नई दिशा मिली है; कि रोटरी को ऐसी परियोजनाएँ करनी चाहिए जो सरकार द्वारा की जा रही योजनओं का 10 प्रतिशत हो। मैं जानता हूँ कि मैं क्या कह रहा हूं; ई-लर्निंग

के क्षेत्र में हम पहले से ही 30 प्रतिशत से अधिक कर रहे हैं। तो भारत सरकार यदि एक करोड़ शौचालय बनाती है, तो हमें 10 लाख बनाने चाहिऐं, और यह बिलकुल संभव है। मेरा खुद का क्लब, (रो क्लब कलकत्ता महानगर), सिर्फ एक ही क्लब 10,000 ग्रामीण शौचालय बना रहा है।''

यदि भारत सरकार के पास 1,00,000 चेक डैम बनाने का लक्ष्य है, ''तो आइये 10,000 डैम बनाएं। अगर आप इस संख्या को 40 मंडलों में विभाजित करते हैं, तो आप देखेंगे हम यह आसानी से कर सकते हैं। बताइये ,कितने संगठनों में सरकार से ये यह कहने का साहस है कि हम आपके काम का 10 प्रतिशत करेंगे?'' उन्होंने कहा कि उस दिन पहले वो रो क्लब मद्रास द्वारा की गई एक अद्भुत परियोजना, झील का पुनरुत्थान देखने गए थे, साथ ही एक हैप्पी स्कूल, वो भी एक अनुकरणीय परियोजना है।

रोटेरियनों से विशाल और महत्वाकांक्षी परियोजनाऐं करने का आग्रह करते हुए, उन्होंने कहा कि यदि रोटरी ने ऐसा करना शुरू कर दिया, तो सरकार को विभिन्न सेवा क्षेत्रों में रोटरी को अपने भागीदार के रूप में वरीयता देने में कोई समस्या नहीं होगी। सरकार के अलावा, रोटेरियनों को अन्य भागीदारों की तरफ भी देखना शुरू करना चाहिए; उदाहरण के लिए, साक्षरता टीम ने ब्रह्माकुमारियों के साथ एक बड़ी साझेदारी की थी; उन्होंने कहा, साझेदारी में बहुत ताक़त है।''

''हमारे देश की जरूरतें बहुत ज़्यादा हैं मैंने ये सीखा है कि जब आप बड़े लक्ष्य निर्धारित करते हैं

भारत सरकार यदि एक करोड़ शौचालय बनाती है, तो हमें 10 लाख बनाने चाहिऐं, और यह बिलकुल संभव है।

RIPN शेखर मेहता

बाएं से: *PDG I S A K नाज़र, DGE एस मुत्तुपलनियप्पन, PRID पी टी प्रभाकर, RIDN ए एस वेंकटेश, DGN जे श्रीधर, ए एस बालासुब्रमण्यन और क्लब सर्विस डायरेक्टर डॉ शंकरन की उपस्थिति में DG जी चंद्रमोहन और उनकी पत्नी मंजुला ने RIPN शेखर मेहता और राशी का स्वागत किया।*

और लोग आप की हंसी उड़ाते हैं, तो समझ लीजिये कि आप सही रास्ते पर हैं। जिस जिस पे ये जग हंसा है,इतिहास उसी ने रचा है।'' मेहता ने वहां आये रोटेरियनों से बड़े सपने देखने का अनुरोध करते हुए कहा कि उस आदमी की हिम्मत की कल्पना करें, जो 30 साल पहले खड़ा हुआ और बोला था कि हम इस दुनिया से पोलियो को जड़ से मिटा देंगे। निश्चय ही, दुनिया के अधिकांश देशों से पोलियो उन्मूलन का काम रोटरी ने अकेले नहीं किया है, यह महत्वपूर्ण सहयोगियों के साथ ही यहां पहुंचा था। साथ ही रोटेरियनों और रोटरी क्लबों ने भी हजारों आंखों के ऑपरेशन भी किये थे, बड़ी संख्या में शौचालयों का निर्माण किया, जल निकायों को पुनर्स्थापित किया है... ''इतना कुछ, वो सिर्फ इसलिए क्योंकि हम रोटेरियन दिल से सोचते हैं।''

लेकिन साथ ही उनके पास अद्भुत प्रतिभा, कौशल और एक ज़बरदस्त नेटवर्क भी था; ''इस के साथ ये तथ्य भी जोड़ें कि आप में से यहाँ बैठा प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने समाज का प्रमुख नेता हैं ... एक अग्रणी चिकित्सक, वकील, चार्टर्ड एकाउंटेंट या व्यवसायी ... हमारे ज़ोन्स में करीब 1.5 लाख रोटरी परिवार हैं। हम अपने समाज में अग्रणी हैं और हम 100 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं, इसलिए अब हम छोटे मोटे काम नहीं कर सकते, हमें बड़े काम करने चाहियें । लेकिन आप अपने कार्यक्रमों की संरचना बनाइये, ठीक साक्षरता कार्यक्रम की तरह, एक नियत समानता और मानकों के साथ, और आप जो भी सपना देखने का हौसला रखेंगे उसे ज़रूर हासिल कर लेंगे।''

रो ई मंडल 3232 के वरिष्ठ नेताओं को बधाई देते हुए, मेहता ने कहा, ''यह एक उत्कृष्ट मंडल है ... पिछले 5-7 वर्षों में आपने अपनी सदस्यता

दोगुनी की है और यहां तक कि रोटरी फाउंडेशन में भी पिछले कई वर्षों से मण्डल 1 मिलियन डॉलर से अधिक दे रहा है। इस के साथ आप उसमें बाकी सेवा परियोजना ऐं भी जोड़ दें, जैसी आज सुबह मैं रो क्लब मद्रास द्वारा की गई दो परियोजनाओं को देखने गया था, और आप वहां शीर्ष पर पहुँच गए हैं।''

मंडल अध्यक्ष जी चंद्रमोहन और पीडीजी इसाक नज़र जिन्होंने कार्यक्रम का आयोजन किया था, मेहता ने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा कि रो ई मंडल 3232 के रोटेरियनों ने राशी और उन पर की गई प्यार और स्नेह की बौछार, से वह अभिभूत थे,जो साफ़ नज़र आ रही है, गुरुवार के दिन भी दोपहर 4 बजे हॉल ठसाठस भरा है, आपने जो आतिथ्य दिखाया है और सम्पूर्ण भारत में अन्य रोटेरियनों ने भी जो प्रेम बरसाया है हम किसी भी तरह से उस प्यार और स्नेह को लौटा नहीं सकते। लेकिन साथ ही जब आप ऐसा करते हैं, यह मेरी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ा देता है।''

उन्होंने कहा कि जिस दिन उन्हें रो ई निदेशक नामित किया गया था, ''मुझे लगा था कि मैं इसके लायक नहीं हूं, लेकिन मुझे इसके काबिल बनना होगा। इसलिए उस रात मैंने लिखा था कि मेरे बारे में कही जा रही उन सभी अच्छी चीजों के योग्य बनने की आवश्यकता है मुझ। इन कार्यक्रमों में भी वो यही प्रयास कर रहे थे, ताकि कम से कम वह खुद की तारीफ़ के नज़दीक पहुँच सकें!

लंबे अरसे तक मेहता के साथ गुज़ारे दिनों को याद करते हुए, रो ई मंडल 3232 से पधारे आर आइडीएन ए एस वेंकटेश, ने कहा कि जब साक्षरता कार्यक्रम की परिकल्पना की गई थी नौ साल पहले, लगभग दो साल तक, ''मैं हर हफ्ते कोलकाता जाता था.... मैं मजाक नहीं कर रहा। शुरुआती दिनों में ही यह स्पष्ट हो गया था कि वह कड़ाई से काम कराएँगे। पर उनके साथ काम करने में खूबी यह है कि वह लगभग असंभव लक्ष्य निर्धारित करते हैं साथ ही आपको यकीन भी दिलाते हैं कि उन्हें हासिल किया जा सकता है और फिर उन्हें पूरा करने के लिए आपका मार्गदर्शन करते हैं। इस तरह का नेतृत्व प्रदान करते हैं ये।''

मेहता बहुत मेहनती व्यक्ति हैं, और एक रात वेंकटेश को इसका पता भी चल गया जब उनका फोन रात को 1.45 बजे घनघनाया दूसरी तरफ शेखर थे, बोले : 'वेंकी, तुम सो रहे हो क्या?''

लेकिन ''जब आप उनके साथ काम करते हैं, तो मालूम चलता है कि ये आदमी बड़ी सोच रखता है, वो यह देखता है कि आप कितनी दूर तक जा सकते हैं और फिर सुनिश्चित करता हैं कि आप वहां

हमारे देश की जरूरतें बहुत ज़्यादा हैं मैंने ये सीखा है कि जब आप बड़े लक्ष्य निर्धारित करते हैं और लोग आप की हंसी उड़ाते हैं, तो समझ लीजिये कि आप सही रास्ते पर हैं।

RIPN शेखर मेहता

RIPN मेहता को RID 3232 से एक स्मारिका के रूप में अपनी और राशी की पेंटिंग प्राप्त हुयी। बाएं से: PDG नाज़र, DGE एस मुत्तुपलनियप्पन, रोटेरियन महावीर बोथरा, PRID पी टी प्रभाकर, DG चंद्रमोहन, RIDN वेंकटेश और DGN श्रीधर चित्र में शामिल हैं।

बाएं से: *RIPN मेहता, राशी, RIDN वेंकटेश और DGN श्रीधर।*

तक पहुँचें। लेकिन उनके कर्मशील पक्ष की अधिक महत्वपूर्ण बात थी कि वो और राशि अपने साथ काम करने वालों का पूरा ध्यान रखते थे। कोलकाता की हर यात्रा पर उन सभी का भोजन मेहता के घर से आता था; दोनों इस बात का पूरा ध्यान रखते थे जैसे आप उनके परिवार का ही हिस्सा हैं।''

उन्होंने कहा कि जब उड़ान देरी से पहुँचती थी और दोपहर के भोजन का समय निकल जाता था, तो पैक किया हुआ मसालेदार डोसा उनका स्वागत करता था। ''बेशक आज वो पूरी दुनिया के नेता बन गए हैं और नेता के रूप में उन्हें पा कर रोटरी विश्व भाग्यशाली है। मैं दोगुना भाग्यशाली हूं कि मैं उनके साथ रो इ बोर्ड में अपनी सेवाएं दूंगा। फिर, हास्य का पुट देते हुए उन्होंने व्यंग्य किया मुझे यकीन है कि उनके सानिध्य में बोर्ड में एक निदेशक के रूप में मेरा समय बहुत ही आराम से गुजरेगा।''

उनके साथ काम करने में खूबी यह है कि वह लगभग असंभव लक्ष्य निर्धारित करते हैं साथ ही आपको यकीन भी दिलाते हैं कि उन्हें हासिल किया जा सकता है और फिर उन्हें पूरा करने के लिए आपका मार्गदर्शन करते हैं। इस तरह का नेतृत्व प्रदान करते हैं ये।

RIDN ए एस वेंकटेश

मेहता को बधाई देते हुए, पीआरआईडी पी टी प्रभाकर ने, जो आरआईपीएन नामांकन समिति में भी थे, स्मरण किया कि मेहता ने वास्तव में बहुत कठिन प्रतिस्पर्धा का सामना किया था, रोटरी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष की भूमिका के लिए चुने गए अंतिम चार ''सभी विश्व स्तरीय, शानदार नेता थे, लेकिन अध्यक्ष की इज़्ज़त मेहता को हासिल हुई ; साक्षात्कार में उनके दिए गए जवाब सबसे अच्छे थे।उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि दुनिया को पूरी तरह से पोलियो मुक्त बनाने से पहले ही रोटरी को नोबेल पुरस्कार मिल जाएगा, क्योंकि पिछले 30 वर्षों में हमने जो हासिल किया है उसे देखें, दुनिया के अधिकांश हिस्सों से पोलियो का सफाया कर दिया है।''

डीजी चंद्रमोहन ने मण्डल 3232 द्वारा की गई प्रमुख परियोजनाओं का संक्षिप्त ब्यौरा दिया, जिसमें 'पिंक ऑटो' परियोजना भी शामिल है, जो काफी चर्चा में रही, क्योंकि ये महिलाओं को सशक्त कर रही है, इस योजना के तहत महिलाऐं खुद अपने तीन-पहिया वाहन स्वयं चला कर आजीविका कमा रही हैं। कुल मिलाकर, इस परियोजना का उद्देश्य 200 महिलाओं को लाभान्वित करना है।

उनके द्वारा शुरू की गई एक अन्य महत्वाकांक्षी परियोजना के बारे में बताते हुए डीजी ने कहा कि उन्होंने मण्डल के प्रत्येक रोटेरियन से 2 डॉलर दान करने का अनुरोध किया है, और उसके बाद अपने परिवार के 100 सदस्यों, दोस्तों, ग्राहकों आदि से संपर्क कर प्रत्येक से 2 डॉलर देने का अनुरोध। ''हमारे यहां 5,000 रोटेरियन हैं, और इस रोटरी वर्ष के अंत तक, हम 1 मिलियन डॉलर इकट्ठा कर आपको (मेहता) भेंट करने की उम्मीद करते हैं ताकि इसे टीआरएफ को दिया जा सके। तब टीआरएफ के माध्यम से यह राशि और बढ़ेगी और वैश्विक अनुदान के साथ मिल कर और बड़ी व बेहतर सामुदायिक परियोजनाओं के लिए अधिक धन राशि का उपयोग किया जाएगा,'' उन्होंने मेहता से वादा किया।

वहां उपस्थित सभी डीजीयों ने टीआरएफ के लिए धन इकट्ठा कर इस योजना को सफल बनाने के लिए चंद्रमोहन को अपनी प्रतिबद्धता जताई।

पीडीजी नज़र ने समारोह में उपस्थित सभी का स्वागत किया और कहा कि यह मेहता का नेतृत्व, कौशल और अथक परिश्रम था जिसके कारण रोटरी में आज वो शीर्ष स्थान पर पहुँचे थे।

डीजीई एस मुत्तुपलनियप्पन ने आरआईपीएन को बधाई दी और पारंपरिक रूप से उन्हें सम्मानित किया।

चित्र: रशीदा भगत

कॉलेज की लड़कियाँ के लिए शिक्षा का उपहार

वी मुत्तुकुमारण

कॉलेज की शिक्षा ज़ारी रखने के लिए जरूरतमन्द लड़कियों की मदद करने हेतु रोटरी क्लब मद्रास नॉर्थ, रो ई मंडल 3232, की वित्तीय सहायता योजना, *प्रोजेक्ट विडियाल*, के लोकार्पण पर RIPN शेखर मेहता ने कहा कि हमारे समुदायों के सामने बड़ी चुनौतियाँ है और जो सेवा परियोजनाएं हम करते है वे एक बड़े प्रभाव को जन्म देने के लिए बहुत छोटी प्रतीत होती है।

सार्थक परियोजनाएं करने के लिए उन्होंने रोटेरियनों से बड़ा सोचने, अपना लक्ष्य ऊंचा रखने और कार्यक्रमों के माध्यम से धन जुटाने का आग्रह किया। उन्होंने 50 वर्षीय पुराने क्लब, चेन्नई के चौथे सबसे बड़े क्लब, की यह परियोजना करने के लिए प्रशंसा की जो शुरुआत में 10 लड़कियों की कॉलेज शिक्षा का निधीयन करेगा, परंतु कहा, ''अगले वर्ष लक्ष्य 100 लाभार्थियों, 10 गुना अधिक, का होना चाहिए जो बेशक हासिल किया जा सकता है।'' उनके गृह क्लब, रोटरी क्लब महानगर, ने लगभग 150 बच्चों की शिक्षा को प्रायोजित किया है और अगले वर्ष वे इस आंकड़े को 250 लाभार्थियों तक ले जाएंगे।

कोलकाता में उनके मंडल के क्लब द्वारा आयोजित किए गए एक कार्यक्रम के बारे में बताते हुये जिसमें रॉबिन शर्मा अतिथि वक्ता के रूप में आए थे, मेहता ने कहा कि प्रत्येक टिकिट 5,000 का था और क्लब की परियोजनाओं के लिए बड़ी राशि

RIPN शेखर मेहता प्रोजेक्ट विडियाल के एक छात्र लाभार्थी के साथ बातचीत करते हुए। राशी और डीजी जी चंद्रमोहन चित्र में शामिल हैं।

PRID पी टी प्रभाकर, डीजी जी चंद्रमोहन, रोटरी क्लब मद्रास नार्थ के अध्यक्ष एम गणपति, डीजीई एस मुत्तुपलनियप्पन और डीजीएनडी डॉ नंदकुमार की उपस्थिति में RIPN मेहता ने कॉलेज के एक छात्र को चेक प्रदान किया।

इकट्ठा करने के अलावा, इस कार्यक्रम ने बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करके उनका दिल जीत लिया। उन्होंने क्लब के सलाहकार पीडीजी ओलिवनान से प्रतिष्ठित व्यक्तियों को बोलने हेतु आमंत्रित करने के लिए कहा जिससे कि क्लब धन जुटा पाएंगे। दशकों पहले रोटरी में एक नौसिखिये के रूप में, उन्होंने एक स्मारिका परियोजना की अध्यक्षता की थी जिससे ₹1.5 लाख एकत्रित हुये थे और यह अब तक के उनके रोमांचक सफर का शुरुआती बिन्दु था।

उन्होंने चार्टर अध्यक्ष से नए रोटेरियनों की अच्छे से देखभाल करने के लिए कहा क्योंकि क्लब अध्यक्ष का काम उनके सदस्यों के अहम को भड़काने का है। रोटरी क्लब चेन्नई लेजेंड्स के पच्चीस सदस्यों को भी कार्यक्रम में शामिल किया गया। ''समुदाय तक पहुँचकर और बड़ी परियोजनाएं करके अपने क्लब द्वारा दिये जाने वाले अवसरों का पूरा इस्तेमाल कीजिये, उन्होंने नए सदस्यों को सलाह दी।''

डीजी चंद्रमोहन ने कहा मेहता *प्रोजेक्ट विडियाल* की शुरुआत करने के लिए सही व्यक्ति है क्योंकि उन्होंने RILM का मार्गदर्शन किया था जिसका मकसद भारत में पूर्ण साक्षरता लाने का है।'' गवर्नर ने कहा रो ई मंडल 3232 ने टीआरएफ़ में देने के लिए 1 मिलियन डॉलर और इस रोटरी वर्ष में 1,000 नए सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य रखा है।

इससे पहले, क्लब अध्यक्ष एम गणपति ने महात्मा गांधी के शब्दों को याद किया था जिन्होंने समाज की प्रगति के लिए महिलाओं की शिक्षा पर ज़ोर दिया था। उन्होंने कहा, परियोजना प्रमुख एन वेंकटेश के कारण क्लब एक अनुदान संचयन की मदद से ₹1 करोड़ का कॉर्पस बना पाया।

NGO के साथ टाई-अप

आनंदम फ़ाउंडेशन, एक एनजीओ, को ₹2 लाख का एक चैक प्रदान किया गया जिसके साथ *प्रोजेक्ट विडियाल* को लागू करने के लिए क्लब ने एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। ''हमनें इस एनजीओ का चुनाव किया है जिसने तमिल नाडु में 500 लड़कियों को शिक्षित करके अपनी दक्षता साबित की है। परियोजना के लिए ₹1 करोड़ का कॉर्पस इकट्ठा करने के लिए हमनें एक म्यूज़िकल नाईट का आयोजन किया था। इस राशि से मिलने वाले ब्याज से *प्रोजेक्ट वाडियाल* का वार्षिक खर्च निकाला जाएगा,'' क्लब के संयुक्त सचिव आनंद सारवान राज ने कहा।

सदस्यता के मंडल प्रमुख बी दक्षायिनी ने कहा रो ई मंडल 3232 के पास जून 30 को साल के खत्म होने तक आठ नए क्लब होंगे। दो क्लब - रोटरी क्लब चेन्नई अमेथिस्ट (एनेट्स के लिए) और चेन्नई लेजेंड्स - अब तक स्थापित हो चुके है। चार्टर अध्यक्ष एलंचेज़्हियन ने कहा कि वह वर्ष के अंत तक क्लब की सदस्यता को कम से कम 40 तक ले जाने का प्रयास करेंगे। आयोजन की तुलना करते हुये, पीडीजी ओलिवनान ने क्लब अध्यक्ष के उनके कार्यकाल के दौरान एन वेंकटेश के मार्गदर्शन में की गई परियोजना की उत्पत्ति को याद किया। PRID पी टी प्रभाकर, PDG अभिरामी रामनाथन (रो ई मंडल 3231), PDG पी गोपालकृष्णन (रो ई मंडल 3000), PDG जॉन डेनियल (रो ई मंडल 3211), डीजीई एस मुत्तुपलनियप्पन, DGN डॉ नंदकुमार और RPIC राजदुराई माइकल लोकार्पण समारोह में उपस्थित थे।■

RIDN का चेन्नई

RIDN वेंकटेश और विनीता के साथ PDGयों आर रेघुनाथ और सुनील। ज़करिया (रो ई मंडल 3211)।

में सम्मान समारोह

RIDN ए एस वेंकटेश और उनकी पत्नी विनीता का शानदार स्वागत।

विनीता, अपने क्लब, रोटरी क्लब चेन्नई टावर्स के सदस्यों के साथ।

ऊपर से

RIDN वेंकटेश और विनीता।

(दाएं से) PDG यों ISAK नज़र, आर श्रीनिवासन और DGE एस मुत्तुपलनियप्पन।

नीचे: *RIDN वेंकटेश के साथ DG जी चंद्रमोहन।*

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

आइये हम संग्रहित दान के बल का लाभ उठाएं: RIDN वेंकटेश

रशीदा भगत

मेरा सपना है कि हम रोटरी ब्रांड के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करें, ताकि हम लोगों को रोटरी की ओर आकर्षित कर सकें रोटरी की तरफ धकेलने के बजाय। आइए अपने ब्रांड की रचना इस प्रकार करें कि लोगों में हमारे साथ जुड़ने के लिए जोश हो, वो उत्साहित हों ... एक कतार में प्रतीक्षा करें और कहें कि क्या आप मुझे ''रोटरी का सदस्य बनाएंगे,'' रो ई निदेशक नॉमिनी ए एस वेंकटेश ने चेन्नई में आयोजित एक बधाई समारोह में कहा जहाँ कई मंडलों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

RIPN शेखर मेहता के सपने का जिक्र करते हुए, पहले इस कार्यक्रम में जिन्होंने अपने उद्बोधन में कहा था कि भारतीय रोटरी में तीन लाख सदस्य होने चाहिए, उनका कहना था कि ऐसा तभी संभव हो सकता है जब सदस्यता की जिम्मेदारी सिर्फ क्लब अध्यक्ष या अधिकारियों तक ही सीमित ना रहे, बल्कि व्यापक हो व कुशलतापूर्वक निबाही जाये। ''यही वो क्षेत्र है जहाँ अधिकतर समस्याएं आती हैं। नए सदस्य जोड़ने के लिए उन्हें अपने मित्र और परिचित ही मिलेंगे और जैसे ही उनका कार्यकाल समाप्त होगा तो वे रोटेरियन निकल जायेंगे।''

RIPN शेखर मेहता, RIDN ए एस वेंकटेश और उनकी पत्नी विनीता को सम्मानित करते हुए। चित्र में TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती, ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रवीन्द्रन, DG जी चंद्रमोहन और DGE एस मुत्तुपलनियप्पन भी शामिल हैं।

और क्लब में जब नए सदस्य जुड़ते हैं, तो ''उनके लिए उचित ओरिएन्टेशन पाठ्यक्रम होना चाहिए जैसा कॉर्पोरेट जगत में होता है। अगर हम ये संभव कर सकें तो हमारे पास एक मजबूत आधार होगा।''

चौंका देने वाले आंकड़े उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि जोन 5 में पिछले पांच वर्षों की सदस्यता का विश्लेषण किया था और उन्होंने पाया कि ''पिछले सात सालों में हमने जितने सदस्य खोए हैं आज भी जोन में उतने ही सदस्य हैं जिसका तात्पर्य है कि यदि पिछले सात वर्षों में किसी ने रोटरी नहीं छोड़ी होती, तो जोन 5 में हमारी सदस्यता दोगुनी होती।''

इन आंकड़ों को बाकी मंडलों के साथ जोड़ कर देखें, यदि पिछले सात वर्षों में किसी

जीवनसाथी का प्रभाव

स्वागत समारोह में, अधिकांश वक्ताओं ने अपने सम्बोधन में विनीता की उपलब्धियों को एक कॉर्पोरेट सम्मान के रूप में बताया। इसके अलावा, IIM अहमदाबाद से स्नातक, जहां उनकी मुलाक़ात अपने पति से हुई थी, उन्हें वेंकटेश की एक बेशकीमती संपत्ति होना ही था, जो उनके द्वारा दी गई सलाह और परामर्श से लाभान्वित होंगे, सभी वरिष्ठ नेताओं ने यही सलाह दी।

PRID भास्कर ने याद किया कि हाल ही में एक कार्यक्रम में, PRID मनोज देसाई ने पहले प्रयास में ही शेखर मेहता के रो ई अध्यक्ष चुने जाने के पीछे का राज बताया था: साक्षात्कार के लिए राशी को अपने साथ इवान्स्टन ले जाना।

इस वर्ष पहली बार, रो ई निदेशक के पद के लिए नामांकन समिति द्वारा, उम्मीदवारों को साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया गया था। ''मैंने वेंकटेश से पूछा था, क्या आप उस साक्षात्कार के लिए विनीता को साथ ले गए थे, उनका जवाब था 'हाँ'। उन्होंने शेखर का अनुसरण किया था। इसलिए किसी भी महत्वपूर्ण समय पर, सफलता पाने के लिए ध्यान रखें कि आपका जीवन साथी आपके साथ रहे।''

भी रोटेरियन ने नहीं छोड़ा होता, तो भारत में रोटरी के तीन लाख से अधिक सदस्य होते। ''लेकिन सदस्यों को खोने से भी खराब बात ये थी कि हम समाज में खराब ब्रांड एंबेसडर भी पैदा कर रहे हैं। जो छोड़ते हैं वे रोटरी की खामियों के बारे में बात करेंगे; तो आइये ऐसे खराब ब्रांड एंबेसडरों से दूरी बनाये रखें,'' वेंकटेश ने कहा।

उन्होंने सभी रोटेरियनों से आग्रह किया कि वे इस तरह से काम करें, जिससे रोटरी को सदस्यता या ''दान के लिए पसंदीदा एनजीओ'' बनाया जा सके, उन्होंने कहा: ''अगर मैं पांच बच्चों की स्कूल फीस दे सकता हूं और एक अन्य व्यक्ति भी यही कर सकता है, तो जब हम दोनों रोटरी में शामिल होंगे, हमें वही नहीं करते रहना चाहिए, जो बाहर रह कर भी किया जा सकता था बल्कि हमें एक स्कूल का निर्माण करना चाहिए। यह होनी चाहिए रोटरी की शक्ति, जहां एक और एक मिल कर दो नहीं बल्कि 11 हों।''

संग्रहित ''दान के बल का लाभ उठाने की आवश्यकता'' पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, ''अपना ध्यान बड़े पैमाने पर गतिविधियों का

निर्माण करने पर केंद्रित करें, हमारे पास वो ब्रांड है जिसे मान्यता प्राप्त है और वो लोकप्रिय है। हम सभी अपने व्यापार में अपने ब्रांड और बाजार दोनों का सृजन करते हैं। रोटरी के लिए भी यही करें।''

हालांकि निदेशक के रूप में दो साल के कार्यकाल में उनका ध्यान इन सब पर रहेगा, उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने अपनी पदवी को किसी अधिकार या जिम्मेदारी का पद नहीं समझा है। ''इस पद पर मौक़ा मिला है ताकि फर्क कर सकें। अगर मैं कुछ भी नहीं करूँ तो मुझसे कोई सवाल नहीं करेगा; मैं भी 2023 में एक भूतपूर्व निदेशक कहलाऊंगा। महत्वपूर्ण ये नहीं है कि लोग मुझसे क्या उम्मीद करते हैं बल्कि ये है कि मैं खुद से क्या उम्मीद करता हूं। मुझे एक फर्क दिखाने का अवसर मिला है। न तो यह आरम्भ है और न ही अंत, यह एक सतत यात्रा है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूं कि कृपया इस यात्रा में मेरे सहयात्री बनें, आइये साथ में इसका आनंद लें और जिस गंतव्य के लिए निर्धारित है, वहां पहुंचे।''

वेंकटेश का स्वागत करते हुए, RIPN शेखर मेहता ने कहा, ''भारत ने रो ई निदेशक पद के लिए सबसे योग्य व्यक्तियों में से एक को चुना है; वेंकी

बाएं से: PDG I S A K नाज़र, PRID सी भास्कर, ट्रस्टी वाहनवती, ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट रवीन्द्रन, PRID पी टी प्रभाकर, RIPN मेहता, RIDN वेंकटेश, विनीता, DG चंद्रमोहन, DGE मुत्तुपलनियप्पन, DGN श्रीधर, DGND डॉ नंदकुमार, AG बालासुब्रमण्यन, क्लब सर्विस डायरेक्टर डॉ शंकारन और मंडल सचिव गणपति सुरेश।

कार्यक्रम के चेयरमैन PDG ISAK नाज़र, DG चंद्रमोहन का स्वागत करते हुए। RIDN वेंकटेश RIPN शेखर मेहता, TRF ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रवीन्द्रन, PRID सी भास्कर और माला चित्र में शामिल है।

एक स्मार्ट, बुद्धिमान व्यक्ति है, काफी पढ़ा लिखा है; IIM और IIT से बेहतर संयोजन आपके पास नहीं हो सकता है। उनकी जीवनसंगिनी विनीता भी IIM- से है। वह एक तेज-तर्रार, बुद्धिमान, विचारशील व्यक्ति हैं और मैं हमेशा से एक ऐसे निदेशक मंडल पर विश्वास करता हूं, जिसमें आपको उन लोगों की जरूरत नहीं है जो बहुत परिश्रम करते हैं बल्कि आपको ऐसे लोगों की आवश्यकता है जिनकी सोच बहुत मजबूत है।''

किसी भी उद्यम में, यह सोच ही सबसे महत्वपूर्ण है, और ''मैंने वेंकी को बहुत नज़दीकी से ऐसा करते देखा है और इससे मुझे फायदा भी हुआ है। प्रत्येक व्यक्ति TEACH का श्रेय मुझे देता है, हां काफी हद तक यह सही भी है, लेकिन एक व्यक्ति जिसके साथ पूरी तरह से उस श्रेय को मैं साझा करता हूं वह व्यक्ति यही है।''

उन्होंने खुलासा किया कि जब उन्होंने साक्षरता पर काम करना शुरू किया, ''तो उन्हें एक साउंडिंग बोर्ड की सख्त जरूरत थी; ऐसा व्यक्ति जो मेरी हाँ में हाँ नहीं मिलाएगा बल्कि उसकी अपनी राय होगी और वह स्मार्ट होगा और मैंने वह व्यक्ति वेंकी में पाया। एक दिन भी ऐसा नहीं गया है जब हम फोन कॉल पर नहीं थे। मैं जिस चीज की भी चर्चा करता था, उसके लिए उसके पास सटीक उत्तर था।''

मेहता ने कहा कि, ''कॉर्पोरेट जगत में विनीता की अपनी व्यक्तिगत पहचान है, जो इस यात्रा में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगी, और ये आपको बहुत ही सार्थक राय देंगी, जो बोर्ड के अन्य सदस्यों के साथ विचार विमर्श करने में बहुत सहायक होगी।''

2022-23 में वेंकटेश के रो ई बोर्ड में सेवा देने के लिए उन्होंने खुद को ''बहुत भाग्यशाली'' माना, ''हमने साथ-साथ छह साल काम किया है, और हमारे विचार पूरी तरह से मेल खाते हैं।'' उन्होंने दोहराया, भारत में रोटरी कोहिनूर है। रोटरी के ताज में कोहिनूर; चाहे वो सदस्यता हो, टीआरएफ योगदान

हों या परियोजनाएं, हमारा काम और योगदान उत्कृष्ट कोटि का है।

मेहता ने कहा कि हमारे जोन में रोटेरियन जिस प्रकार की परियोजनाएं करते हैं अन्य कोई देश वैसी परियोजनाएं नहीं करता और एक अन्दाज़े से कहा कि भारतीय रोटेरियन अपनी परियोजनाओं के लिए टीआरएफ फंड का मुश्किल से 12 फीसदी का ही उपयोग करते हैं। उन्होंने नए RIPN को बताया: ''आज हम सबसे श्रेष्ठ समय पर हैं और स्प्रिंगबोर्ड से छलांग लगाने के लिए तैयार हैं और आप इसमें एक प्रमुख भूमिका निभाएंगे, क्योंकि आप वहां दो साल तक रहेंगे, जबकि मैं केवल एक साल रहूंगा और आप भारत में रोटरी की कार्यप्रणाली के स्वरुप में परिवर्तन ला सकते हैं।''

PRIP राजेंद्र साबू ने एक वीडियो संदेश के ज़रिये वेंकटेश का उल्लेख एक ''उत्कृष्ट रोटेरियन के रूप में किया और विश्वास व्यक्त किया कि रो इ बोर्ड में, अपने ज्ञान, अनुभव और बुद्धिमत्ता का उपयोग कर, वह स्वयं, भारत और रोटरी को गौरव और प्रतिष्ठा दिलाएगा।

PRIP के आर रवींद्रन ने कहा कि वेंकटेश में एक रो ई निदेशक बनने के सभी आवश्यक

आइए अपने ब्रांड की रचना इस प्रकार करें कि लोगों में हमारे साथ जुड़ने के लिए जोश हो, वो उत्साहित हों ... एक कतार में प्रतीक्षा करें और कहें कि क्या आप मुझे रोटरी का सदस्य बनाएंगे।

RIDN ए एस वेंकटेश

गुण मौजूद थे। ''किसी भी कार्य को अच्छी तरह से निष्पादित करने के लिए उनके पास विषय का जबरदस्त ज्ञान, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा, दृढ़निश्चय, कार्य के प्रति अटूट लगन, टनों ऊर्जा एवं उत्साह के साथ एक दक्ष दिमाग और बुद्धि दोनों है।''

लेकिन इन सबके ऊपर, उन्होंने कहा, ''उनके पास विनीता है ... जो अपने आप में एक बेहद सफल अधिकारी हैं, असाधारण रूप से प्रतिभाशाली हैं, व्यापक रूप से यात्रा कर चुकी हैं, और शिपिंग उद्योग में कार्यरत हैं।''

''एक महान नेता बनने के लिए वेंकटेश में सभी गुण और क्षमता मौजूद है; मुझे कोई संदेह नहीं है कि वह रो ई बोर्ड में सफल व्यक्ति होंगे।'' उनसे प्राथमिकता में पहले, दूसरे, और अंतिम स्थान पर संगठन पर ही ध्यान केंद्रित करने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा, ''यह कहना जितना आसान है उतना आसान है नहीं। हम एक ऐसे क्षेत्र से हैं, जहां बहुत अधिक खींचतान है और दबाव हैं। उसे कई बलिदान देने के लिए कहा जाएगा, एक अनुशासित इच्छाशक्ति को नियोजित करना होगा और बीच का रास्ता निकालना होगा और ऐसे निर्णय भी लेने होंगे जो उसे लोकप्रियता के शीर्ष पर नहीं ले जा सकते।''

RIDN में यह सब करने का सामर्थ्य था, ''लेकिन यदि वह खुद को भूल कर केवल समूह और संगठन पर ध्यान केंद्रित करता है तो वह सर्वश्रेष्ठ नेतृत्व कर सकेगा। वेंकी के लिए नेतृत्व कोई नई बात नहीं है, जिन्होंने रोटरी के भीतर और बाहर नेतृत्व की विभिन्न भूमिकाएँ निभाई हैं।''

रवींद्रन ने कहा कि वेंकटेश एक बहुत ही खास रो इ बोर्ड में शामिल रहे हैं ... एक ऐसा बोर्ड जिसमें आठ महिलाएँ होंगी! ''लेकिन वह बोर्ड शेखर मेहता का उत्कृष्ट सारथी सिद्ध होगा।''

RIDN वेंकटेश, विनीता और ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रवीन्द्रन के साथ PDG सी आर राजू।

जिन्होंने उन्हें तराशा

चेन्नई में उनके सम्मान में आयोजित पहले कार्यक्रम के जवाब में, रो ई निदेशक नॉमिनी ए एस वेंकटेश ने कहा कि RIPN शेखर मेहता की तरह, वह गुलज़ार या ग़ालिब की शायरी नहीं सुना सकते थे और तिरुवल्लुवर की पंक्तियाँ सुनाई: ''उनकी गति नहीं है जो अपने मददगार को भूल जाते हैं।''

गत वर्षों में विभिन्न लोगों द्वारा की गई मदद के लिए, ''उस मुकाम पर पहुँचने के लिए जहाँ आज मैं हूँ,'' उन्होंने अपने क्लब अध्यक्ष (''उमेश, मेरे बॉस'') और रो क्लब चेन्नई मामबलम के अन्य सदस्यों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने इन वर्षों में अक्सर उनके अनुपस्थित रहने के बावजूद उन्हें सहन किया था। प्रारम्भिक वर्षों में यह उपस्थिति ''100 प्रतिशत'' रहती थी, लेकिन मण्डल अध्यक्ष बनने के बाद उसमें गिरावट आती गई।

इसके बाद उन्होंने ''मंडल के सभी डीजीयों का धन्यवाद, जिन्होंने मुझ पर विश्वास कर ये अवसर दिया है। हो सकता है आपके पास कौशल हो लेकिन कोई आपको अवसर तो दे।''

ऐसा करने वाले पहले शख्स पीडीजी बेंजामिन चेरियन थे ''जिन्होंने मेरे क्लब अध्यक्ष बनने के दो साल में ही मुझे, PETS और कॉन्फ्रेंस चेयर की एक बड़ी जिम्मेदारी दे कर पहली बार मुझ पर भरोसा किया था।''

मंडल-स्तर से परे वो PRIP के आर रवींद्रन थे, जिन्होंने रो इ निदेशक रहते हुए, उन्हें रोटरी कोऑर्डिनेटर चुना था। वेंकटेश ने मुस्कुराते हुए कहा, ''उनके साथ काम करने में वास्तव में डर लगता है, क्योंकि वह एक यथार्थवादी व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं, पर अब मैं उनसे उतना नहीं डरता।'' उन्होंने कठिन लक्ष्य निर्धारित किए और कठिन सवाल भी पूछे ''लेकिन उन्हें मुझ पर विश्वास था और वर्ष पर्यन्त मेरा मार्गदर्शन किया, आज वनाथी और रवींद्रन हमारे परिवार के सदस्यों की तरह ही हैं।''

उन्होंने रवींद्रन से ही सीखा था कि कॉर्पोरेट शैली की शासन प्रणाली को रोटरी पर प्रभावी रूप से किस प्रकार लागू किया जा सकता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति को नाराज़ किये बिना उस से कैसे असहमत हो सकते हैं।

मंडल से बाहर के किसी वरिष्ठ नेता के साथ उनकी पहली मुलाक़ात ट्रस्टी वाहनवती के साथ हुई थी जो सैन डिएगो में उनके प्रशिक्षण के दौरान उनके नेता रहे थे; ''मैंने और विनीता ने उनके और हसीना (उनकी दिवंगत पत्नी) के साथ हमने बहुत बढ़िया वक़्त गुजारा है। वह एक आदर्श व्यक्ति हैं और 100 में से 110 नंबर स्कोर करेंगे।''

PRID पी टी प्रभाकर से उन्होंने बहुत कुछ सीखा था। उन्होंने कहा, ''उनकी प्रवृत्ति हर परिस्थिति में जूझने की है; अगर उन्होंने लक्ष्यों पर अपनी नज़र गड़ा दी, तो चाहे कुछ भी हो, वे वहां पहुँच के ही दम लेंगे। PRID सी भास्कर से, उन्हें बॉस कहा जाना चाहिए क्योंकि वो पैदाइशी नेता है, उन्होंने समस्याओं और चुनौतियों के समक्ष हमेशा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ शांतिपूर्वक उनका समाधान किया है।''

मेहता के साथ उन्होंने करीब आठ वर्षों तक काम किया था, तब आधी रात के बाद ही टेलीफोन पर बातचीत हुआ करती थी। शुरू में कुछेक बार वो फोन को स्पीकर पर रखते थे ''ताकि विनीता अन्यथा कुछ और ना समझ ले, फिर अंत में विनीता ने कहा कि यह शेखर का ही होगा, प्लीज, दूसरे कमरे में जा कर बात कर लो और मुझे सोने दो।''

''उन से मैंने जाना कि कोई व्यक्ति कितना प्रतिभासंपन्न हो सकता है, अंतिम छोर तक पहुँचने के लिए आपको कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। वह अत्यंत प्रतिभाशाली, गुणवान और जानकार व्यक्ति हैं लेकिन उनके द्वारा की गई कड़ी मेहनत उन्हें दूसरों से अलग दर्शाती है। जहां तक मुझे पता है वह प्रतिदिन 18 घंटे काम करते हैं।''

वेंकटेश का सम्मान करते हुए, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती ने स्मरण किया कि अंतर्राष्ट्रीय असेंबली में वेंकटेश के DGE बैच के ट्रेनिंग लीडर के रूप में, ''वेंकी और विनीता के साथ मेरी घनिष्ठता और बढ़ी है, क्योंकि वे IIMA से थे और मैं IIM कोलकाता से हूं। उनमें जबरदस्त ऊर्जा है, और मुझे 2022-23 में मेहता (रो ई अध्यक्ष) और वेंकटेश दोनों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त होगा, जो कि ट्रस्टी के रूप में मेरा अंतिम वर्ष होगा।''

वेंकटेश को बधाई देते हुए, PRID सी भास्कर ने कहा कि पिछले 10 वर्षों के दौरान ''भारतीय रोटरी पूरी तरह से बदल गई है; चाहे वह सदस्यता हो या टीआरएफ योगदान, या फिर बड़ी परियोजनाएं रही हों, सर्वत्र हमारे प्रदर्शन की सराहना की जा रही है।''

उन्होंने कहा कि भारत में रोटरी के सन्दर्भ में चिंता के कुछ विषय ज़रूर थे, लेकिन इन पर ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने RIDN से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि वह मंडल की अपेक्षा रोटरी क्लबों पर ज़्यादा ध्यान दें। अधिकांश डीजी मंडल पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे और मंडल के लक्ष्यों को प्राथमिकता दे रहे थे। लेकिन रो ई का सदस्य रोटरी क्लब है और क्लबों का गठन सामाजिक सरोकारों के लिए किया गया था। ''मैंने डीजी के दो समूहों के साथ काम किया है और उन्हें क्लबों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहता रहा हूँ न कि मंडलों पर, क्योंकि मंडलों का गठन क्लबों को समर्थन देने के लिए किया गया है और क्लबों को जीवंत व आकर्षक बनाना उनकी प्राथमिकता होनी

बाएं से: PRID सी भास्कर, DGE मुत्तुपलनियप्पन, RIPN मेहता, मंडल सचिव गणपति सुरेश और DG चंद्रमोहन।

चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके नेतृत्व में क्लबों पर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाएगा और आपके अनुभव और ज्ञान के साथ आपका कार्यकाल शानदार रहेगा।''

बैठक को संबोधित करते हुए, PRID पी टी प्रभाकर ने कहा, ''सफलता का मतलब है दूसरों का दिल जीत कर उन्हें प्रसन्न करना। यदि इस हॉल में बैठे लोगों की संख्या आपकी लोकप्रियता का एक प्रतीक है, जिसमें पूरे भारत के कई वर्तमान और पूर्व रो इ अधिकारी शामिल हैं,तो जाहिर है कि बहुत सारे लोग आप से प्रसन्न हैं।'' वेंकटेश को बधाई देते हुए, उन्होंने कहा, ''आपके भीतर भारत में रोटरी को उसके सबसे महान भविष्य की ओर ले जाने की क्षमता है।''

जो छोड़ते हैं वे रोटरी की खामियों के बारे में बात करेंगे; तो आइये ऐसे खराब ब्रांड एंबेसडरों से दूरी बनाये रखें।

RIDN ए एस वेंकटेश

वर्षा और वरुणा, वेंकटेश और विनीता की बेटियां, जो इस कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सकी थीं, उन्होंने एक वीडियो संदेश में अपने माता-पिता के रोटरी के जुनून के बारे में बताया। बचपन से ही वो दोनों रोटरी के लिए अपने पिता के जुनून को देखते आ रहे थे, रो क्लब चेन्नई ममबलम के सदस्य के रूप में। उनमें से एक ने कहा: ''रोटरी में उनकी तरक्की का सबसे बेहतरीन दौर था, उनकी शिकागो की लगातार यात्राएं क्योंकि हमें भी साथ जाने का अवसर मिलता था। इस सब के दौरान, हमारी माँ उन्हें अपनी ताकत, समर्थन और अपना व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करती रही हैं। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप महान ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे, अप्पा! हम आपके द्वारा किये जाने वाले परिवर्तनों को देखने के लिए अब और इंतजार नहीं कर सकते।''

RIDN का स्वागत करते हुए मंडल 3232 के अध्यक्ष एन चन्द्रमोहन का कहना था, ''मैं उनको काफी लंबे अरसे से देख रहा हूँ और इस पद पर उनका उत्कर्ष यह प्रमाणित करता है कि सफल होने के लिए आपको वो सब नहीं करना चाहिए जो 99 प्रतिशत लोग करते हैं। वेंकी के काम करने की शैली अनूठी है और हमारे मंडल (3232) के सभी 127 अध्यक्ष आपकी महान सफलता की कामना करते हैं।''

DGN एस मुत्तुपलनियप्पन ने कहा कि ''वेंकटेश न केवल मित्रवत और भरोसेमंद थे, वे किसी भी रोटरी विषय पर पूरी स्पष्टता और अधिकार के साथ बात कर सकते हैं। वह व्यवहार-कुशल है और एक कुशल मंच अभिनेता भी। वह बालिका सशक्तीकरण को ले कर संवेदनशील हैं।''

आयोजन के अध्यक्ष PDG इसाक नज़र ने वेंकटेश को RIDN के रूप में नामित किये जाने के लिए बधाई दी और कहा कि उन्होंने मंडल (3232) और भारत दोनों को गौरवान्वित किया है। DGN जे श्रीधर ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। ■

विशेष बच्चों के लिए विशेष RYLA

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन, रो ई मंडल 3080 द्वारा 124 नि:शक्त बच्चों के लिए तीन दिन का मजेदार, उत्साह और खेल का RYLA विशेष 2019 आयोजन किया था। क्लब के अध्यक्ष सलिल देव सिंह बाली ने कहा, ''इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मजेदार गतिविधियों के माध्यम से नि:शक्त बच्चों के विशेष व्यक्तिगत और नेतृत्व गुणों को सामने लाना था।''

PRIP राजेंद्र साबू लाभार्थियों और रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन के सदस्यों के साथ।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन पंजाब की सामाजिक सुरक्षा, महिला एवं बाल विकास मंत्री अरुणा चौधरी ने किया था। उन्होंने विशेष बच्चों के लिए विशेष RYLA का आयोजन करने के प्रयासों के लिए क्लब की सराहना की। प्रशिक्षण के साथ-साथ मज़ेदार कार्यक्रमों में प्रतिभागियों के लिए कई रोमांचक गतिविधियों का आयोजन किया गया था। योग, खेल, इनडोर गेम्स, नृत्य और ऐसे कई अन्य कार्यक्रमों ने बच्चों को बेहद आनंदित किया। बाली ने कहा, ''कलाकार चारु गुप्ता द्वारा आयोजित कला चिकित्सा कार्यशाला उन सत्रों में से एक थी जिसमें प्रतिभागियों ने पूरी तरह से आनंद लिया गया।'' प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने हेतु, सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिए गए, जबकि सभी बच्चों को RYLA प्रमाणपत्र दिए गए।

कार्यक्रम के समय पीआरआईपी राजेंद्र साबू ने कुछ शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग छात्रों को व्हीलचेयर, ट्राई साइकिल और सिलाई मशीन सौंपी। डीजी जितेंद्र ढींगरा की पत्नी रितु ढींगरा ने कहा कि इस वार्षिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए क्लब को ₹70,000 दिए जाएंगे। बाद में, विशेष बच्चों के लिए क्रिकेट मैच और उसके बाद बोनफॉयर का आयोजन किया गया।■

चिकित्सा शिविर से लाभान्वित हुए कोटला के लोग

रोटरी क्लब दिल्ली साउथएक्स, रो ई मंडल 3011 द्वारा हाल ही में दिल्ली के कोटला में दो दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर में आसपास के क्षेत्रों के लगभग 1,800 लोग लाभान्वित हुए। नैत्रिकी, दंत चिकित्सा, त्वचाविज्ञान, स्त्री रोग, हृदय, टीबी, अस्थि घनत्वता, थायराइड और कैंसर जैसे विभिन्न मापदंडों के लिए चिकित्सा जांच की गई।

रोटेरियन ने लोगों के बीच स्वच्छता अभ्यास को बढ़ावा देने हेतु सैनिटरी नैपकिन के 1,000 पैक और 500 हैंड सैनिटाइटर वितरित किए। इसके अलावा, शिविर में 800 लोगों को चश्मा दिया गया।

डीजी सुरेश भसीन ने अपनी पत्नी रितु, डीजीई संजीव राय मेहरा, डीजीएन अनूप मित्तल और अन्य जिला पदाधिकारियों के साथ शिविर का दौरा किया।

क्लब के सचिव मधुकर खेमका ने कहा कि क्लब के व्यापक प्रचार अभियान से इतनी अधिक संख्या में पंजीकरण प्राप्त करने में बहुत मदद मिली है।■

सैन डिएगो में भारतीय रंग

भारतीय दल के साथ इंटरनेशनल असेंबली में RIPN शेखर मेहता और राशी, RID कमल संघवी और सोनल, RID भरत पांड्या और माधवी।

बाएं से: TRF ट्रस्टी - इलेक्ट के आर रविंद्रन, वानती, माधवी, सुसैन नेक, सोनल और RID पांड्या।

(दाएं) ऊपर से: RID पांड्या, RIPN मेहता और RID संघवी; RID कमल संघवी और सोनल; विदेशी प्रतिनिधि।

जुमाना, DGE शब्बीर शाकिर की पत्नी, और उत्कर्षा DGE संग्राम पाटिल की पत्नी, विदेशी प्रतिनिधियों के साथ।

रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी और RIPE होल्गेर नेक।

संगीता बंसल, माधवी पांड्या, सोनल संघवी और वानती रवींद्रन के साथ कुछ DGEयों के जीवनसाथी।

ऊपर से दक्षिणावर्त:
RIPN मेहता, राशी, RI के महासचिव जॉन ह्यूको और उनकी पत्नी मार्गरीटा के साथ DGE एस मुत्तुपलनियप्पन और उनकी पत्नी कमला;

दाएं से: DGEयों एस मनीष शारदा, दविंदर सिंह और उनकी पत्नी डॉली;

बाएं से: माधवी, सोनल, गे मालोनी, TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती और RID पांड्या;

सोनल सांघवी और DGE चिन्नपा रेड्डी की पत्नी महालक्ष्मी।

सुसैन नेक के साथ सोनल संघवी और माधवी पांड्या।

पार्टनर सेशन में DGEयों को संबोधित करते हुए राशी मेहता।

गे मलोनी, माधवी और सोनल के साथ अन्य रो ई निदेशकों की पत्नियां।

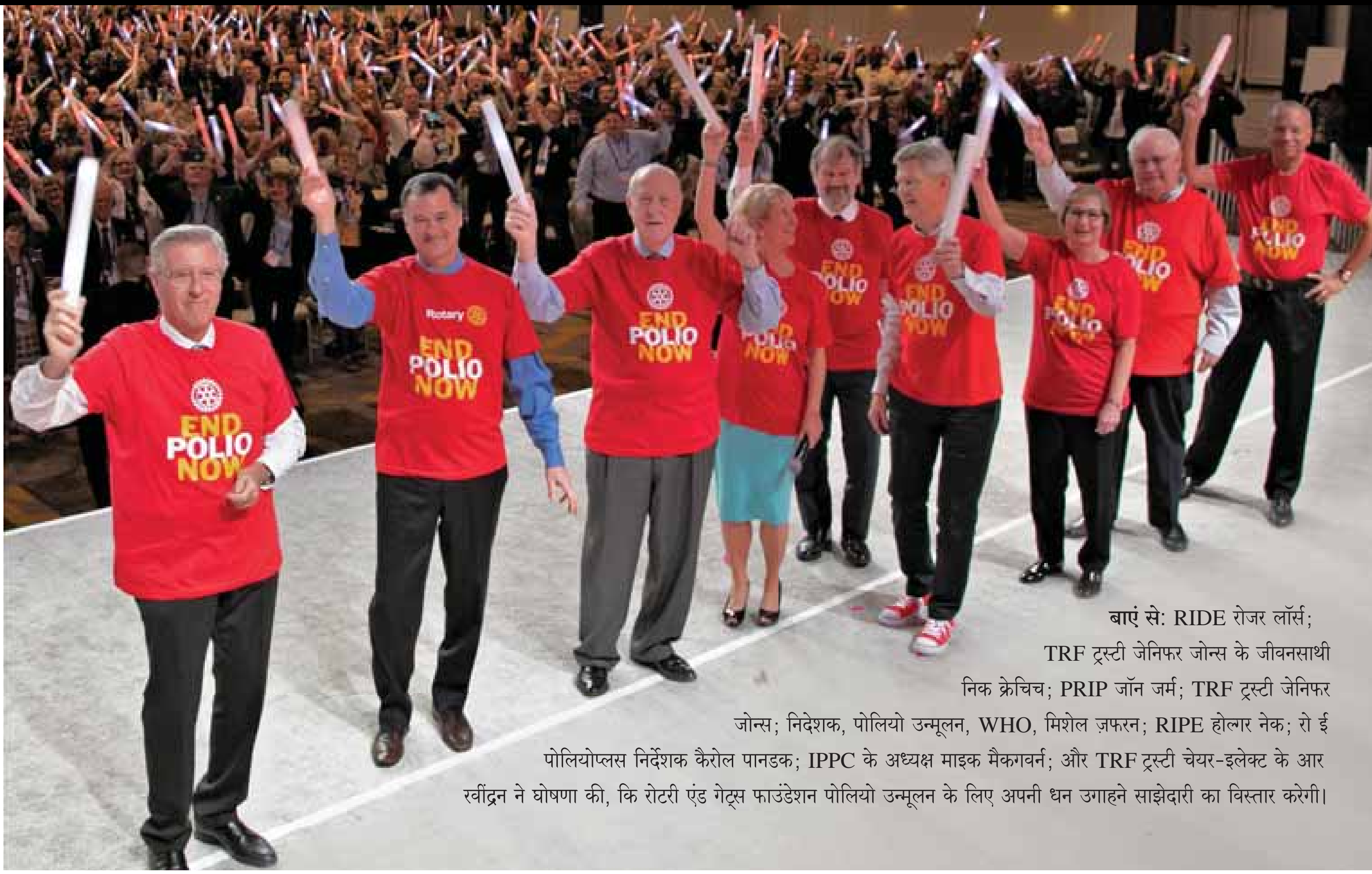

बाएं से: RIDE रोजर लॉर्स; TRF ट्रस्टी जेनिफर जोन्स के जीवनसाथी निक क्रेचिच; PRIP जॉन जर्म; TRF ट्रस्टी जेनिफर जोन्स; निदेशक, पोलियो उन्मूलन, WHO, मिशेल ज़फरन; RIPE होल्गर नेक; रो ई पोलियोप्लस निर्देशक कैरोल पानडक; IPPC के अध्यक्ष माइक मैकगवर्न; और TRF ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रवींद्रन ने घोषणा की, कि रोटरी एंड गेट्स फाउंडेशन पोलियो उन्मूलन के लिए अपनी धन उगाहने साझेदारी का विस्तार करेगी।

ठखझछ मेहता और राशि।

DRRs मनुज मित्तल (रो ई मंढ़ल 3011) और सेंथिलमणि (रो ई मंडल3232)।

चित्र सौजन्य: ***rotary.org***, *RID भरत पांड्या और अन्य DGEयों*

एस कृष्णप्रथेश द्वारा रुपरेखा

अपने दिमाग में अपने संस्थान को सर्वप्रथम रखें: ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट

के आर रविन्द्रन

टीम रोटरी न्यूज

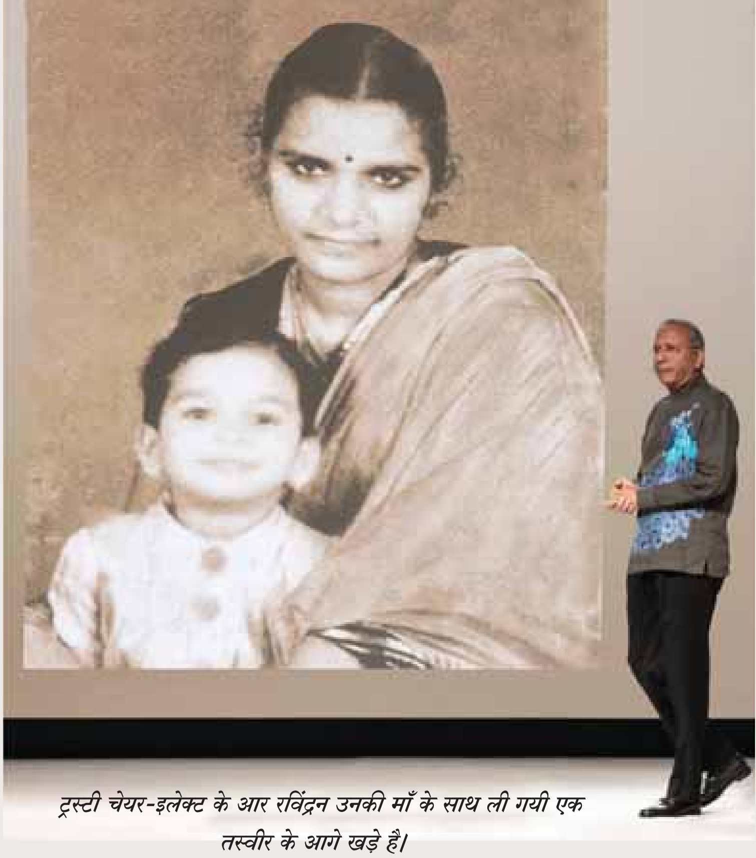

ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रविंद्रन उनकी माँ के साथ ली गयी एक तस्वीर के आगे खड़े है।

टीआरएफ ट्रस्टी चेयर-इलेक्ट के आर रविन्द्रन ने अंतर्राष्ट्रीय सभा में संस्थान के नए कार्यक्रमों और गवर्नर-निर्वाचितों की प्राथमिकताओं के बारे में बात की। एक नई अनुदान योजना, *प्रोग्राम्स ऑफ़ स्केल,* अगले वर्ष शुरू की जाएगी। ''ये अनुदान रोटरी क्लबों को बड़ा सोचने एवं प्रमुख मुद्दों के व्यापक समाधानों को ढूँढने हेतु सह-साझेदारों एवं प्रायोजकों तक पहुँचने की चुनौती देंगे, जिसका फायदा एक बड़ी जनसंख्या तक पहुँचेगा।''

इसे आगे समझाते हुये उन्होंने सर्विकल कैंसर टीकाकरण परियोजना का उल्लेख किया, जो एकमात्र ऐसा कैंसर है जिसे टीके से रोका जा सकता है। कार्यक्रम में 8-10 वर्ष की हर एक लड़की को टीका लगाना एवं 35-45 वर्ष की हर एक महिला की जांच करना शामिल है। ''फिर आप सिद्धांतों में तो सर्विकल कैंसर को तो मिटा सकते है।'' लेकिन कोई भी एक संगठन ऐसा अकेले नहीं कर सकता और इसे विभिन्न संस्थानों के समर्थन की जरूरत पड़ेगी। प्रोग्राम्स ऑफ स्केल अनुदान हर वर्ष 2 मिलियन डॉलर के एक एकल अनुदान की मदद से इस पैमाने की परियोजनाओं की मदद करेगा।

प्राथमिकताओं के बारे में बात करते हुए, रविन्द्रन ने बात दोहराई कि पहली प्राथमिकता बेशक पोलियो को खत्म करना है। ''हमने पहले ही पोलियो के मामलों की संख्या में 99.9 प्रतिशत की कमी कर दी है। अब केवल दो देशों - पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान - में जानलेवा पोलियोवायरस बचा हुआ है। हम उसे भी खत्म कर देंगे,'' उन्होंने कहा।

दूसरी प्राथमिकता एनुअल फंड एवं पोलियोप्लस को बढ़ाने के साथ-साथ 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर की अक्षय निधि का निर्माण करने की है। अगले वर्ष के लिए व्यापक धन संचयन लक्ष्य 410 मिलियन डॉलर का है। उन्होंने बताया कि लगभग 20 प्रतिशत क्लब संस्थान के एनुअल फंड में योगदान नहीं देते है। ''यदि हमें हमारे वैश्विक अनुदानों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती मांग, जो हमारे क्लबों को ज़िंदगियाँ परिवर्तित करने के काबिल बनाती है, की पूर्ति करना चाहते है तो हमें अपने लक्ष्यों को हासिल करना होगा।''

अगली प्राथमिकता अनुदानों के परिमेय प्रभाव को सुधारने की है। ''हमें ऐसी परियोजनाएं करने की जरूरत है जो हमें अच्छा महसूस करवाने से कुछ अधिक कर सके। हमारी परियोजनाओं को जीवन परिवर्तित करना होगा। यह केवल पैसे के बारे में नहीं है। यह ज़िंदगियों के बारे में है।''

रविन्द्रन ने बताया कि श्रीलंका में टीआरएफ़ की सहायता से उनके क्लब द्वारा बनाया गया एक मातृत्व अस्पताल कैसे गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशुओं के लिए वरदान साबित हुआ।

वह तत्कालीन संस्थान प्रमुख डी के ली के श्रीलंका दौरे पर उनके साथ गए थे। जैसे ही वह नवजात आईसीयू के पास पहुंचे, उन्होंने एक छोटे से शिशु को देखा जो उनकी दोनों हथेलियों में समा सकता था, और उसके पूरे शरीर पर नलियाँ लगी हुई थी, और वह अपनी हर सांस के लिए लड़ रहा था। इस दृश्य ने स्वाभाविक रूप से उन्हें यह कहने पर विवश किया: 'लड़ो, बच्चे लड़ो।' ''वह कमजोर थी, वह बीमार थी, लेकिन उसे भुलाया नहीं गया था। उसे मरने के लिए नहीं छोड़ा गया। वह किसी की अनमोल संतान थी, और हमने उसकी देखभाल की। हमारे संगठन की शक्ति के कारण हम उसे जीने का मौका देने हेतु जो कर सकते थे हमने किया।''

और दो वर्ष बाद, जब उन्होंने दोबारा उस अस्पताल का दौरा किया, उन्हें बताया गया कि रोटरी द्वारा इसे निर्मित करने के बाद से 140,000 शिशुओं ने यहाँ पर जन्म लिया है। उनका परिचय एक युवा माता और एक बच्चे के साथ कराया गया। उन्होंने बच्चे के पास जाकर उसे उठा लिया। जब एक डॉक्टर ने उन्हें बताया कि वह वही बच्चा है जिसको लेकर वह उनकी पिछली यात्रा में चिंतित थे, ''वह मैं था जिसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। वह वही बच्चा था। मेरी बाहों में: एक छोटी बच्ची, जो रोटरी के कारण जीवित थी।''

उन्होंने अपने सम्बोधन का DGEयों से यह कहकर समापन किया जब आप अपने घर जाएंगे, ''जब आप अपने क्लब वापस जाएंगे, जब आप अगले वर्ष की अपनी योजनाएँ बनाएँगे - तो अपने संगठन को अपने दिमाग में सर्वोपरी रखें। इससे हमारी रोटरी सदस्यता को अस्तित्व मिलता है। इससे ज़िंदगियाँ परिवर्तित होती है।'' ■

RAHAT चिकित्सा शिविरों की कमलनाथ ने की भरपूर प्रशंसा

रशीदा भगत

यह खुलासा करते हुए कि कई साल पहले वह रोटरी क्लब कलकत्ता मिडटाउन के चार्टर सदस्य थे, लेकिन जब उन्होंने एक और पेशा अपनाया, ''तो मैंने अपना वर्गीकरण खो दिया और इसलिए रोटरी छोड़नी पडी थी,'' मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमल नाथ ने कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में जहां विभिन्न क्षेत्र अलग-अलग चुनौतियों से जूझ रहे हैं, वहीं अपनी विविध सदस्यता और दुनिया भर में अपनी उपस्थिति के साथ रोटरी की भूमिका महत्वपूर्ण है।

एक रोटेरियन होने के नाते, ''मैं रोटरी की विचारधारा, कार्यप्रणाली और इसके विभिन्न संस्थानों से भली भाँति परिचित हूं।'' उन्हें रोटरी द्वारा आयोजित किए जा रहे राहत चिकित्सा शिविरों का और हाल ही में ''मध्य प्रदेश के मंडला में आयोजित एक शिविर का प्रत्यक्ष अनुभव था 106,000 लोगों की सेवा। आज रोटरी में जिस तरह की नि:स्वार्थ प्रतिबद्धता नज़र आती है, इस तरह के कैंप और कौन लगा सकता है ... मैं न केवल खुश हूं बल्कि यहां आकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं।''

उन्होंने रोटरी की पहुंच और विविधता की सराहना की और समाज के सभी वर्गों से परिवर्तनों को उसी तरह अपनाने और सामंजस्य स्थापित करने को कहा जिस प्रकार रोटरी ने अपनाये हैं, उन्होंने

हमारे पास बौद्धिक सामर्थ्य और आध्यात्मिक शक्ति दोनों हैं, और फिर भी हम एक ऐसे देश हैं जहाँ रोटरी को 100,000 से अधिक लोगों की सेवा के लिए चिकित्सा शिविर आयोजित करते हैं।

रो ई अध्यक्ष मार्क मेलोनी और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री कमल नाथ PDG विवेक तन्खा को सम्मानित करते हुए, चित्र में भरत पांड्या और संस्थान के अध्यक्ष टी एन सुब्रमण्यम भी शामिल हैं।

कहा, ''मैं एक छोटे और पिछड़े जिले से हूं जहां दो रोटरी क्लब हैं। मैं उनकी मीटिंग में शामिल होता हूं पर 10 साल पहले की तुलना में अब अलग तरह के रोटेरियन नज़र आते हैं।''

इंदौर इंस्टीट्यूट - *डेयर टू ड्रीम* - की थीम को छूते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि सपने कभी स्थायी नहीं होते बल्कि बदलते रहते हैं। ''उदाहरण के लिए, आजादी के वक़्त हमारे सपने बिलकुल अलग थे, लेकिन आज आजादी के 70 साल बाद, हम एक मिश्रित राष्ट्र हैं ... विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं, रीति-रिवाजों, भोजन के साथ... ऐसी विविधता किसी अन्य देश में नहीं है फिर भी हम सभी एक झंडे के नीचे संगठित खड़े हैं; यही भारत की खूबसूरती है।''

यह देश महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर का देश है; ''हमारे पास बौद्धिक सामर्थ्य और आध्यात्मिक शक्ति दोनों हैं, और फिर भी हम एक ऐसे देश हैं जहाँ रोटरी को 100,000 से अधिक लोगों की सेवा के लिए चिकित्सा शिविर आयोजित करते हैं। यही है भारत की जटिलता।''

कमल नाथ ने कहा कि भारत में ''युवा आबादी वाले ग्रह पर सबसे बड़ा महत्वाकांक्षी समुदाय है। तेजी से बदलती और विकसित होती दुनिया के साथ, चाहे यह अमेरिका या पूर्वी और पश्चिमी यूरोप में हो, इसके नागरिकों के सपने भी बदल रहे थे; दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग लोकाचार और अलग-अलग चुनौतियां हो सकती हैं, लेकिन ''लोगों के सपनों में एक बात हमेशा समान होती है बेहतर जीवन और बेहतर दुनिया।'' यही वो जगह है जहाँ ''रोटरी को समाज के सभी वर्गों के साथ साझेदारी के सिद्धांत में एक महान भूमिका निभानी है , सेवा परियोजनाओं को करने में या प्रौद्योगिकी में हो रहे जबरदस्त परिवर्तनों को अपनाने में लोगों की सहायता करना, जो लोगों के सीखने या रोजगार के नए अवसरों को प्रभावित करता है।''

उन्होंने हॉल में पीडीजी विवेक तन्खा, और पूर्व सांसद और मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और उनके कैबिनेट के सहयोगियों का आभार प्रकट किया।

चित्र: रशीदा भगत

इंस्टिट्यूट दृढ़ इच्छा-शक्ति वाले सफल व्यक्तियों को सम्मानित करता है

जयश्री और वी मुत्तुकुमारण

बड़े सपने देखें और उन सपनों को पूरा करने का प्रयास करें और किसी भी बाधा को अपने रास्ते में परेशानी खड़ी ना करने दें, उन विजेताओं के लिए सांकेतिक शब्द थे जिन्हें इंदौर इंस्टीट्यूट में डेयर टू ड्रीम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

बैडमिंटन के लिए कृत्रिम अंगों (प्रोस्थेटिक्स) को डिजाइन करना: मानसी जोशी

पैरा-बैडमिंटन विश्व चैंपियन, मानसी जोशी इंदौर इंस्टीट्यूट से 'डेयर टू ड्रीम' एवार्ड पाने वालों में एक हैं। मानसी ने एक सड़क दुर्घटना में आठ वर्ष पहले एक पैर खो दिया था। उन्होंने हाल ही में स्विट्जरलैंड में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय पैरा-बैडमिंटन चैम्पियनशिप में गोल्ड मैडल जीता है और अब वह टोक्यो में अगस्त 2020 मे होने वाले पैरा-औलंपिक की तैयारी कर रही हैं। वह बचपन से ही स्पोर्ट में हैं। उन्होंने कहा-मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलूंगी। मैंने मुख्य रूप से अपने पुनर्वास के लिए खेलना शुरू किया, उन्होंने बताया कि सॉफ्वेयर इंजीनियर के रूप में उनकी डेस्क जॉब ने उनको गतिहीन बनाया हुआ था और खेल उन्हें चुस्त-दुरूस्त बनाए रखने के लिए एक एक्सरसाइज है।

वह दो कृत्रिम अंगों (प्रोस्थेटिक्स) का इस्तेमाल करती हैं - चलने के लिए इलेक्ट्रॉनिक पर आधारित एक टाइटेनियम माइक्रो-प्रोसेसर। यह 5 से 7 साल तक चलता है, इसकी कीमत लगभग ₹25 लाख है और इसे नियमिति रूप से चार्ज करने की आवश्यकता पड़ती है। वह खेलने के लिए कार्बन-फाइबर फुट का भी उपयोग करती हैं।

उन्होंने कहा कि - मैं चाहती हूँ कि कृत्रिम अंग बनाने वाली कंपनियां स्पोट्स के रूप में बैडमिंटन के लिए विशिष्ट कृत्रिम अंगों को डिजाइन कर सकती हैं। बहुत से कृत्रिम अंगों (प्रोस्थेटिक्स) का अविष्कार आगे जाने के मूवमेंट के लिए किया गया है जिनकी एथलेटिक्स में आवश्यकता होती है, दौड़ने या चलने के लिए। बैडमिंटन में अगल-बगल और पीछे जाने के मूवमेंट की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा - मुझे अपनी मांसपेशियों को बैडमिंटन के लिए उपयुक्त रहने वाले मूवमेंट के प्रति प्रशिक्षित करना है जो कि बैडमिंटन के लिए अनुकूल है।

मानसी ने कहा कि भारत में पैरा-स्पोर्ट्स की ओर ध्यान देना अभी बाकी है। इस तरह की उपलब्धियां को स्पोर्ट्स सेक्शन में शामिल नहीं किया जाता है,

बाएं से: केंद्रीय महिला और बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, रेस्क्यू फाउंडेशन संस्थापक त्रिवेणी आचार्य और पैरा-बैडमिंटन विश्व चैंपियन मानसी जोशी।

बल्कि इसे मिड-सेक्शन के तौर पर हाइलाइट किया जाता है और इसे मोटिवेशनल के रूप में देखा जाता है। इस रवैये को बदलने की आवश्यकता है।

रोटेरियन के प्रति उत्साहित होकर उन्होंने एक संदेश दिया, उन्होंने कहा - बैडमिंटन में एक शॉट होता है जिसे स्मैश कहते हैं। तो जो कुछ भी हमारे लिए ङ्गस्मैशफ है, उसके लिए हमें एक मजबूत डिफेंस के साथ तैयार रहना चाहिए।

दोनों हाथों से छिन्नांग इंदौर के विक्रम अग्निहोत्री ड्राइविंग लाइसेन्स हासिल करने वाले एवं भारतीय मोटर वाहन अधिनियम में संशोधन करवाने वाले बिना हाथों के पहले भारतीय है। वास्तव में, इस 48 वर्षीय प्रेरक वक्ता और एक कार रेसर की कहानी कठिनाइयों के बावजूद दृढ़ता और संकल्प के साथ डटे रहने की कहानियों में से एक है।

उनकी माँ, जो हाल ही में गुज़र गई, बचपन से ही उनके जीवन की शिल्पकार थी, विशेषकर तब से जब सात वर्ष की उम्र में उनके हाथ जल गए थे। ''उन्होंने मुझे बड़े सपने देखने और उन सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत करने और शारीरिक चुनौती को रास्ते की बाधा ना बनने देने के लिए प्रोत्साहित किया। एक विशेष स्कूल में जाने के बजाय वह एक सामान्य स्कूल में गए। मैंने शुरुआत से ही एक समावेशी शिक्षा हासिल की, एक अमेरीकी यूनिवर्सिटी से स्नातक किया, और फिर ईकनामिक्स में मास्टर्स किया। फिर 23 वर्षों के अंतराल के बाद, LLB किया।''

इतने वर्षों में, उन्होंने अपने सभी कामों - गाड़ी चलाने, लिखने, टायपिंग करने से लेकर दाढ़ी बनाने और यहाँ तक कि दांतों को ब्रश करने - के लिए अपने दाहिने पैर को प्रशिक्षित किया है। ''जो काम दूसरे अपने हाथों से करते है वह मैं अपने पैरों से करता हूँ,'' उन्होंने कहा।

अग्निहोत्री ने 2017 मालवा ऐड्वेन्चर, एक प्रतिष्ठित कार रैली में हिस्सा लिया और उसे जीता भी। ''वह मेरे लिए सोने पर सुहागा जैसा था।'' अब तक, उन्होंने चार पुरस्कार जीते है, जिसमें प्रतिष्ठित डेसर्ट स्टोर्म, पेरिस-डकार रैली का भारतीय संस्करण, शामिल है जिसमें उन्होंने पेशेवर वर्ग में अपनी कस्टम-डिज़ाइन वाली मारुति सेलेरियो चलाकर तीसरा स्थान हासिल किया था।

बड़े सपने देखने की कोई उम्र नहीं होती, ''मेरी उम्र अब लगभग 50 है और मैंने कभी सपने देखना बंद नहीं किया क्योंकि मेरा सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाकी है। ज़िंदगी बहुत अनमोल है और उसे छोटी चीजों पर बर्बाद नहीं करना चाहिए। केवल 3D - डेयर(हिम्मत), ड्रीम(सपने) और डू(कार्य) - का पालन कीजिए।''

समता स्कूल समूह के संस्थापक उत्तम संजेल ने उन चुनौतियों एवं कठिनाइयों को याद किया जिसका सामना उन्होंने 2001 में नेपाल में सुविधाओं से वंचित विद्यार्थियों को शिक्षित करने हेतु स्थापित किए जा रहे पहले 'बंबू स्कूल' के दौरान किया था। उस समय, उनके पास ना पैसा था और ना ही एक स्कूल चलाने के लिए एक शिक्षाविद का अनुभव। लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों से बातचीत करने के दौरान, उन्होंने जाना कि ''उन बच्चों को अच्छी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाकर ही उन्हें सशक्त बनाया जा सकता है।''

अब, नेपाल के मंडलों में उनके 80 समता स्कूल चल रहे है जो एक बच्चे से मात्र ₹100 लेते है और उन्होंने अपनी शाखाओं को भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका और म्यांमार में भी विस्तारित किया है। समता अस्पताल गरीबों को मुफ्त इलाज प्रदान करता है।

अगले 3-5 वर्षों में, संजेल को विश्वास है कि रोटरी में उनके शुभचिंतकों एवं मित्रों की मदद से वह 50 देशों में स्कूल खोल पाएंगे। ''यदि हम आतंकवाद एवं समाज की सभी बुराइयों को खत्म करना चाहते है, तो हमें अपने बच्चों की शिक्षा में निवेश करना होगा,'' उन्होंने कहा और इंस्टीट्यूट में बड़ी संख्या में एकत्रित हुये रोटरी नेतृत्वकर्ताओं से SAARK क्षेत्र में एक शांतिप्रद, बेहतर दुनिया का सूत्रपात करने हेतु उनकी अकादमिक पहल को समर्थन देने का आग्रह किया।

त्रिवेणी आचार्य ने अपने स्वर्गवासी पति बालकृष्ण आचार्य के साथ सह-स्थापित किए गए रेसक्यू फ़ाउंडेशन के माध्यम से देश के विभिन्न कोनों में देह व्यापार में फंसी 5,000 से अधिक लड़कियों को मुक्त कराया। इस सबकी शुरुआत तब हुई जब मुंबई के कामथीपुरा के एक कोठे के बाहर बैठी लड़की से उनकी संयोगवश मुलाक़ात हुई जहाँ त्रिवेणी, एक खोजी पत्रकार के रूप में, एक कार्य हेतु गई थी। लड़की ने बताया कि उसे नेपाल से लाया गया और जबर्दस्ती वैश्यावृत्ती में धकेल दिया गया। ''उस रात में बुरी तरह व्यथित हो गई और मैंने अपने पति से बात की कि हमें इन बच्चों को बचाने के लिए कुछ करना चाहिए।'' पुलिस की मदद से युगल ने उस नेपाली लड़की के साथ-साथ कोठे से अन्य लड़कियों को भी मुक्त कराया। ''सभी की एक कहानी थी। किसी का अपहरण किया गया था; कुछ अत्यंत गरीबी में जी रही थी और उन्हें एक अच्छी नौकरी और एक बेहतर ज़िंदगी का प्रलोभन दिया गया था।''

युगल को एहसास हुआ कि अनाथों, अपंग व्यक्तियों और वृद्धजनों के कल्याण के लिए काम करने वाले संगठन है, परंतु इन युवतियों की मदद करने के लिए बमुश्किल ही कोई संगठन है। ''हम

विवेक अग्निहोत्री को उनके पिता की उपस्थिति में RID भारत पांड्या (दाएं) और TRF ट्रस्टी सिजी किता (बाएं) द्वारा सम्मानित किया गया।

जानते थे कि हमें इसके बारे में कुछ करना होगा, और इस तरह 1996 में रेसक्यू फ़ाउंडेशन की शुरुआत हुई,'' उन्होंने कहा। स्वास्थ्य शिविरों, परामर्शों, पोषण एवं कानूनी सहायता के माध्यम से यह आश्रयस्थल मुक्त कराई गई लड़कियों की मदद करता है।

जब तक वैश्यावृत्ती की मांग रहेगी, देह व्यापार चलता रहेगा, त्रिवेणी ने कहा। ''यह ड्रग्स की तरह है। चाहे वह कितना भी महंगा या खतरनाक क्यों ना हो, आदी व्यक्ति उसे हासिल करने के लिए सब कुछ करता है। उसी तरह वैश्यावृत्ती भी है। यही कारण है कि हम ग्राहकों को प्रतिबंधित करने और उन पर मुकदमा चलाने के लिए सरकार के साथ काम कर रहे है, ताकि ऐसे इलाकों में प्रवेश करने से लोग डरें।'

देश में गैर-संचारी बीमारियों के खिलाफ एक संयुक्त लड़ाई का आह्वान करते हुये, अपोलो अस्पतालों की उपाध्यक्ष डॉक्टर प्रीथा रेड्डी ने कहा, ''हमारे सामने बड़ी समस्या है और जब तक हम जीवनशैली में व्यापक बदलाव नहीं लाएँगे, तब तक हम सभी लोगों के लिए बेहतर स्वास्थ्यलाभ सुनिश्चित नहीं कर सकते।''

आज अस्पताल में बिस्तरों की भारी कमी है, ''तो हमें लोगों को अस्पतालों से दूर रखने के लिए एक साथ मिलकर काम करना होगा। रोटेरियन होने के नाते, आप सभी समाज में अच्छा प्रभाव डालते है और हमारी ज़िम्मेदारी लोगों को स्वस्थ रखने की भी है। रोटरी गवर्नरों के पास एक अच्छा पारितंत्र है जिसे वे स्वस्थ रहने की आवश्यकता पर लोगों को समझाने हेतु अच्छी तरह उपयोग कर सकते है।''

हमारे पूर्वजों ने प्राकृतिक तंदरुस्ती के साथ जीवन यापन किया, ''लेकिन कहीं ना कहीं आगामी पीढ़ियों ने, स्वस्थ जीवनशैली के उस प्राचीन तंत्र से संबंध को खो दिया। उन्होंने रोटेरियनों से अग्रसक्रिय रहने और समुदायों में स्वस्थ रहने के बारे में संचार माध्यमों को विकसित करने और उन्हें दूर तक ले जाने का आग्रह किया।''

RID पांड्या की उपस्थिति में TRF ट्रस्टी जेनिफर जोन्स ने उत्तम संजल को पुरस्कार प्रदान किया।

चित्र: वी मुतुकुमारण

हार्ट अटैक पीड़ितों को बचाने के सरल उपाय

वी मुत्तुकुमारण

स्कूल लों और संस्थानों में बेसिक लाइफ सपोट (बीएलएस) पाठ्यक्रमों को पढ़ाया जाना चाहिए ताकि कार्डियक अरेस्ट और जीवन-घातक बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों को चिकित्सीय उपचार हेतु अस्पताल ले जाने के पहले आपातकाल सहायता प्रदान की जा सके, इंदौर के अपोलो अस्पताल की इंटरवेंशन कार्डियोलॉजिस्ट, डॉ सरिता राव ने कहा।

उदाहरण के लिए, उचित समय, गोल्डन ऑवर के भीतर कार्डियोपल्मोनरी रिससिटैशन (CPR) कार्डियक अरेस्ट से जूझ रहे मरीज के बचने की सम्भावना को 60 प्रतिशत कर देता है, लेकिन CPR के बिना यह प्रतिशत घट कर केवल 5 प्रतिशत ही रह जाता है और पीड़ित की मौत 10 मिनट के अंदर ही हो सकती है, इंदौर इंस्टिट्यूट के DRCAB प्रदर्शन में उन्होंने कहा।

सीधे शब्दों में, DRCAB - डेंजर (खतरा), रिस्पांस (प्रतिक्रिया), चेस्ट कम्प्रेशन (छाती संपीड़न), एयरवे (वायुमार्ग) और ब्रीदिंग (श्वसन) - मरीज की छाती और मुँह पर पांच सरल चरणों की एक आपातकालीन प्रक्रिया होती है जिसके अंतर्गत सबसे पहले उसे खतरे के स्थान से हटाना और शरीर को समतल, सपाट सतह पर रखना होता है। कार्डियक अरेस्ट के पीड़ितों को आपातकालीन सहायता देने के लिए यह क्रमशः मार्गदर्शिका अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन द्वारा तैयार की गई थी और जब तक मरीज को अस्पताल ले जाने के लिए एम्बुलेंस नहीं आ जाती तब तक उसे जीवित रखने और सांस लेते रहने के लिए यह हस्तक्षेप का प्रभावी तरीका है। ''सपाट सतह पर शरीर को लिटाने के बाद, किसी भी तरह की प्रतिक्रिया की जाँच करें, जैसे कि स्पंदन दर और छाती की हरकत देखें और उसके सांस लेने के पैटर्न पर ध्यान दें, यदि संभव हो तो, उसके मुँह के पास जाकर,'' डॉ सरिता ने समझाया।

फिर छाती के बीचोबीच हथेली रखकर उसे ज़ोर से दबाने का प्रयास करें। ''छाती को दबाने की गति एक मिनट में कम से कम 100-120 बार होनी चाहिए और CPR बिंदु छाती के निपल से दो समान दूरी पर होनी चाहिए।'' सुनिश्चित करें कि अपनी हथेलियों से बार-बार स्पंदन करके छाती की कम से कम एक तिहाई दीवार दबाई जा सके।

मरीज के मुँह में कुछ भी ना डालें, इसके बजाए यदि संभव हो तो मुँह-से-मुँह लगाकर सांस दें ताकि मरीज प्राकृतिक रूप से सांस ले सकें, डॉ. सरिता ने कहा। सर और ठुड्डी को हल्का सा झुकाकर मरीज के वायुमार्ग को खुला रखने का प्रयास करें। सांस लौटाने के लिए छाती के स्पंदन को तेज गति से तब तक दोहराते रहे जब तक मरीज को बचाने के लिए एम्बुलेंस नहीं आ जाती। ■

डॉ सरिता राव CPR सहायता पर एक सत्र लेते हुए।

अपने 75वें स्थापना दिवस पर रोटरी क्लब नागपुर मानसिक रूप से अशक्त बच्चों के लिए बना सांता

रशीदा भगत

13 दिसंबर को अपने 75 वर्ष पूर्ण कर चुके रोटरी क्लब नागपुर के प्लैटिनम जयंती समारोहों का एक मुख्य आकर्षण था मातृ सेवा संघ, मानसिक रूप से अशक्त बच्चों का एक स्कूल जिसके साथ क्लब पिछले कुछ वर्षों से काम कर रहा है, के 55 सहवासियों से पूछना कि उन्हें इस वर्ष क्रिसमस के लिए क्या चाहिए।

अपनी इच्छाओं के साथ बच्चे जल्दी से *विशिंग ट्री* नामक इस पहल, जिसे क्लब तीन वर्षों से कर रहा है, के लिए आगे आए और उन इच्छाओं को क्लब के व्हाट्सएप ग्रुप पर डाल दिया जिसमें कुछ 150 मेम्बर है (क्लब में कुल 250 सदस्य है)। ''यह हमारे लिए एक आश्चर्य की बात थी कि दो घंटों के अंदर, सदस्य इन बच्चों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए आगे आए,'' क्लब सचिव नमिता शर्मा आगे यह कहते हुये कहती है, ''और बहुत से सदस्य जो सांता

दाएं: रोटरी क्लब नागपुर को 75 साल की सदस्यता के लिए मान्यता दी गयी। क्लब के अध्यक्ष पराग परांजपे ने सचिव नमिता शर्मा के साथ DG राजेंद्र भामरे से प्रमाणन प्राप्त किया।

नीचे: (बाएं से) AG अरुण मित्तल, DG राजेंद्र भामरे और रोटरी क्लब नागपुर के अध्यक्ष पराग परांजपे ने मातृ सेवा संघ में विशेष रूप से विकलांग बच्चों को उपहार वितरित किए।

क्लॉज़ बनना चाहते थे इस बात को लेकर दुखी थे कि वे एक भी इच्छा पूरी ना कर सके।''

बच्चों को सुंदर रूप से तैयार किए गए पत्तों पर अपनी इच्छाएँ लिखने के लिए कहा गया, जिन्हें फिर पेड़ के एक कट-आउट पर लगाया गया। उनकी बहुत छोटी-छोटी इच्छाएँ थी; उनमें सबसे ऊपर थी *छोटा भीम* रंग पुस्तक जिसे तीन बच्चे चाहते थे। रोटेरियनों के लिए इसे प्रायोजित करना बहुत आसान था क्योंकि हर एक किताब की कीमत लगभग ₹45 थी! जहां एक किशोरी मेक-अप किट चाहती थी, वहीं दूसरी लड़की को गुलाबी फ्रॉक चाहिए थी। बैटरी से चलने वाली कार, घड़ियाँ, एक कैरम बोर्ड, इत्यादि अन्य दूसरे अभिलषित उपहार थे। सभी बच्चों को ये उपहार सांता क्लॉज़ की तरह तैयार हुये रोटेरियनों द्वारा दिये जा रहे है। डीजी राजेंद्र भामरे ने भी कुछ उपहार दिये।

उन्होंने समझाया कि इस सेवा संघ के साथ रोटरी क्लब नागपुर का संबंध कई वर्ष पुराना है। उदाहरण के लिए, कुछ वर्ष पूर्व, जगह का दौरा करते समय क्लब सदस्यों ने देखा कि ''कुछ बच्चे अपने चारों हाथ-पैरों पर चल रहे थे, और चूंकि फर्श बहुत खुरदुरा और कई जगहों से टूटा था, उनके घावों से खून बह रहा था।'' क्लब ने कांक्रीट की टाइलों के साथ फर्श को समतल एवं चिकना करने की परियोजना की और किनारों पर पकड़ने के लिए रेलिंग लगाई ताकि पीड़ित बच्चे थोड़ी गरिमा के साथ वहाँ चल सके।

क्लब द्वारा दिसंबर में हासिल की गई एक अन्य उपलब्धि में उसने 17 रोटरेक्ट क्लबों का प्रयोजन और उनकी शुरुआत की, जिनमें एक सामुदायिक क्लब भी शामिल था। क्लब अध्यक्ष पराग परांजपे ने कहा कि उनके ''क्लब के सदस्य इंटरेक्टरों एवं रोटरेकटरों के एक उत्साही समूह से मिलकर बहुत प्रसन्न हुये। यह सुनकर हमारे दिल को सुकून मिला कि उन युवाओं का सामुदायिक सेवा के प्रति इतना झुकाव है। चिकित्सीय शिविरों का आयोजन, अपनी नौकरानियों को शिक्षित

उनकी बहुत छोटी-छोटी इच्छाएँ थी; उनमें सबसे ऊपर थी *छोटा भीम* रंग पुस्तक जिसे तीन बच्चे चाहते थे। रोटेरियनों के लिए इसे प्रायोजित करना बहुत आसान था।

करना, वृद्धाश्रमों का दौरा करना और शहर में स्वच्छता मुहिम चलना कुछ ऐसी परियोजनाएं है जिनमें वे सक्रिय रूप से भाग ले रहे है।''

रोटरेकटरों द्वारा की जा रही एक परियोजना है केवलरमानी गर्ल्स कॉलेज को एक कम्प्यूटर लैब प्रदान करना, जिसमें लगभग 3,000 छात्राएँ है और उनमें से अधिकतर गरीब पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंध रखती है। कॉलेज में कोई कम्प्यूटर लैब नहीं थी। समय की जरूरत को समझते हुये, टीम रोटरेक्ट ने कम्प्यूटर लैब स्थापित करने के साथ-साथ अपने खाली समय में छात्राओं को कम्प्यूटर सिखाने का भी निश्चय किया।'' डीजी भामरे द्वारा इस सुविधा में फोर वे टेस्ट बोर्ड और कम्प्यूटर लैब का उदघाटन किया गया।

क्लब सदस्यों के दिल के करीब रहने वाली एक परियोजना अंतर भारती स्कूल, 1-6 वर्ष के बच्चों के लिए एक स्थानीय डे केयर केंद्र, में ऐसे 108 बच्चों को पौष्टिक आहार प्रदान कर रही है जो नजदीकी झुग्गियों में रहते है। ''हमनें एक साल तक इस स्कूल के बच्चों को

समय की जरूरत को समझते हुये, टीम रोटरेक्ट ने कम्प्यूटर लैब स्थापित करने के साथ-साथ अपने खाली समय में छात्राओं को कम्प्यूटर सिखाने का भी निश्चय किया।

हेमलकासा सर्जिकल शिविर, जो 33 वर्षों से चल रहा है, और जिसमें आदिवासियों की 5,000 से अधिक बड़ी सर्जरियाँ की गई है। जिससे आठ गांवों में रहने वाली 5,500 ग्रामीण एवं 10,000 पशु लाभान्वित हुये है।

दूध एवं दिन में एक बार पौष्टिक आहार देने का वादा किया है, और हम चार वर्षों से सफलतापूर्वक ऐसा कर रहे है,'' नमिता ने कहा। इतने वर्षों में क्लब ने स्कूल के रसोईघर का नवीकरण कर दिया है, एक एलपीजी कनैक्शन, एक चूल्हा, बर्तन प्रदान किए है और इस वर्ष उन्होंने एक वॉटर फ़िल्टर दिया है। कार्यक्रम सदस्यों के दान से चलाया जाता है, जिसमें 8,000 का दान से पूरे महीने खाने का ध्यान रखा जाता है। ''हमारे क्लब के पोषण-विज्ञानियों ने एक आहार योजना बनाने में उनकी मदद की है जो बढ़ती उम्र के बच्चों के लिए उपयुक्त है,'' उन्होंने आगे कहा।

क्लब की एक अन्य परियोजना माइक्रो क्रेडिट है और अपने 75वें स्थापना दिवस को चिन्हित करने के लिए, क्लब ने छोटे उद्यम शुरू करने के लिए दो झुग्गियों की 10 महिलाओं में से प्रत्येक को ₹10,000 का ऋण वितरित किया। इस वर्ष, इस योजना के माध्यम से 41 महिलाओं की मदद की गई है।

दिन की शुरुआत डीजी की अध्यक्षता वाली एक सभा के साथ हुई और वहाँ क्लब के इतिहास को संक्षेप में बताया गया और पूर्व अध्यक्षों का धन्यवाद किया गया जिन्होंने रोटरी क्लब नागपुर को एक जीवंत क्लब बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है।

पिछले कुछ वर्षों में क्लब द्वारा की गई कुछ प्रतिष्ठित परियोजनाओं को फिर से याद किया गया। उनमें से एक परियोजना है *हेमलकासा* सर्जिकल शिविर, जो 33 वर्षों से चल रहा है, और जिसमें आदिवासियों की 5,000 से अधिक बड़ी सर्जरियाँ की गई है। क्लब 19 वर्षों से नागपुर के विभिन्न जल निकायों का संरक्षण कर रहा है, और एक जलविभाजन कार्यक्रम, जो दो वर्षों से चल रहा है, ने 700 एकड़ भूमि को सिंचित किया है जिससे आठ गांवों में रहने वाली 5,500 ग्रामीण एवं 10,000 पशु लाभान्वित हुये है। इस क्लब की एक विशेष परियोजना है उड़ान; पिछले नौ वैलन्टाइन दिवसों से, क्लब 8,000 विकलांग बच्चों को एक विशेष दावत दे रहा है।

क्लब के उनतीस पूर्व अध्यक्षों को सम्मानित किया गया।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब मद्रास चेन्नई में

झीलों को पुनर्जीवित करता है

रशीदा भगत

जलकुंभी से भरा पुदुचेरी झील।

जब RIPN शेखर मेहता को ताम्बरम चेन्नई में लगभग 30 एकड़ में फैली पुदुथंगल झील दिखाने ले जाया गया, जिसे रोटरी क्लब मद्रास, रो ई मंडल 3232, द्वारा एक कॉर्पोरेट के साथ साझेदारी में पुनर्जीवित किया गया था, और उन्होंने उसे पानी से भरे देखा और एक स्थानीय लाभार्थी की उत्साही प्रतिक्रिया सुनी कि इस परियोजना की वजह से ''हमारे सभी कुएं भरे हुए है,'' तो उन्होंने क्लब से 100 झीलों को पुनर्जीवित करने का आग्रह किया!

''जब उन्होंने ऐसा कहा, तो मेरी तत्काल प्रतिक्रिया थी ठीक है, हम करेंगे,'' क्लब के पूर्व अध्यक्ष पी एन मोहन मुस्कराते है, जिन्होंने 2017 में क्लब का अध्यक्ष रहते हुए झील को पुनर्जीवित करने की परियोजना की शुरूआत की थी।

और उसी शाम, जब उनके क्लब, एक विशिष्ट क्लब जिसने पिछले वर्ष ही उसके 90 वर्ष पूर्ण किए थे, ने अन्य क्लबों के साथ मिलकर मेहता के लिए एक स्वागत समारोह का आयोजन किया, तो मोहन ने अन्य क्लब के सदस्यों से कहा कि अगर इस आंकड़े तक पहुँचना है तो उन्हें उनकी सहायता की आवश्यकता होगी। लेकिन उन्होंने हिदायत दी कि यह बहुत अच्छा होगा यदि रोटेरियन झीलों की संख्या पर ध्यान देने के बजाए कवर किए गए क्षेत्रफल पर ध्यान दें। ''उदाहरण के लिए, अगली झील जिसे रोटरी क्लब मद्रास पुनर्जीवित करने जा रहा है बहुत बड़ी है, और 250 एकड़ के क्षेत्रफल को कवर करती है,'' वह कहते है।

इस सबकी शुरूआत 2017 में तब हुई जब चेन्नई पानी की विकट कमी से जूझ रहा था और क्लब ने पहली झील, शोलिनगनाल्लुर के पास स्थित 10 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैली पुडुचेरी केनी झील, के साथ शुरुआत करते हुये जल निकायों को पुनर्जीवित करने का निश्चय किया। ''यह झील जलकुम्भी की परत के नीचे गुम हो गई थी जिसके परिणामस्वरुप झील में असंसाधित गन्दा पानी छोड़ा जाने लगा था,'' मोहन याद करते है।

इस दौरान, वह केयर अर्थ ट्रस्ट छत्रज्ञ की जयश्री वेंकटेसन से मिले, जिनके पास झीलों को पुनर्जीवित करने का व्यापक अनुभव था। क्लब ने उनसे मदद ली, और झील से जलकुम्भी हटाने के साथ ही झील को पुनर्जीवित करने का काम शुरू हुआ, जिसके बाद उसका तलकर्षण किया गया और गाद भी निकाली गई। झील से जलकुम्भी को हटाने में लगभग पांच माह का समय लगा। एक जब निकर्षण का कार्य पूर्ण हो गया, तो जैवोपचारण का कार्य शुरू हुआ। इसके लिए ताड़ के गुड़ के साथ मिले हुए एक

पुनर्जीविन के बाद पुदुचेर झील।

प्रक्रिया में पुदुथंगल झील का पुनर्जीवन।

हमारे क्लब में हमारे पास हमेशा पूर्व, वर्तमान और आगामी नेतृत्वकर्ताओं की सर्वसम्मति होती है, जिसके बिना कोई भी परियोजना करने का कोई मतलब नहीं होता।

किण्वक घोल का इस्तेमाल किया गया। उस झील को आठ भागों में बांटा गया और प्रत्येक भाग पर उस घोल का झिड़काव किया गया; इस झिड़काव से जलकुम्भी की वापसी को रोकने में मदद मिली, वह समझाते है।

एक बार इस प्रक्रिया के समाप्त हो जाने पर, झील से पानी के नमूने लिए गए और उनका परीक्षण किया गया। यह पाया गया कि पानी की गुणवत्ता में वास्तव में सुधार हुआ है। ''धीरे-धीरे पक्षियों का झील पर आना शुरू हो गया। सबसे पहले, जलसिंह आए, उसके बाद सफ़ेद स्तनों वाले जल मुर्गाबी, बैंगनी दलदली मुर्गी, मरुल, छोटे बगुले, ताल वक, सुर्खिया बगुले, वंजुलक, चितकबरी रामचिरैया जैसे और भी बहुत सारे पक्षी आए। यह झील अब स्वच्छ जल से भरी हुई है और झील के आसपास रहने वाले करीब 7,000 लोगों की पीने और अन्य जल संबन्धित जरूरतों को पूरा कर रही है।''

यह झील जलकुम्भी की परत के नीचे गुम हो गई थी जिसके परिणामस्वरुप झील में असंसाधित गन्दा पानी छोड़ा जाने लगा था

उस NGO को नियुक्त करने और कार्य को पूर्ण करने की लागत 15 लाख थी; मैं ''चेन्नई के औद्योगिक घराने राणे से मदद मांगने हेतु निकल पड़ा और उनसे राशि प्राप्त की,'' मोहन कहते है।

पुडुचेरी झील का कार्य पूर्ण हो जाने के बाद, क्लब ने अगस्त 2019 में अन्य परियोजना शुरू की - ताम्बरम चेन्नई में 30 एकड़ के क्षेत्रफल वाली पुदुथंगल झील को पुनर्जीवित करके उसे नवीनीकृत करने की। पुनर्जीवन का कार्य अगस्त 2019 में शुरू हुआ था, और इसके जनवरी अंत तक पूरा होने की उम्मीद है। इससे करीब 50,000 लोग लाभान्वित होंगे। ''हम RIPN मेहता को यहाँ लाए और वह बहुत खुश थे कि यहाँ स्वच्छ जल है और स्थानीय समुदाय रोटरी के लिए बहुत आभारी है।'' उनके कुएँ भरे हुए है, उनमें पीने का पर्याप्त पानी है और चूंकि यह वर्षा-पोषित झील है, तो रोटेरियनों ने आसपास के उच्च इलाकों से इसमें पानी लाने के लिए इनलेट पाइप लगाए है।

झील के रखरखाव के बारे में, वह कहते है, ''किसी को भी झील में कचरा डालने या गंदे पानी का रिसाव करने से रोकने के लिए हमने मासिक वेतन पर एक व्यक्ति को रखा है।'' समुदाय ने एक संघ बनाया है, और क्लब के साथ झील का रखरखाव करने, और उस जगह को स्वच्छ रखने हेतु एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया है। मोहन समझाते है कि झीलों को दो चरणों में पुनर्जीवित किया जाता है; सर्वप्रथम पुनर्जीवित करने के लिए तत्काल आंकलन आवश्यक होता है, इसके बाद वास्तविक पुनर्जीवन का कार्य किया जाता है।

इस झील को पुनर्जीवित करने की लागत करीब ₹45 लाख आई, और इस बार सन फाउंडेशन पैसों की मदद लेकर आगे आया। ''मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह हमारे कॉर्पोरेट साझेदारों का उदार समर्थन ही है जिसकी वजह से ऐसी परियोजनाएं करना संभव हो पाया, मोहन आगे कहते है।''

पूर्व, नवनिर्वाचित और आगामी क्लब अध्यक्षों की वजह से, परियोजना की निरंतरता सुनिश्चित की जाती है। ''हमारे क्लब में हमारे पास हमेशा पूर्व, वर्तमान और आगामी नेतृत्वकर्ताओं की सर्वसम्मति होती है, जिसके बिना कोई भी परियोजना करने का कोई मतलब नहीं होता,'' वह कहते है।

अब एक तीसरी झील की पहचान की गई है - चेन्नई की मदमबक्कम झील जो 250 एकड़ के एक विशाल क्षेत्रफल को कवर करती है। परियोजना की लागत 1.5 करोड़ है और इसे वैश्विक अनुदान के माध्यम से पूरा किया जाएगा, जिसके लिए एक आवेदन पहले से ही प्रक्रियाधीन है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

स्वच्छता को बढ़ावा देने हेतु सुरक्षात्मक कपड़े

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब पणजी रिवेरा, रो ई मंडल 3170, ने पणजी सिटी के नगर निगम के 100 कचरा संग्रहकर्ताओं को जैकेट और दस्ताने वितरित किए। ये आउटफिट्स उन्हें सुरक्षा प्रदान करने और साफ रखने हेतु हैं, क्योंकि वे शहर भर में स्वच्छता बनाए रखने का काम करते हैं।

एक अन्य पहल में, रोटेरियन ने शहर के मछली बाजार में 50 मछली काटने वालों को एप्रन प्रदान किए। क्लब के अध्यक्ष योगीश कुलकर्णी ने कहा कि, ''वे अपने कपड़ों पर पड़े दागों के कारण गंदे दिखते हैं। हमने उन्हें एक साफ-सुथरा कपड़ा देने का फैसला किया, जो उन्हें एक पेशेवर रूप देगा और उनकी स्वच्छता में सुधार करेगा।''

चमकदार पीले जैकेट और एप्रन पीछे की तरफ रोटरी के प्रतीक चिन्ह को दर्शाता है जो रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने में मदद करेगा।■

रोटरी क्लब पणजी रिवेरा के अध्यक्ष योगिश कुलकर्णी लाभार्थीयों के साथ।

मनसा में प्रोजेक्ट पॉज़िटिव हेल्थ शिविर

प्रगति में एक चिकित्सा शिविर।

मनसा रॉयल के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3090 ने नए साल की शुरुआत रोटरी के *प्रोजेक्ट पॉज़िटिव हेल्थ - स्टॉप एनसीडी* के तहत एक मेडिकल कैंप के साथ की। मेडिकल कैंप के उद्घाटन के अवसर पर, डीजी राजीव गर्ग ने रोटरी के अभियान - *एक चम्मच कम, चार कदम आगे*, का प्रचार किया, जिसमें लोगों को कम नमक, चीनी और तेल का सेवन करने और बेहतर स्वास्थ्य हेतु व्यायाम करने का का आग्रह किया।

क्लब के अध्यक्ष अमित गोयल ने कहा कि, मनसा और आसपास के गांवों के लगभग 200 लोगों ने शिविर के लिए पंजीकरण किया। मैक्स अस्पताल, बठिंडा से वरिष्ठ चिकित्सा और पैरामेडिकल संकाय ने रक्त शर्करा, न्यूरोपैथी और थायरॉयड के रोगियों की जांच की। क्लब को परियोजना की लागत ₹40,000 थी, जबकि अस्पताल और मेडिलॉर्ड फार्मास्यूटिकल्स ने दवा की आपूर्ति और चिकित्सा टीम का खर्च वहन किया। उन्नत उपचार की आवश्यकता वाले मरीजों को अस्पताल में भेजा गया।

पीडीजी प्रेम अग्रवाल ने कहा कि क्लब पिछले दो दशकों में बड़े पैमाने पर कॉलेज के छात्रों और युवाओं के साथ मिलकर चिकित्सा और रक्तदान शिविरों का आयोजन कर रहा है। ■

रोई मंडल 3211 में डायलिसिस केंद्र स्थापित करने के लिए रोटरी क्लबों ने की साझेदारी

वी मुत्तुकुमारण

तिरुवनंतपुरम में अपनी तरह की पहली पहल में, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल, ने उसके साझेदार रोटरी क्लब कज्हाकुत्तोम, रो ई मंडल 3211, के साथ मिलकर क्रोनिक किडनी डिज़ीज़ (CKD) के मरीजों के लिए 25 लाख की लागत से, श्री रामकृष्ण आश्रम चैरिटेबल अस्पताल में चार डायलिसिस मशीनें स्थापित की।

यह केंद्र इस बात का अच्छा उदाहरण है कि कैसे "अभिलाषा कल्पित चिंतन जरूरतमंदों के लिए एक उपयोगी स्वास्थ्य सेवा परियोजना में परिवर्तित हो सकती है यदि क्लब के सदस्य साधन संपन्न और मेहनती हो," पीडीजी सुरेश मैथ्यू, रोई मंडल 3211, ने कहा। बड़ी परियोजनाओं के निष्पादन के लिए आपको बड़ी राशी की जरूरत नहीं है, बल्कि विचारों को कार्यान्वित करने के लिए बड़े सपने देखना और पर्याप्त संसाधनों का होना आवश्यक है, उन्होंने कहा।

शुरुआत में, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल, कार्यान्वयन क्लब, और रोटरी क्लब कल्लाकुत्तोम, साझेदार क्लब, में से प्रत्येक ने एक डायलिसिस मशीन का योगदान दिया था और हम तीन और मशीनों को प्राप्त करने हेतु एक वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करने की योजना बना रहे थे, जब प्रमुख दानकर्ता के. जनार्दनन नायर और डॉ एस वी लक्ष्मी एक और डायलिसिस इकाई को प्रायोजित करने हेतु आगे आए, वी बालगोपाल नायर, अध्यक्ष, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल ने कहा।

इस रोटरी दंपति ने डॉ. कोचु केसवन नायर की विरासत हासिल की है, जो एक स्त्री रोग विशेषज्ञ और जनार्दनन नायर के पिता थे, उन्होंने 1939 में रामकृष्ण अस्पताल शुरू किया और 1996 में अपनी मृत्यु होने तक वह चिकित्सा पद्धति का अभ्यास करते रहे। जे. नायर की दो बहनें - श्यामला देवी और राधा देवी - भी चौथी मशीन (प्रत्येक की लागत ₹6.45 लाख है) को प्रायोजित करके मदद हेतु आगे आई।

मैथ्यू ने कहा कि दोनों क्लब अब इस तालमेल का उपयोग अन्य वृहद परियोजनाओं के लिए कर रहे है, जिसमें अधिक मशीनों के साथ एक डायलिसिस केंद्र भी शामिल है, जिसके लिए ज़मीन की पहचान की जा चुकी है। जरूरतमंद मरीज़ों को देने के लिए रोटरी को सालभर में कम से कम 1,200 सब्सिडी वाले कूपन प्रदान करने हेतु अस्पताल के साथ एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया। सामान्य श्रेणी में ₹1600-2000 की लागत के विपरीत, सब्सिडी योजना के तहत रोटरी केंद्र लगभग ₹400-500 शुल्क लेगा।

"हमने अगस्त 2019 में परियोजना पर चर्चा शुरू की थी, सितंबर में समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया और तीन माह के अंदर इस सुविधा का उद्घाटन किया," बालगोपाल ने कहा। एक हफ्ते में तीन बार एक नेफ्रोलॉजिस्ट केंद्र का दौरा करेंगे।

पीडीजी मैथ्यू खुश है कि क्लबों ने वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन नहीं किया क्योंकि "परियोजनाओं को लागू करने में 18-24 माह लग जाते है। क्लब के अध्यक्ष उनके कार्यकाल के दौरान उनकी मनपसंद परियोजनाओं को लागू होते देखना चाहते है।" एक निश्चित समय सीमा के भीतर एक सीमित-स्तर वाली परियोजना की

मेजर डोनर कोचू जनार्दन नायर और पीडीजी सुरेश मैथ्यू के साथ रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल के सचिव बी एस वेणुगोपाल, कोषाध्यक्ष जी एन नायर, रोटरी क्लब कल्लाकुत्तोम के अध्यक्ष श्याम स्टाररी परेरा और AG टिम्मी एंटनी परेरा।

योजना बना रहे क्लबों के लिए वैश्विक अनुदान सही विकल्प नहीं है।

मैथ्यू ने याद किया कि कैसे अपने गवर्नर के कार्यकाल (2017-18) के दौरान, जी एन नायर, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल के कोषाध्यक्ष, ने सरकारी मेडिकल कॉलेज में रोटरी मेमोग्राम सेंटर की परिकल्पना की थी। ''उन्होंने राज्य के वित्त मंत्री डॉ थॉमस इसाक से बात की जिन्होंने एक मेमोग्राम सुविधा स्थापित करने के लिए KSFE, एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम, से उसकी CSR पहल के अंतर्गत 25 लाख मंजूर करवाने के लिए पूरी कोशिश की।'' इस CSR साझेदारी ने क्लबों को बड़ी परियोजनाएं करने के बारे में सोचने हेतु मजबूर किया।

आगामी वर्षों में, रोटरी क्लब कल्लाकुत्तोम एक स्वचलित डायलिसिस केंद्र की शुरुआत करेगा ''जिसके लिए हमने एक अंतर्राष्ट्रीय साझेदार ढूँढ लिया है और इस वृहद परियोजना हेतु हम वैश्विक अनुदान के लिए आवेदन करेंगे,'' क्लब के अध्यक्ष श्याम स्टारी परेरा ने कहा। इस मेगा डायलिसिस केंद्र के लिए डीजी शिरीष केसवान ने 10,000 डॉलर का डीडीएफ अलग रखने की मंजूरी दी।

PDG सुरेश मैथ्यू, रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल के अध्यक्ष वी बालागोपाल नायर, DG शिरीष केशवन,परेरा और उनके बाएं सहयोगी गवर्नर रेनॉल्ड गोमेज़ के साथ डायलिसिस की मरीज सुगंधी और उसका परिवार।

प्रसन्न चेहरे

बाधाओं और सीमित धनराशी के बावजूद, सुगंधी (31), एक CKD मरीज, को सरकारी मेडिकल कॉलेज के नि:शुल्क और एक निजी मेडिकल कॉलेज, जहाँ पर बैठने के लिए उन्हें ₹1,800 शुल्क देना पड़ता था, के साप्ताहिक सत्रों के लिए शहर के उपनगर, नेदुमंगद में उनके घर से 30 किमी दूर यात्रा करनी पड़ती है। अपने चेहरे पर एक मुस्कराहट के साथ, उनके पति कन्नन ने कहा, ''हम रामकृष्ण अस्पताल में सब्सिडी वाली सेवा का लाभ उठाने के लिए उत्सुक है जो हमारे घर के करीब है।'' मोहम्मद नवाज़ को राहत महसूस हुई कि वह अपनी बीमार बहन रफ़खान बीवी (52) को एक ऐसे अस्पताल में ले जा सकता है जहाँ वे कई बार OPD सेवाओं का लाभ लेने के लिए गए थे।

जहाँ रामकृष्ण मिशन ने रोटरी सेंटर के लिए ₹15 लाख खर्च किये, वहीं इन दो क्लबों ने ₹25 लाख से अधिक राशी इकट्ठा की।

बिगड़ता हुआ परिदृश्य

2010 में, केरल के पास केवल 300 डायलिसिस मशीनें थी और उसकी राजधानी, तिरुवनंतपुरम में उनमें से 80 मशीनें थी। अब, राज्य के पास करीब 3,300 मशीनें है और उसकी राजधानी में 800 इकाइयाँ मौजूद है। ''सरकारी अस्पतालों में स्थापित की जा रही डायलिसिस इकाईयों के बावजूद, CKD मरीजों की बढ़ती मांग आपूर्ति को पीछे छोड़ देती है,'' रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल, रो ई मंडल 3211 के अध्यक्ष वी बालगोपाल नायर ने कहा।

रोटरी डायलिसिस केंद्र के उद्घाटन पर एक विशाल भीड़ को संबोधित करते हुए, डीजी शिरीष केसवान ने कहा भारत में रोटरी नेतृत्वकर्ताओं ने निर्माताओं से करीब 5,000 डायलिसिस मशीनें खरीदने के लिए 25 प्रतिशत की भारी छूट के साथ सौदा तय किया और क्लबों से उनके समुदायों के लिए इस प्रस्ताव का लाभ उठाने का आग्रह किया।

पहले, विधायक ओ राजगोपाल ने सस्थामंगलम के पार्षद बिंदु श्रीकुमार की मौजूदगी में रोटरी डायलिसिस केंद्र का उद्घाटन किया था। अस्पताल अध्यक्ष स्वामी मोक्षव्रतानंद ने रोटरी के नेतृत्वकर्ताओं, सरकारी अधिकारियों का स्वागत किया और पूजा-पाठ संपन्न किए।

उल्लेखनीय परियोजनाएं

पलोड़ की सीमा पर ₹10 लाख की लागत से एक सामुदायिक सेवा केंद्र (CHC)-सह-PHC को रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल द्वारा अपनाया गया। यह आदिवासियों की जरूरतों को पूरा करता है, मैथ्यू ने आगे कहा।

एक अन्य आदिवासी क्षेत्र में, क्लब ₹1.5 लाख की लागत से शहर से 70 किमी दूर एक जंगली इलाके, कोत्तूर, में 25 गरीब परिवारों को बिजली प्रदान कर रहा है। ₹2 लाख की कुल लागत से निर्मित एक कुआँ और दो शौचालय खंड इस गाँव के एक सरकारी प्राथमिक स्कूल के 30 आदिवासी बच्चों और 300 परिवारों को लाभान्वित करते है, बालगोपाल ने कहा।

रोटरी क्लब कज्हाकुत्तोम द्वारा CHC, पुठेन्थोपे, में एक शिशु और मातृ खंड का 6-7 लाख की लागत से पुनर्निर्माण किया गया और ''हम अभी भी इसका रख-रखाव कर रहे है और उनकी चिकित्सीय आवश्यकताओं की पूर्ती कर रहे है,'' परेरा ने कहा। पिछले दो वर्षों में केरल में बाढ़ द्वारा तबाही मचाने के बाद, पिछले वर्ष चेंगन्नूर, कोट्टायम, वैकोम और रन्नी, पाठनमथिट्टा के गरीब परिवारों के घरों के बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुके घरेलु कुओं की गाद निकालकर और उनको गहरा करके उनकी मरम्मत करने का एक कार्यक्रम शुरू किया गया और इस वर्ष क्लब कोज्हीकोड में अन्य 200 कुओं की मरम्मत करेगा।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

Star Performers (Membership and

Zone 4		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	Shashi Kumar Sharma	3141
Highest % of Membership Growth	Deepak Jain	3100
Highest growth in women members	Subhash Jain	3012

Zone 5		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	Babu Peram	3232
Highest % of Membership Growth	C R Chandra Bob	3231
Highest % of Membership Growth	Babu Peram	3232
Highest growth in women members	Babu Peram	3232

Zone 6A		
Award Category	**IPDG**	**District**
Highest Membership Growth	Chintamani Bhattarai	3292
Highest % of Membership Growth	Chintamani Bhattarai	3292
Highest growth in women members	Chintamani Bhattarai	3292

अभिनंदन शेट्टी ने रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी से अपना पुरस्कार प्राप्त किया। चित्र में (बायें से) RID गण भरत पांड्या, कमल संघवी, PRID सी भास्कर और RPIC राजदुरई माइकल शामिल हैं।

PRID सी भास्कर और RC एच राजेंद्र राय की उपस्थिति में PDG बाबू पेरम और उनकी पत्नी अनीता ने रो ई अध्यक्ष मलोनी से पुरस्कार प्राप्त किया।

PRID सी भास्कर और RC एच राजेंद्र राय की उपस्थिति में PDG चंद्र बॉब और उनकी पत्नी सुजाता ने रो ई अध्यक्ष मलोनी से पुरस्कार प्राप्त किया।

RID पांड्या, PRID सी भास्कर और RC एच राजेंद्र राय की उपस्थिति में PDG चिंतामणि भट्टाराई ने रो ई अध्यक्ष मलोनी से पुरस्कार प्राप्त किया।

Public Image) — Zones 4, 5 and 6A

Zone 4		
Award Category	**IPDG**	**District**
Public Image Award - 1	Shashi Sharma	3141
Public Image Award - 2	Dr Shailesh Palekar	3131
Social Media Award	Priyesh Bhandari	3053
Print Media Award	Subhash Jain	3012
Two Sustainable Projects	Rajiv Sharma	3030

Zone 6A		
Award Category	**IPDG**	**District**
Public Image Award	Chintamani Bhattarai	3292
AV Media Award	Mukul Sinha	3291
Print Media Award	Mukul Sinha	3291

Zone 5	
IPDG	**District**
Dushan Soza	3220
K Rajagopalan	3212
A V Pathy	3201
Suresh Hari	3190
Abhinandan Shetty	3182
Muni Girish	3160
S Piraiyon	2981

RID पांड्या, PRID सी भास्कर और PDG गुरजीत सिंह की उपस्थिति में PDG राजीव शर्मा और उनकी पत्नी रश्मि ने रो ई अध्यक्ष मलोनी से पुरस्कार प्राप्त किया।

PDG प्रियेश भंडारी ने रो ई अध्यक्ष मार्क मलोनी से अपना पुरस्कार प्राप्त किया। चित्र में PRID सी भास्कर शामिल हैं।

चित्र: वी मुत्तुकुमारण

RID कमल संघवी, PRID सी भास्कर और RPIC राजादुरई माइकल की उपस्थिति में PDG के राजगोपालन ने रो ई अध्यक्ष मलोनी से पुरस्कार प्राप्त किया।

शब्दों की दुनिया

हमारी परिस्थितियों के लिए एक किताब

संध्या राव

जब मन अत्यधिक और अनुपयुक्त भावनाओं से भ्रमित हो जाता है, तो हमें उसे समझाने के लिए हमेशा एक किताब मिल सकती है। यहाँ पर एक ऐसी ही किताब है।

यह मेरे बुकशेल्फ पर काफी समय से रखी हुई थी: कार्ला पावर द्वारा लिखित *इफ द ओशन्स वर इंक* । पुलिट्ज़र किताब के अंतिम दौर में पहुँचने वाली और ओ, *द ओप्रा मैगज़ीन* के 10 टाइटल्स टू पिक अप नाऊ में शामिल यह किताब सामाजिक वर्णक्रम के पाठकों के लिए है जैसा कि नामांकन स्वयं सुझावित करते है। टैगलाइन कहती है कि यह किताब 'एक असंभाव्य मित्रता और कुरान के तत्व की यात्रा है।'

जिन मित्रों की बात हो रही है वे है कार्ला पावर और इस्लामी विद्वान शेख मोहम्मद अकरम नदवी। वे इस यात्रा में बराबर के साझेदार है: एक तरफ लेखिका की तेहरान, काबुल, दिल्ली और कायरो में बिताए जीवन के शुरुआती वर्षों के कारण, एवं पत्रकार के रूप में उनके कार्य के कारण, इस्लामिक दुनिया में उनकी रुचि है; दूसरी तरफ शेख की अद्भुत विद्वता और अंतर्दृष्टि है जिसके कारण वह उत्तरप्रदेश के एक छोटे से गाँव के मदरसे से पढ़ाई करने के बाद लखनऊ के प्रतिष्ठित नदवत अल-उलेमा गए जहां उन्होंने पढ़ाया भी, और उसके बाद वह शोध करने एवं पढ़ाने के लिए ऑक्सफ़ोर्ड गए।

लेकिन, वह कहते है, यह इतना समृद्ध और कभी-कभी इतना जटिल हो जाता है कि हम अक्सर केवल व्याख्यानों की ही पढ़ते है। इस जटिलता को 18वें सूरा की 109वीं आयात में स्वीकारा गया है, जो है: 'अगर मेरे परवरदिगार की बातों के (लिखने के) वास्ते समन्दर (का पानी) भी सियाही बन जाए तो क़ब्ल उसके कि मेरे परवरदिगार की बातें ख़त्म हों समन्दर ही ख़त्म हो जाएगा अगरचे हम वैसा ही एक समन्दर उस की मदद को ले आए।'

पुस्तक में क्या है इसका एक सार प्रदान करना मेरी क्षमता से परे है। हालांकि, बहुत से प्रासंगिक और साझा करने योग्य पल है जो हमारी समझ को प्रकाशित कर सकते है। उदाहरण के लिए, जब कार्ला ने शेख के सामने अध्ययन की उनकी पहली आधिकारिक बैठक (जो दरअसल ऑक्सफ़ोर्ड की मुख्य खरीददारी की सड़क से बाहर नोज़बैग कैफे में हुई थी) में यह बात स्वीकार की कि उन्होंने कभी कुरान नहीं पढ़ी, तो उनका जवाब था, 'बहुत से मुसलमानों ने भी नहीं पढ़ी है।'

''और यदि उन्होंने पढ़ी भी है, तो उन्हें वह समझ में नहीं आती है।'' जिन चीज़ों को आम तौर पर इस्लामिक माना जाता है वे पैगंबर के बाद आए विद्वानों द्वारा बनाई गई विधि प्रणालियों एवं सिद्धांतों पर आधारित है और उन विद्वानों ने कुरान की विवेचनाओं के आधार पर *फ़िक़्ह* या न्याय शास्त्र की एक विस्तृत प्रणाली विकसित की। इससे वे स्रोत से केवल दूर ही होते चले गए, शेख कार्ला से कहते है।

महिला विद्वानों के विषय को ही ले लीजिए। जिस वक्त कार्ला और शेख कुरान का अध्ययन करने में व्यस्त थे, उस समय उन्होंने पैगंबर के कथनों, *हदीस*, की महिला विद्वानों की खोज करना शुरू किया और उन्हें लगभग 30 नामों के सामने आने कई उम्मीद थी। बदले में, उन्हें कुछ 8,000 नाम मिले! इसके परिणामस्वरूप उन्होंने *मुहद्दिथत*, जैसा कि *हदीस* की महिला विद्वानों को कहा जाता है, के ऊपर अरबी में 40 खंड के एक जीवनिक शब्दकोश का संकलन किया। वर्तमान में कैम्ब्रिज इस्लामिक कॉलेज के अध्यक्ष, शेख उम अल-दर्दा के बारे में बात करते है जो डमस्कस की सातवीं सदी की विधिवेत्ता है।

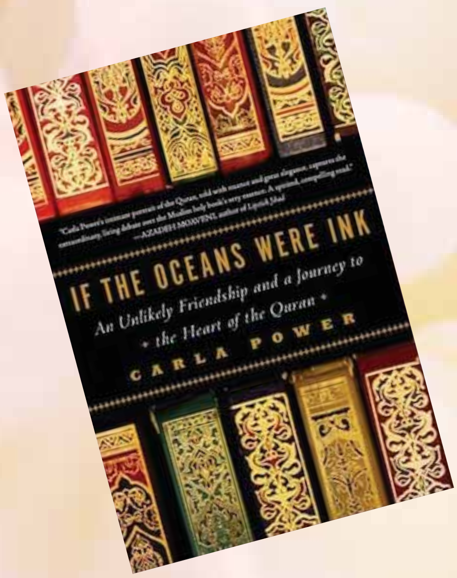

पश्चिमी देशों में रहने पर भी आप एक अच्छे मुसलमान बन सकते है। क्या कोई सरकार आपको धार्मिक बनाने से रोक रही है?

अकरम ने पाया कि एक युवती के रूप में, वह पुरुष विद्वानों के साथ मस्जिदों में बैठकर धर्मशास्त्र पर चर्चा किया करती थी। 'मैंने हर तरह से अल्लाह की इबादत करने का प्रयास किया है,' लेकिन बैठकर दूसरे विद्वानों के साथ चर्चा करने से बेहतर कोई तरीका मुझे नहीं मिला।' कार्ला आगे कहती है, ''अकरम की खोज के अनुसार वह एक स्वतंत्र महिला थीं। अनाथ रहते हुए, वह बिना सर ढके मस्जिद जाती थी, और एक समय पर उन्हें महिलाओं की कतार के बजाय वर्षों की कतार में प्रार्थना करते हुए देखा जा सकता था। डमस्कस और जेरुसलेम में उनकी कक्षाओं में उन्होंने महिला और यहां तक कि खलीफे को भी अपना शिष्य बनाया।''

वास्तव में, ''मोहम्मद के युग में महिलाएं स्वतंत्र रूप से पुरुषों के साथ मस्जिदों में प्रार्थना करती थी, लेकिन समय के साथ, बहुत सी संस्कृतियों ने उनकी मौजूदगी पर पाबंदियां लगाना शुरू कर दिया। सदियों से, विद्वानों की आम राय कि महिलाओं को मस्जिद आने की आवश्यकता नहीं है यदि वह घर एवं बच्चों से दूर नहीं हो सकती एक सांस्कृतिक प्रतिमान में तब्दील हो गया जो कहता है कि उन्हें नहीं जाना चाहिए।'' शेख रिवाज या सांस्कृतिक परंपराओं और आस्था के मध्य के अंतर को समझने में कार्ला की मदद करते है। उदाहरण के लिए, छोटी टोपी पहनने की परंपरा इस्लामिक जरूरत नहीं है बल्कि यह एक दक्षिण एशियाई रिवाज है जो चलन में आ गया। यदि हिजाब पहना प्रतिबंधित है, तो कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि कोई भी आपकी आस्था को आपसे दूर नहीं कर सकता और यही बात मायने रखती है।

वह कार्ला से कहते है, ''कुछ लोग सोचते है कि महिला को बाल नहीं काटने चाहिए क्योंकि ऐसा पश्चिमी देशों की महिलाएं करती है। वे सोचते है कि मैं उदार हूं। लेकिन वास्तव में, मै बस पैगंबर के सुन्ना की ओर वापस लौट रहा हूं।''

इस बात के लिए वह *हदीस* को आधार बनाते हैं जिसके अनुसार पैगंबर के मरने के बाद उनकी पत्नियों ने बाल काटे थे। एक दूसरी, बेशक विवादास्पद घटना में, शेख नामक एक पिता जानना चाहता था कि उसकी अविवाहित गर्भवती बेटी के साथ क्या करना चाहिए। उन्होंने उसे सहारा देने और उसका समर्थन करने और उसपर इस दुनिया में फैसला ना करने के लिए कहा क्योंकि वह पहले ही पाप कर चुकी है और इसका परिणाम वह आने वाली जिंदगी में भुगतेगी।

जैसा कि कार्ला लिखती है, ''अकरम की सहनशीलता एक विश्वास से जन्मी है ईश्वर केंद्रित ब्रम्हांड में, किसी के पास स्वतंत्रता नहीं होती, और किसी के पास दूसरो पर न्याय करने का अधिकार नहीं होता। यह ईश्वर का काम हैं। कुरान केवल एक मार्गदर्शिका ही नहीं है, बल्कि यह सोच को विस्तृत करने का साधन भी है।'' किताब के अनुसार जब अकरम पहली बार 1991 में ऑक्सफोर्ड आए, उसके निदेशक ने उनसे पूछा कि *द सेटेनिक वर्सेज़* के बारे में आपकी क्या राय है। सलमान रुश्दी के उपन्यास ने हंगामा मचा दिया था और आयतुल्लाह खोमेनी ने रुश्दी की मौत का फतवा जारी कर दिया था। अकरम ने निदेशक को जवाब दिया कि, ''इसे नजरअंदाज कीजिए।'' उन्होंने कहा कि ''विरोध करने से मुसलमान केवल आहत ही होंगे। *द सेटेनिक वर्सेज़* की अग्नि ने ईश्वर या पैगम्बर को क्षति नहीं पहुंचाई है, उनमें से किसी की वकालत करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन इसने इस्लाम को देखने के दुनिया के नजरिए को भारी क्षति पहुंचाई।'' आगे, उन्होंने कहा, ''खोमेनी को इस्लामी देशों में बहुत पसंद नहीं किया जाता था। यह केवल खोमेनी का मुसलमानों के दिलों में सम्मान वापस हासिल करने का एक प्रयास था।''

मौजूदगी पर पाबंदियां लगाना शुरू कर दिया। सदियों से, विद्वानों की आम राय कि महिलाओं को मस्जिद आने की आवश्यकता नहीं है यदि वह घर एवं बच्चों से दूर नहीं हो सकती एक सांस्कृतिक प्रतिमान में तब्दील हो गया।

कार्ला द्वारा खोजी गई एक बिखरी हुई दुनिया के लिए अकरम का जवाब है ''प्रार्थना और स्वीकृति: धैर्य और आस्था की सचेत परंपरा घर से दूर बिताए गए जीवन को गरिमा, आराम, और अर्थ प्रदान करती है।'' अकरम के शब्दों में, ''एक लंबे अरसे से, मुसलमान जगह को लेकर बहुत चिंतित रहे है। हम सोचते है, मयदि मेरे पास बेहतर जगह होती तो अच्छा होता। मुसलमान सुधारक सोचते है, 'यदि हमारे पास खिलाफत होती, तो अच्छा होता। यदि हमें एक मुसलमान राज्य मिल जाए, तो बेहतर होगा।' ...हम सोचते है, 'यदि हम सऊदी अरब जाएंगे, तो वह एक बेहतर देश होगा।' सऊदी अरब जाइए आप देखेंगे कि वहां पर कोई आजादी नहीं है। वह उनके विद्यार्थियों को समझाते है: जब आप अल्लाह द्वारा निर्धारित स्थान पर पहुँच जाते है, तो शिकायत मत कीजिए। उसका इस्तेमाल करना सीखिए। सोचिए!'' इसके अलावा, वह कहते है, ''पश्चिमी देशों में रहने पर भी आप एक अच्छे मुसलमान बन सकते है। क्या कोई सरकार आपको धार्मिक बनाने से रोक रही है?'' वह पूछते है।

अकरम नदवी के साथ अध्ययन के अंतिम वर्ष में, कार्ला को एहसास हुआ कि ''कुरान केवल दो कवरों के बीच मौजूद पन्ने ही नहीं है; बल्कि यह ऐसी जगह है जहां पर आस्था रखने वाले बारंबार आते है।'' वापसी की कार्यवाही - प्रार्थना चटाई की तरफ, कुरान की तरफ, सांस्कृतिक लेखों की तरफ - अक्सर विश्वलोकन को प्रसारित करती है, उसे प्रतिबंधित नहीं करती। इस प्रकार से आस्था सभी लोगों को सम्मिलित करके कार्य करती है। और शायद आज हमें उसी की आवश्यकता है - आस्था की।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आपके गवर्नरों से मिलिए

जयश्री

सर्विकल कैंसर टीकाकरण, उनकी मुख्य रूचि

दीपक गुप्ता, इंजीनियरिंग सामग्री निर्माता, रोटरी क्लब गाज़ियाबाद, रो ई मंडल 3012

इस वर्ष उन्हें एक अच्छा अनुभव मिला है लेकिन वह कामना करते है कि हर दिन में 48 घंटे और प्रत्येक वर्ष में 700 दिन हो। समुदायों को लाभान्वित करने हेतु ''सभी अध्यक्ष कुछ बड़ी परियोजनाओं को निष्पादित करने को लेकर बहुत उत्साहित रहते है, इतना कि उनकी इन जोशपूर्ण योजनाओं को समायोजित करने के लिए एक वर्ष पर्याप्त नहीं है,'' दीपक गुप्ता कहते है।

वह सर्विकल कैंसर टीकाकरण को बढ़ावा देने को लेकर उत्सुक है और ऐसी ही एक परियोजना के लिए उनके पास वैश्विक अनुदान स्वीकृति है। ''मेरा सपना पूरे मंडल में टीकाकरण का विस्तार करना है। शायद तब हमारी सरकार इसे राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने के लिए प्रेरित होगी, वह कहते है।'' वैश्विक अनुदान के माध्यम से मंडल 40-50 हैप्पी स्कूल बनाने की भी योजना बना रहा है। इसके अलावा गवर्नर श्रीलंका, ब्राज़ील और मेक्सिको जैसे देशों में परियोजनाओं को निष्पादित करने हेतु साझेदारियों को बढ़ाने को लेकर भी उत्सुक है।

2001 से एक रोटेरियन, गुप्ता जल्द ही एक एकेएस सदस्य बनने जा रहे है और उन्होंने टीआरएफ को 100,000 डॉलर दिए है।

वह 400 नए सदस्यों के माध्यम से सदस्य संख्या में वृद्धि करना चाहते है लेकिन वह फैंटम क्लबों को लेकर चिंतित भी है जो वोट बैंक की संख्या को बढ़ाने के लिए बनाए गए है। ''DGND चुनावों के पूर्ण होने से पहले नए क्लबों को अधिकृत ना करके मैंने इस मुद्दे का निपटान किया है।'' मंडल में 26 प्रतिशत महिला सदस्य है। दो क्लबों का गठन किया गया है जिनमें सदस्यों के रूप में रोटेरियनों के बच्चे है और ऐसे तीन और क्लबों का गठन करने का काम चल रहा है।

टीआरएफ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 500,000 डॉलर का है और वह खुश है कि मंडल का अक्षय निधि योगदान करीब 100,000 डॉलर का है। ''इस वर्ष हमारे पास चार अक्षय निधि दानकर्ता होंगे,'' वह कहते है।

उनकी पत्नी रीना भी एक रोटेरियन है और उन्होंने एक अनोखा 'एन्स पढ़ा सकती है' कार्यक्रम भी शुरू किया है जहाँ पर रोटेरियनों की पत्नियाँ हफ्ते में तीन दिन ग्रामीण स्कूलों का दौरा करती है और बच्चों को विभिन्न विषय पढ़ाती है।

हैप्पी स्कूल, उनकी प्राथमिकता

जितेंद्र ढींगरा, चावल निर्माता, रोटरी क्लब कुरुक्षेत्र, रो ई मंडल 3080

वह 1984 तक एक रोटेरेक्टर थे और 1992 से एक रोटेरियन है। जितेंद्र ढींगरा 2015 में रोटरी चिकित्सीय मिशन के लिए रवांडा की उनकी स्वयंसेवी यात्राओं को मन में सँजोते है और अगले महीने वह इसी प्रकार के कार्य के लिए ज़िम्बाब्वे जाने की प्रतीक्षा कर रहे है।

ढींगरा प्रसन्न है कि उनका मंडल लेह, लद्दाख और रूड़की के दूरस्थ इलाकों में सौर लैंपों की स्थापना कर रहा है। यह देखना निराशाजनक है कि इन में से कुछ स्थानों पर बिजली भी नहीं है, वह शोक जताते है। दो स्कूलों को हैप्पी स्कूलों में परिवर्तित करने के लिए उन्होंने दो वैश्विक परियोजनाओं पर हस्ताक्षर किए है और इन स्कूलों में विभिन्न आधारभूत संरचनाएं एवं बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाएगी जिनकी यहाँ पर कमी है। ''यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि स्कूल बच्चों के लिए उत्साह के साथ आने एवं सीखने के लिए पर्याप्त रूप से आकर्षक हो,'' वह कहते है।

मंडल में 87 क्लबों में 3,800 सदस्य है और ढींगरा इस सदस्यता को 10 प्रतिशत तक बढ़ाना चाहते है। वह इस बात से भी खुश है कि 550 महिला रोटेरियन मंडल की विभिन्न मानवीय परियोजनाओं में सक्रिय रूप से हिस्सा ले रही है। उन्होंने हाल ही में एक अखिल महिला क्लब की स्थापना की है एवं एक और क्लब की स्थापना करना अभी बाकी है, वह कहते है।

टीआरएफ़ योगदान के लिए उनका लक्ष्य 5 मिलियन डॉलर का है और सभी क्लबों को 100 प्रतिशत PHF बनाकर उन्हें इस लक्ष्य की प्राप्ति पर विश्वास है।

उनका ध्यान डायलिसिस सुविधाओं को बढ़ाने पर है

श्रीधर बालारमण, बेकरी उत्पाद, रोटरी क्लब वेल्लोर फोर्ट, रो ई निदेशक 3231

वह रोटरी से जुड़ने हेतु तब प्रेरित हुए जब उनके एक रोटेरियन मित्र ने रोटरी द्वारा संचालित किये जा रहे एक स्कूल में पढ़ने वाले पोलियो पीड़ित बच्चों के लिए भोजन वितरित करने हेतु उन्हें आमंत्रित किया। ''उस दिन मेरा जन्मदिन था और इन बच्चों की दुर्दशा ने मुझे बहुत प्रभावित किया। अगले ही क्षण मैंने क्लब में शामिल होने का निर्णय ले लिया,'' श्रीधर बालारमण कहते है।

वह मंडल की प्रमुख परियोजना - मंडल में डायलिसिस सुविधाओं में सुधार - के बारे में बात करने को लेकर उत्साहित है - जिसमें वह परियोजना प्रमुख है। जहाँ 100,000 डॉलर के वैश्विक अनुदान की मदद से वेल्लोर में आठ डायलिसिस इकाइयाँ स्थापित की जा चुकी है, वहीं स्थानीय दानकर्ताओं की मदद से इस वर्ष 17 अधिक जोड़ी जाएंगी। टैंकर फाउंडेशन इसके कार्यों में मदद करता है। अभी तक 12,500 डायलिसिस प्रक्रियाएं की जा चुकी है, वह कहते है, आगे कहते हुए कि वैश्विक अनुदानों की मदद से वह यहाँ और अधिक मशीनें जोड़ने और कांचीपुरम, तिरुवन्नामलाई और तिरुवल्लूर में तीन अधिक केन्द्रों को स्थापित करने की योजना बना रहे है।

उन्होंने सात नए क्लबों को अधिकृत किया है और 420 सदस्यों को शामिल किया है। ''दो क्लब अखिल-महिला क्लब है जिनमें से प्रत्येक में 64 सदस्य है,'' बालारमण कहते है। मंडल में अब सात अखिल-महिला रोटरी क्लब है। वह जून अंत तक 111 नए सदस्यों को शामिल करने का विचार कर रहे है।

टीआरएफ के लिए उनकी प्रतिबद्धता 1 मिलियन डॉलर की है। ''हम 'दो बूँद के लिए दो डॉलर' अभियान के माध्यम से उल्लेखनीय तरीके से पोलियो कोष में योगदान देने और 30 प्रमुख दानकर्ताओं को प्रोत्साहित करने की योजना बना रहे है जिसमें से 10 की पहचान की जा चुकी है,'' डीजी कहते है। हमारे पास पांच अक्षय निधि दानकर्ता होंगे और बाकि के पैसे मियादी उपहारों के माध्यम से एकत्रित किये जाएँगे।

''मैं अपने अध्यक्षों को 'डैज़लिंग लीडर्स' बुलाता हूँ और मंडल का एक हैशटैग है - 'सर्विस एंड फन अनलिमिटेड।' इसलिए मुझे विश्वास है कि मेरा दल एक बड़े पैमाने पर प्रदर्शन करेगा और वे सेवा परियोजनाओं में शामिल होकर उसका उसी तरह आनंद लेंगे जैसा वे रोटरी के फ़ेलोशिप में लेते है,'' अपने शब्दों को विराम देते हुए डीजी ने कहा।

लड़कियों के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य

ए कार्तिकेयन, शिक्षा प्रबंधन, रोटरी क्लब तिरुपुर मेटल टाउन, रो ई मंडल 3202

वर्ष 2004 में 26 वर्ष की उम्र में वह एक रोटेरियन बने। ''मेरे पिता का देहांत उसी समय हुआ था और रोटरी ने मुझे जीवन और उसकी चुनौतियों का सामने करने की ताकत और भरोसा दिया था,'' कार्तिकेयन कहते है जो उनकी युवावस्था में एक इंटरेक्टर और रोटरेक्टर थे। रोटरी में उनके सबसे अभिलषित पलों में शामिल है रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करते हुये कीर्तिमान स्थापित करना जिसमें ध्यान साक्षरता और पोलियो उन्मूलन कार्यक्रमों पर केन्द्रित किया गया था।

उनके मंडल के लिए गवर्नर के पास विभिन्न सेवा परियोजनाएं कतारबद्ध है, जिसमें प्राथमिकता लड़कियों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य को सुगम बनाने एवं आजीविका में मदद करने के लिए उन्हें कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करने पर है। ₹2.5 करोड़ की एक मोबाइल मेमोग्राम सुविधा और ₹1.5 करोड़ की रक्त बैंक सुविधा पूरी हो चुकी है। ''23 फरवरी को चेन्नई में एमजीएम अस्पतालों में हमने उकऊपीड़ित बच्चों को इलाज प्रदान करने की योजना बनाई है। क्लबों से इलाज को प्रायोजित करने का आग्रह किया गया है,'' वह कहते है।

मंडल में 5,200 सदस्य है और कार्तिकेयन इसे 15 प्रतिशत से बढ़ाना चाहते है। अब तक, 600 नए सदस्यों को शामिल किया जा चुका है। वह रोटरी में अधिक महिलाओं को शामिल करने को लेकर उत्सुक है और उन्होंने क्लबों से इस पर ध्यान केन्द्रित करने का आग्रह किया है।

टीआरएफ़ में देने के लिए उनका लक्ष्य 500,000 डॉलर इकट्ठा करने का है, जिसमें से उन्हें 350,000 डॉलर की प्रतिबद्धताएं मिल चुकी है। इसके अलावा, उन्होंने अपनी स्थापना के दौरान संस्थान को 100,000 डॉलर का योगदान दिया है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

पुणे के किसानों के लिए शहद और आमदनी

किरण ज़ेहरा

पुणे के पूरब में स्थित एक छोटे से गाँव मवाल में अपने छप्पर वाले घर के पीछे, चावल की खेती करने वाला एक किसान, नाथ महाराज शेलर, एक लकड़ी के बक्से के अंदर मधुमक्खियाँ पालता है। ''मेरी आमदनी 15,000 सालाना से बढ़ जाएगी और मैं एक पानी का पंप खरीद पाऊँगा,'' वह कहता है। क्षेत्र के चार अन्य किसान भी मधुमक्खीपालन कर रहे है; रोटरी क्लब प्राधिकरण, रो ई मंडल 3131, ने उन सभी को मधुमक्खी पालने के बक्से वितरित किए है। ''हमारा लक्ष्य स्थानीय समुदाय के जीवन स्तर को सुधारते एवं सम्मिलित करते हुये इस गाँव की पर्यावरण स्थिति को सुधारना है,'' क्लब अध्यक्ष बहार शाह कहते है।

हर एक मधुमक्खी बक्से में 30,000 श्रमिक मधुमक्खी, 100 नर मधुमक्खी और एक रानी मधुमक्खी होती है। लकड़ी के बक्से में एक निचला बोर्ड, एक छत्ते की बॉडी या संचित करने की दो फ्रेम, शहद एकत्रित करने की अनेक फ्रेम और एक आंतरिक आवरण शामिल होता है। एक बाहरी आवरण ऊपर से फिट होता है। कृत्रिम

मधुमक्खियां एक फ्रेम पर मधु कोष का निर्माण करती हुई।

नीचे: *शिवसागरमधु उद्योग के संस्थापक विजय महाजन ग्रामीणों से मधुमक्खी पालन के बारे में समझते हुए।*

छत्ते का डिज़ाइन और आयाम मधुमक्खी के प्रसार पर आधारित होता है और यह ₹5,000 का आता है।

पुणे में जैविक कच्चे शहद का निर्माण करने वाले शिवसागर मध उद्योग के संस्थापक विजय महाजन इन किसानों को मधुमक्खी पालन में प्रशिक्षित करते हैं और उनका कच्चा शहद खरीदकर उसे संसाधित करके खुदरा बाज़ार तक पहुँचाते है। ''प्रत्येक किसान एक किलो शहद पर लगभग 150 कमा सकता है। एक सीज़न में कमाई 4,000 प्रति बक्से तक पहुँच सकती है। केवल भारत में ही जैविक शहद की वर्तमान मांग 20 लाख मैट्रिक टन है। हमारा उद्योग एक पूर्व निर्धारित कीमत पर इन परिवारों से शहद खरीदने के लिए तैयार है,'' वह कहते है।

शहद के अलावा, मधु मोम को ₹300 प्रति किलो की कीमत पर औषधीय कंपनीयों को बेचा जा सकता है। अभी इन किसानों को बढ़ने में लगभग एक साल लगेगा है और उनकी कमाई के आधार पर वे अधिक मधुमक्खी पालन बक्सों को खरीदने का फैसला कर सकते है।

महाजन जो वर्तमान में अरुणाचल प्रदेश में 10,000 किसानों को मधुमक्खी पालन में प्रशिक्षित कर रहे है समझाते है कि अकेले मधुमक्खी पालन से किसानों को आजीविका के लिए पर्याप्त आय नहीं मिलेगी। ''हालांकि, मधुमक्खी परागण से किसानों का कृषि उत्पाद बढ़ जाएगा। मधुमक्खी पालन से अतिरिक्त आय होती है और किसान समझ गए है कि वनस्पति पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में मधुमक्खियाँ एक अहम भूमिका निभाती है। वनस्पतियाँ मधुमक्खियों एवं अन्य कीटों पर परागणकारियों के रूप में निर्भर होती है। इससे फसल की पैदावार में सालाना 20 प्रतिशत की वृद्धि हो सकती है,'' वह आगे कहते है।

बहार कहते है कि वर्तमान में खादी ग्राम उद्योग योजना के तहत सरकार किसानों को ऋण देकर मदद करने के लिए तैयार है ताकि विभिन्न प्रकार की खेती में निवेश करके वे अतिरिक्त आय अर्जित कर सकें। ''हम किसानों को ऋण लेने हेतु आने से पूर्व एक आधार देना चाहते है। यह कार्यक्रम किसानों की आजीविका, पर्यावरण के संरक्षण, जैविक बाज़ार के विकास, और किसानों को प्रशिक्षित करने एवं जानकारी साझा करने के बारे में है। हमारा इरादा इस पहल में अधिक किसानों को शामिल करने का है।''

अपने घर के पीछे महाराज शेलर कहते है, ''मेरे खेत में पैदा होने वाली उपज में चावल, टमाटर, मूँगफली एवं बैंगन शामिल है। मैं खेत में कड़ी मेहनत करता हूँ और घर लौटकर मधुमक्खियों को भिनभिनाता हुआ सुनकर मैं खुश हो जाता हूँ। मुझे बहुत कुछ नहीं करना है और मुझे यह जानकर खुशी होती है कि इससे मुझे एक मीठा लाभ प्राप्त होगा।'' ■

उपयुक्त भोजन

हैंक सार्टिन

जब आप 6 से 10 जून तक रोटरी अंतर्राष्ट्रीय समारोह के लिए होनोलूलू में होंगे, तो आप देखेंगे कि शहर में बढ़िया रेस्टोरेन्टों की एक उत्कृष्ट शृंखला मौजूद है। और आपको स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने के लिए हवाई सम्मेलन केंद्र से बहुत दूर भी जाना नहीं पड़ेगा।

नाश्ते के लिए, अलोहा किचन में आपको एग्स बेनेडिक्ट और ऑमलेट जैसा सामान्य भोजन मिलेगा, लेकिन वहाँ की विशेषता है सौफले पैनकेक्स, जो कि पारंपरिक नाश्ते से थोड़ा हटके होगा। यदि आप थोड़ा दूर (1.2 मील) चलना पसंद करे, तो नूक पर आपको सुबह के नाश्ते के लिए कुछ असाधारण चीज़ें मिलेगी, जैसे ऑरेंज ब्लासम पैनकेक्स, कोकोनट कारमेल वेफ़ल्स, और चावल के आटे से बना मोची वेफ़ल्स।

दोपहर के भोजन के नजदीकी विकल्पों में दुनिया भर की चीज़ें उपलब्ध है, किकिन कजुन से लेकर होक्कइडो रमेन सैंटोका और जापानी भोजन डो-ने तक। रात्रिभोज के लिए, कोरियाई कांग नैम एक बारबेक्यू रेस्टोरेन्ट है जो उसके *याकिनिकु* (भुने हुये मांस) के लिए जाना जाता है। समूह में एक साथ जाकर एक संयोजक थाली ऑर्डर कीजिये।

उत्कृष्ट ब्रूपब भोजन - जिसका हवाई में अर्थ होता है पोक और मुर्गी के पंखों, बर्गर और पिज़्ज़ा के साथ तेज आंच पर पकाया हुआ अहि सलाद - के लिए वाइकीकी ब्रूइंग कंपनी जाइए और वहाँ बीयर पीना मत भूलिएगा।

और ब्रेकआउट सत्रों के बीच में कुछ ठंडे का आनंद लेने के लिए, स्नो फ़ैक्टरि और आइस मोंस्टर हवाई में हवाई ट्रीट शेव आइस के लिए बाहर जाइए।

होनोलूलू में 2020 रोटरी सम्मेलन से मत चूकिए। सुरक्षित करने के लिए 31 मार्च तक *riconvention.org* पर पंजीकरण कीजिये।

©The Rotarian

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी नेपाल ताइवान मेडिकल मिशन

टीम रोटरी न्यूज

रो ई मंडल 3523, ताइवान के सहयोग से रो ई मंडल 3292 के द्वारा आयोजित किए गए दो दिवसीय मेडिकल कैम्प में 7,000 से अधिक लोग लाभान्वित हुए। इस कैम्प को जिसे रोटरी नेपाल ताइवान मेडिकल मिशन नाम दिया गया है, रोटरी क्लब बागलुंग द्वारा समन्वित किया गया जो कि बागलुंग के धौलागिरी जोनल अस्पताल में आयोजित किया गया था। विभिन्न विशेषज्ञताओं वाली 90 मेडिकल एक्सपर्ट की टीम ने रोगियों का इलाज किया और जरूरतमंद लोगों को 25 लाख नेपाली रूपयों की दवाओं का वितरण किया। इस कार्यक्रम में ताइवान के लगभग 150 रोटेरियन ने भी भाग लिया।

एक ईसीजी मशीन एवं एक अल्ट्रासाउंड मशीन और दो डेंटल चेयर क्लब के द्वारा धौलागिरी जोनल अस्पताल को दान में दिए गए। पर्वत और दामौली जिला अस्पतालों को रोटरी क्लब पर्वत और दामौली से एक-एक अल्ट्रासाउंड मशीन मिली। रो ई मंडल 3523 और 3292 के राज्यपाल जॉय और किरण लाल श्रेष्ठ ने आयोजन में भाग लिया। किरन लाल श्रेष्ठ ने कहा कि कैंप का आयोजन होने से दोनों जिलों के बीच मजबूत संबंध बने हैं।■

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

संस्थान मान्यता अंक

संस्थान मान्यता अंक उन दानकर्ताओं को दिए जाते है जो एनुअल फंड या पोलियोप्लस के माध्यम से, या संस्थान के अनुदान को प्रायोजित करके, रोटरी संस्थान में योगदान देते है।

- इन कोषों में दान दिए गए हर एक डॉलर के लिए दानकर्ताओं को एक मान्यता अंक मिलता है।
- एंडोमेंट फंड और डायरेक्टेड गिफ्ट्स में किये गए दान मान्यता अंकों के लिए पात्र नहीं है।
- PHF या मल्टीपल PHF के रूप में अहर्ता प्राप्त करने में दूसरों की मदद करने के लिए दानकर्ता संस्थान मान्यता अंकों को हस्तांतरित कर सकते है।
- कम से कम 100 संस्थान मान्यता अंकों का हस्तांतरण होना चाहिए, और ऐसा करने के लिए दानकर्ता को रिकग्निशन एंड ट्रान्सफर रिक्वेस्ट फॉर्म भरकर उसपर हस्ताक्षर करना होगा।
- व्यक्तियों के रिकग्निशन अंकों को किसी क्लब या मंडल को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता।

क्लब और मंडल नेतृत्वकर्ता ऑनलाइन क्लब रिकग्निशन समरी देख सकते है, जिसमें मान्यता राशि, मान्यता अंक, वर्तमान PHF स्तर, और उस स्तर को प्राप्त करने की दिनांक को माय रोटरी पर लॉग इन करके देखा जा सकता है।

अव्ययित सीएसआर राशि

कॉर्पोरेट्स की अव्ययित सीएसआर राशि के संबंध में कंपनी अधिनियम 2013 की धारा 135 में किये गए हालिया संशोधन को नीचे दिया गया है:

"किसी कंपनी द्वारा उसकी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के अनुसरण में निर्धारित शर्तों को पूरा करते हुए की जा रही किसी चालू परियोजना पर अव्ययित उछ्ठ राशि को वित्तीय वर्ष की समाप्ति के तीस दिनों के भीतर कंपनी द्वारा एक विशेष खाते में हस्तांतरित किया जायेगा जिसे कंपनी द्वारा किसी भी अनुसूचित बैंक में अनस्पेंट कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसिबिलिटी अकाउंट के नाम से उस वित्तीय वर्ष के लिए खोला जायेगा, और उस राशि को हस्तांतरण की दिनांक से तीन वित्तीय वर्षों के भीतर कंपनी द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी नीति के प्रति उसके कर्तव्यों का पालन करने के लिए खर्च किया जायेगा, ऐसा ना करने पर, कंपनी तीसरे वित्तीय वर्ष की समाप्ति की तिथि से तीस दिनों के भीतर अनुसूची तखख में निर्दिष्ट एक कोष में उस राशि को हस्तांतरित करेगी।"

रोटरी क्लब और मंडल कॉर्पोरेट के पास जाकर उनके अप्रयुक्त सीएसआर कोष की मांग कर सकते है।

अनुदान प्रबंधन प्रशिक्षण सामग्रियां

रोटरी के लर्निंग सेंटर में अब अनुदान प्रबंधन संसाधन उपलब्ध है। आपको यहाँ परियोजना को संवहनीय बनाने, सामुदायिक आंकलन करने, प्रभावी परियोजनाओं का नियोजन करने, अनुदान वित्त का प्रबंधन करने, रोटरी अनुदानों के लिए क्लब को योग्य बनाने और अनुदानों की रिपोर्टिंग करने पर पाठ्यक्रम मिलेंगे। फाउंडेशन अनुदान हेतु क्लबों को योग्य बनाने के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम पर विचार करें या इसके साथ छोटा व्यक्तिगत प्रशिक्षण भी करें जिससे सदस्यों को मंडल आवश्यकताओं पर चर्चा करने एवं सवाल पूछने का अवसर मिल सकें।

डीजीई, डीआरएफसी और मंडल प्रशिक्षकों के पास अब उनके मंडल में सदस्यों द्वारा किये गए पाठ्यक्रमों पर लर्निंग सेंटर की रिपोर्टों तक पहुँच है। इन रिपोर्टों का उपयोग आपके मंडल में प्रशिक्षण पर नज़र रखने और योग्यता प्रक्रिया को प्रबंधित करने के लिए किया जा सकता है। एक्सेस टू लर्निंग सेंटर रिपोर्ट्स पाठ्यक्रम को पूरा कीजिये और अपनी पहली रिपोर्ट दो हफ़्तों में प्राप्त कीजिये। *learnrotary.org* पर सवाल भेजिए।

माय रोटरी पर ग्रांट्स और कैडर

माय रोटरी पर रिपोर्ट रोटरी सदस्यों की अपनी अनुदान गतिविधियों का प्रबंधन करने और रोटरी संस्थान के कैडर ऑफ़ टेक्निकल एडवाइजर्स को खोजने में मदद कर सकती है जो अनुदान परियोजनाओं में उनकी मदद कर सकते है। यह जानने के लिए कि किस प्रकार की जानकारी के लिए कौन सी रिपोर्ट का इस्तेमाल करना है, *My Rorary* पर लॉगइन करके *मेनेज* को चुनिए।

द रोटेरियन-डिजिटल

द रोटेरियन-डिजिटल एक पूर्ण प्रतिकृति और प्रिंट कॉपी का एक विकल्प है। ई-कॉपी आधी कीमत (यूएस 6 प्रति अर्ध-वार्षिक अवधि) पर उपलब्ध है और इसे संबंधित रोटरी क्लब अधिकारियों के माध्यम से *datarotary.org* पर ई-मेल के माध्यम से सब्सक्राइब किया जा सकता है। सदस्यों को ईमेल के माध्यम से नियमित रूप से पत्रिका प्राप्त करने के लिए एक वैध ईमेल पता होना चाहिए। उन जगहों पर जहां डाक प्रणाली विश्वसनीय नहीं हो सकती है, हम मासिक पत्रिका की ई-कॉपी की सदस्यता लेने की दृढ़ता से सलाह देते हैं। ■

अपनी देखभाल करते रहिए

भरत और शालन सवुर

ज़िंदगी हर पल आनंद से भरी हो सकती है यदि आप हर चीज़ को आनंद भरी निगाहों से देखें, हर बात को आनंद के साथ सुने, और हर चीज़ को आनंद भरी चेतना के साथ सूंघे, महसूस करें और चखे। यह आपका आनंद होता है जो आपके सामने आने वाली हर चीज़ को सुंदर बना देता है।

आनंद की ऊर्जा। आनंद तनाव का एंटीडोट होता है। जब हम आनंद से भरे होते है, हमारी कोशिकाएँ अपार ऊर्जा उत्पन्न करती है। प्राचीन भारतीय ज्ञान के अनुसार, आनंद जीवन की एक मूलभूत गुणवत्ता है। यह आनंद होता है। अक्सर, हमारे ऋषि स्रोत के साथ उनके स्पंदनों से अत्यंत खूबसूरती से सरेखित होते थे, वे एक तन्मयता में होते थे, आनंद के स्रोत के साथ एकीकृत होते हुये। और उनके आसपास मौजूद लोगों को वह शांति का एक बहुत बड़ा तालाब, कुछ चुम्बकीय और बेहद शान्तिदायक लगता था।

अस्वास्थ्यकर निराशावाद। जो चीज़ हमें आनंद के हमारे प्राकृतिक झरने से दूर रखती है वे हमारी विषाक्त भावनाएँ और मनोवृत्तियाँ होती है - क्रोध, डर, लाचारी, अवसाद, दुख, चिंता, मायूसी, हमारे व्यक्तिगत विश्वास के अनुरूप ना रहने वाली हर चीज़ पर अविश्वास और यदि अविश्वास को संयमित ना किया जाए तो वह निराशा में बदल जाता है। तीनों की स्ट्राँग दवाइयाँ चल रही है - पहली नसों के लिए, दूसरी दिल के लिए, और तीसरी अवसादरोधक - ताकि वे एक सामान्य जीवन जी सके। यह चिंताजनक है क्योंकि वे अच्छे लोग है, लेकिन उनकी अच्छाइयाँ इसलिए अक्सर धूमिल हो जाती है क्योंकि वे निंदक अविश्वास के साथ मिश्रित हो जाती है। इसलिए, कभी-कभी, वे क्रमानुसार कड़वे, षड्यंत्रात्मक और कठोर के रूप में सामने आते है।

धारणाओं को किनारा कीजिये और कोई राय नहीं बनाने या नहीं देने में आराम महसूस कीजिये। मन शांत है, भावनाएँ अभी भी बिना लहरों वाली झील की तरह है। जैसे-जैसे दिन गुजरते है, वैसे-वैसे मन और शरीर में एक नए आंतरिक संतुलन की शांत संतुलितता कायम होती है। और आप वास्तव में बिना रुके एक प्रवाह में एक के बाद एक काम कर सकते है। आप सहजता से लिखने के बाद लेखा कर सकते है और उसके बाद बास्केटबॉल खेलकर खाना पकाने के बाद, वापस लेखन कर सकते है... यहाँ तक कि आपको दिमागी गेयर भी नहीं बदलने पड़ते, आपकी एकाग्रता भंग नहीं होती है, आपका ध्यान समेकित रहता है। ऐसे प्रवाह का अनुभव तब बन पाता है जब उस पर लगाम कसने के लिए जलन, रोष, द्वेष या यातनाओं जैसी भावनाओं का कोई आक्षेप नहीं होता है।

जब आप ऐसा अनुभव करते है, तो आप समझते है कि बिना भावनाओं के दिमाग कितना खूबसूरत और शीतल होता है। वहाँ केवल जागरूकता होती है। विचार तब भी आते है लेकिन वे ऊंची गुणवत्ता के होते है। यदि वे नहीं होते है, तो आप उन्हें नज़रअंदाज़ कर सकते है और वे चले जाते है।

अपनी बत्ती जलाइए। जब आप एक काम से दूसरा काम, काम से

खेल, खेल से काम की तरफ जाते है तो आप ध्यान के निर्बाध प्रवाह को कैसे प्राप्त करते है...? नज़रिया बदलकर। कैसे? आपको यह एहसास होना चाहिए कि आपके अंदर कुछ ऐसा है जिसने हर एक गतिविधि को स्वीकार किया है चाहे वह आपको पसंद हो या ना हो। आपको यह एहसास होना चाहिए आपके अंदर गहराई में कुछ है जिसे इन विविध गतिविधियों को करने की जरूरत है और इसलिए आपने उनका चुनाव किया है। साथ ही, इस बात को जानिए कि हर एक गतिविधि का मकसद अंधेरे में रोशनी लाने का होता है। आपको आपकी नौकरी पसंद नहीं हो सकती है... कृपया कर उसे पसंद कीजिये। उसकी वजह से आपको खाने के लिए भोजन मिलता है। आपको पकाना पसंद नहीं हो सकता... कृपया उसे पसंद कीजिये। यह आपको और आपके परिवार को पोषित करता है। हम जो कुछ भी करते है उससे अंधेरे में रोशनी आती है। इस बात का एहसानमंद रहिए कि आप दिया जलाकर अंधेरे को मिटा सकते है। कृतज्ञता आपके स्वभाव में एक मधुर नियमितता, एक टकराव-मुक्त एकरूपता लाती है। यह एकरूपता कोमल होने के बावजूद भी स्थिर होती है और इसे ङ्गव्यवधानफ आने पर भी कायम रखा जा सकता है। कोई पुकारता है। दरवाजे की घंटी बजती है। जो कुछ भी होता है वह ठीक होता है क्योंकि ऐसा होना होता है... आपके अंदर कुछ होता है जो इसे संभव बनाता है...। जरूरी नहीं है आपके पास इन सभी घटनाओं के जवाब हो - आपके कार्यों के, ङ्गव्यवधानोंफ के - क्योंकि इन व्यवधानों का भी जिंदगी की महान, बड़ी, खूबसूरत पहेली में अपना स्थान होता है।

मेरे रवैये को बदलने के बाद जब मेरी अनुभूति में परिवर्तन हुआ, तो शुरुआत में, मैंने थोड़ा गुमराह महसूस किया। यह अप्रिय नहीं था, बस मैंने इससे पहले कभी ऐसा महसूस नहीं किया था। और जब मुझे इसकी आदत हो गई, तो मैंने अत्यंत शांति का अनुभव किया, यह दुनिया-को-मुझे-अब-कुछ नहीं देना है वाली अनुभूति होती है। जब प्रतिरोधी भावनाएँ नहीं होती है तो बहुत सी जगह होती है। आप दूसरों की बातें सुनते है और उनकी ज़िंदगियों में चल रही घटनाओं पर असंतोष प्रकट करते है और बात करते है। आप समझते है क्योंकि आप वहाँ होते है। आप उनके लिए अपने अंदर उमड़ते प्रेम को महसूस करते है।

खुद की परवाह। अच्छी बात यह है कि एक व्यक्ति को अपने प्राकृतिक आनंद से जुड़ने हेतु आश्चर्यजनक रूप से बुद्धिमान, धनवान, रूपवान, महत्वाकांक्षी या ङ्गउत्तमम होने की आवश्यकता नहीं होती, आपको सिर्फ खुद की परवाह करने की आवश्यकता होती है। देखभाल एक मानसिक आवेग है। जब यह एक मानसिक आवेग होता है, तो यह अच्छी तरह रहने के बारे में होता है, आनंद के स्पंदनों को वापस पाने के बारे में होता है जो हर एक रक्त-कोशिकाओं में से सूक्ष्मता से, मृदुलता से धड़कते है। जब हम परवाह नहीं करते है, जब हमारे अंदर का कोई हिस्सा क्रोध और आत्मदया को छोड़ना नहीं चाहता है, तो हमारा नकारात्मक आवेग सामान्य स्पंदन को अस्त-व्यस्त कर देता है। जब हम परवाह करते है, तो आनंद हमारे व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द सहजता से बहता है।

हमारे भीतर के देखभाल केंद्र को जीवित करना महत्वपूर्ण है। मैं व्यायाम करता हूँ क्योंकि मुझे परवाह है। मैं पौष्टिक भोजन करता हूँ क्योंकि मुझे परवाह है। ध्यान पूरी तरह दिमाग को आराम देता है, उसकी जागरूकता को बढ़ाता है और उसे बेपरवाही, अवसाद और निराशा से बाहर निकालता है। विस्तारित जागरूकता हमारी उपचार पद्धतियों के निर्माण में मदद करती है, इलाज की तलाश करती है और तसल्ली के सभी प्रकार के सकारात्मक तरीकों की खोज करती है। जैसा कि डॉक्टर ब्लेयर जस्टिस कहते है: देखभाल केंद्र जो हमें हमारी जीवन-शक्ति से जोड़ता है वह हमारे आंतरिक स्वास्थ्य का संरक्षक होता है...

देखभाल करने से हमें हमारे जीवन को बदलने के लिए साहस और शक्ति मिलती है। जैसा कि एल्फियर ने लिखा है, साहस की परीक्षा अक्सर मरने में नहीं बल्कि जीने में होती है। अलग-अलग लोगों के लिए साहस के अलग मायने होते है। बहुत से लोग बहादुरी से उनकी पीड़ा या गुस्से या दोनों को छोड़ देते है और माफ करने हेतु अपने सख्त आवरण को तोड़ते है। आखिरकार, देखभाल एक सुंदर दृष्टिकोण है जो हस्तक्षेप किए बिना मधुरता से कहता है, मैं आपको पीड़ा से मुक्त करने आया हूँ। यह शुरुआत करने के लिए बढ़िया स्थान है।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* सिम्पली स्पिरिचुअल-यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

आदिवासियों के लिए रोटरी घर

टीम रोटरी न्यूज़

चेंगई चेन्नई कॉरिडोर के रोटरी क्लब, रो ई मंडल 3231 ने चेन्नई के बाहरी इलाके में स्थित गांव मेट्टुकडू में आठ परिवारों के लिए कंक्रीट के घरों का निर्माण किया है। गाँव को क्लब ने अपने महैप्पी विलेजफ कार्यक्रम के हिस्से के रूप में गोद लिया गया है और यहाँ 20 परिवार रहते हैं। इस परियोजना के लाभार्थियों को बीपीएल परिवारों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। ''उनके तथाकथित 'घर' वास्तव में बेहद दयनीय स्थिति वाले झोपड़े थे।'' लो-कोस्ट शेल्टर प्रोजेक्ट के चेयरमैन श्रीधर सुब्बरमन ने कहा कि, ''हमने प्रधानमंत्री आवास योजना के समर्थन से ₹3.75 लाख की लागत से 300 वर्ग फुट क्षेत्र में प्रत्येक घर का निर्माण किया है।''

उद्घाटन समारोह में रो ई मंडल 3232 के PDG राजा श्रीनिवासन।

इन घरों की चाबी आयोजित किए गए कार्यक्रम में लाभार्थियों को सौंपी गई थी, जिसमें राष्ट्रीय एससी आयोग के उपाध्यक्ष एल मुरुगन मुख्य अतिथि थे। डीजी श्रीधर बलरामन और रो ई मंडल 3232 पीडीजी राजा श्रीनिवासन भी उपस्थित थे। एनजीओ, तमिलनाडु अराम मक्कल नाला संगम ने इस अवसर पर ग्रामीणों को नए कपड़े प्रायोजित किए।■

पुणे में दांतो का सस्ता इलाज

पुणे की मनीषा सेबल, जो तीन बार रूट कैनाल ट्रीटमेंट से गुजर चुकी हैं, अब पूरी तरह से संतुष्ट हैं। वह कहती हैं, ''मैं पिछले सात सालों से रोटरी डेंटल क्लिनिक की नियमित मरीज हूं और यहां हमेशा अच्छी सेवा और अच्छी गुणवत्ता वाला उपचार होता है। इसके अलावा, एक अन्य मरीज धनंजय कोरडे, जो इस क्लिनिक में इलाज कराते हैं,'' उन्होंने ने भी यही बातें कही।

क्लिनिक की स्थापना 1996 में रोटरी क्लब पुणे गणेशखिंद, रो ई मंडल 3131, द्वारा पुणे में बोपोडी में मधुकर शुक्ला के नेतृत्व में एक अनुदान के तहत किया गया था। दांतों की चिकित्सकीय प्रक्रियाएं रियायती शुल्क और अनुभवी पेशेवरों द्वारा प्रदान की जाती हैं। पुणे नगर निगम ने क्लिनिक के लिए जगह आवंटित की है। डॉ अलका पवार कहती हैं, ''यह हमारे क्लब की सबसे लंबी चलने वाली मेडिकल परियोजना है, जिसने क्लब के मेडिकल डायरेक्टर के रूप में काम किया है।''

रोटरी की विभिन्न सेवा परियोजनाओं पर आधारित पोस्टर क्लिनिक की दीवार पर लगे हुए हैं, जिन्होंने रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने का काम किया है। ''हम हर दिन लगभग 15-20 रोगियों को देखते हैं और सप्ताह में छह दिन काम करते हैं।'' चिकित्सा दल के प्रमुख डॉ दीपक सोनार कहते हैं, ''इस क्लिनिक ने अब तक एक लाख से अधिक रोगियों का इलाज किया है।''

क्लब की अध्यक्ष सुनीता सुरेंद्र पारसनी गर्व के साथ कहती हैं कि, ''यह क्लिनिक वास्तव में हमारे क्लब के मुकुट में एक हीरे की तरह है।''■

मणिपाल को मिला एक रोटरी स्किन बैंक

किरण ज़ेहरा

TRF ट्रस्टी गुलाम वाहनवती (बीच में) के साथ (बाएं से) रोटेरियन रामचंद्र उपाध्याय, PDG डी एस रवि, स्किन बैंक के निदेशक डॉ श्रीकुमार, PDG अभिनंदन शेट्टी, रोटेरियन डॉ एन उडुपा, परियोजना समन्वयक शेषप्पा ए राय और डॉ बसवराज हडपड स्किन बैंक में।

मणिपाल और उसके आसपास के इलाकों में जले से पीड़ित व्यक्तियों की मदद करने के लिए, रोटरी क्लब मणिपाल टाउन, रो ई मंडल 3182, ने हाल ही में कस्तूरबा अस्पताल में 113,317 डॉलर (₹80.45 लाख) की लागत से रोटरी च-क्र् स्किन बैंक की स्थापना की है। यह एक वैश्विक अनुदान प्रयास है जिसे अमेरीका के सेंट्रल चेस्टर काउंटी, वेस्टर्न हेनरिको काउंटी, रिचमंड, बॉन एयर और साउथ रिचमंड के रोटरी क्लबों एवं टीआरएफ के सहयोग से निष्पादित किया गया है। IPDG अभिनन्दन शेट्टी ने भी परियोजना के लिए डीडीएफ से पर्याप्त धनराशी को स्वीकृति दी थी।

मणिपाल अकैडमी ऑफ़ हायर एजुकेशन (MAHE) ने अस्पताल में प्रयोगशाला के लिए जगह प्रदान की है। अगस्त 2019 में इस स्किन बैंक ने छोटी शुरुआत की जिसका उद्घाटन मणिपाल अकैडमी ऑफ़ हायर एजुकेशन (MAHE) के प्रो-चांसलर डॉ एच एस बल्लाल ने किया था। उन्होंने, डॉ रामदास एम पाई, MAHE के चांसलर और वाईस चांसलर विनोद एच. भट के साथ मिलकर स्किन बैंक के लिए एक अक्षय निधि स्थापित करने हेतु टीआरएफ को 35,000 डॉलर का योगदान दिया। वे तीनों रोटरी क्लब मणिपाल टाउन के मानद सदस्य है।

रो ई निदेशक कमल संघवी और टीआरएफ न्यासी गुलाम वाहनवटी ने भी केंद्र का दौरा किया और मणिपाल में स्किन बैंक स्थापित करने के लिए क्लब के सदस्यों की प्रशंसा की।

कस्तूरबा अस्पताल में प्रोफेसर और प्लास्टिक सर्जरी के कजऊ एवं स्किन बैंक के निदेशक, डॉ श्रीकुमार ने कहा कि वर्तमान में, 25 दानकर्ताओं ने बैंक में पंजीकरण करवाया है। "दानकर्ताओं की त्वचा उनकी मृत्यु के छह घंटे के भीतर प्राप्त की जाएगी। फिर इसे संसाधित करके पांच वर्षों के लिए संग्रहित किया जा सकता है," उन्होंने समझाया। 40 प्रतिशत से अधिक जले (थर्ड डिग्री बर्न) मरीजों को घातक संक्रमण होने का अधिक खतरा होता है क्योंकि त्वचा उस हद तक जल चुकी होती है जहां वह ठीक नहीं हो पाती। जले हिस्से को अस्थायी रूप से ढकने के लिए दानकर्ताओं से प्राप्त त्वचा को इस्तेमाल किया जा सकता है। परियोजना समन्वयक डॉ सेसप्पा ए. राय, ने आगे कहा कि त्वचा और खून का अनुकूल होना आवश्यक नहीं होता। 17 वर्ष से अधिक उम्र का कोई भी व्यक्ति अपनी त्वचा को दान कर सकता है और उसे प्राप्त करने की विधि नेत्र दान करने के समान ही होती है।

डॉ श्रीकुमार और उनके दल ने इस प्रक्रिया को गहराई से समझने के लिए पहले मुंबई के एक स्किन बैंक में विशेष प्रशिक्षण लिया था। ■

RID कमल संघवी और उनकी पत्नी सोनल, DGE बी राजारामा भट्ट के साथ स्किन बैंक में।

रोटरी क्लब कुड्डलोर कोस्टल सिटी - रो ई मंडल 2981

मंडल ने उसके छह व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों में 700 महिलाओं को सिलाई में प्रशिक्षण दिया। क्लब ने पहले चरण में 300 महिलाओं को मोटर वाली सिलाई मशीनें प्रदान की। इस मंडल परियोजना की लागत ₹30 लाख है।

रोटरी क्लब होसुर सिपकोट - रो ई मंडल 2982

डीजी ए के नटेसन ने अन्देवनापल्ली गाँव के सरकारी हाई स्कूल में पीडीजी वासु और पीडीजी धर्मेश पटेल की उपस्थिति में एक शौचालय खण्ड का उद्घाटन किया। परियोजना की लागत ₹5.65 लाख है।

रोटरी क्लब गुड़गाँव कॉस्मोपॉलिटन - रो ई मंडल 3011

क्लब की अध्यक्ष रुचि राय ने नाथुपुर गाँव के एक सरकारी स्कूल में एक पुस्तकालय का निर्माण करने के लिए किताबें दान करके एक साक्षरता कार्यक्रम किया। इस परियोजना से आसपास के झुग्गी समुदाय के लगभग 135 बच्चे लाभान्वित होंगे।

रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - रो ई मंडल 3000

KAMAK स्कूल में सुनने में अक्षम बच्चों के लिए ₹50,000 की लागत से एक स्मार्ट कक्षा शुरू की गई। अन्य रोटेरियनों के साथ क्लब के अध्यक्ष रवि पार्थसारथी उद्घाटन समारोह में मौजूद थे।

विधियाँ

रोटरी क्लब चंद्रपुर - रो ई मंडल 3030

शहगाँव गाँव की ज़िला परिषद में एक दन्त जाँच शिविर आयोजित किया गया। डॉक्टरों के एक दल के द्वारा करीब 150 बच्चों का परीक्षण किया गया। उन्हें टूथपेस्ट और टूथब्रश वितरित किये गए।

रोटरी क्लब भिवाड़ी शक्ति - रो ई मंडल 3053

एकल-उपयोग प्लास्टिक के खिलाफ एक दिवसीय अभियान बाबा मोहन राम किसान कॉलेज में किया गया।डीजी हरीश गौड़ और आईएएस अधिकारी नीलाभ सक्सेना कार्यकर्म में उपस्थित थे।क्लब ने विभिन्न स्थानों पर, प्लास्टिक के उपयोग के खिलाफ संदेशों के साथ 2,000 कैनवस बैग वितरित किए।

रोटरी क्लब बड़ोदा कालानगरी - रो ई मंडल 3060

क्लब के सदस्यों ने क्लब के गोद लिए गए गाँव जिलोद में बच्चों को स्वेटर वितरित की। सर्दी के महीनों में ऊनी कपड़े उन्हें गर्म रखेंगे।

रोटरी क्लब अमृतसर नॉर्थ - रो ई मंडल 3070

सिख धर्म के संस्थापक, गुरु नानक की जयंती को चिन्हित करने के लिए एक अंतर-विद्यालय शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में दस स्कूलों ने हिस्सा लिया और डीजीएन दविंदर सिंह मुख्य अतिथि थे।

रोटरी क्लब हिम्मतनगर - रो ई मंडल 3054

एक प्लास्टिक विरोधी अभियान चलाया गया और क्लब के सदस्यों ने विधायक राजेन्द्रसिंह चावड़ा और नगरपालिका अध्यक्ष अनिरुद्ध सोराठिया की उपस्थिति में सब्जी मंडी में कपड़े के थैले वितरित किए।

रोटरी क्लब रूरकी मिडटाउन - रो ई मंडल 3080

क्लब अपनी *रोटरी रसोई* परियोजना के तहत शहर के सिविल अस्पताल में मरीज़ों के साथ आने वाले लोगों को पहले और तीसरे शुक्रवार को खाना खिलाता है। इस उद्देश्य के लिए एक रसोईघर बनाया गया है और यह परिचरों को एक अस्थायी आश्रय भी प्रदान करता है।

रोटरी क्लब चांदौसी सिटी स्टार - रो ई मंडल 3100

दैनिक जीवन में प्लास्टिक और पॉलिथीन बैग के उपयोग से होने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए शहर में व्यस्त जंक्शनों, राजमार्गों और बाजारों में प्लास्टिक विरोधी अभियान चलाया गया। लोगों और दुकानदारों को कपड़े के थैले वितरित किये गए। नगरपालिका अध्यक्ष इंदु रानी ने इस मुहिम में हिस्सा लिया।

रोटरी क्लब वाराणसी सेंट्रल - रो ई मंडल 3120

क्लब के द्वारा गोद ली गई एक कन्या शाला, काशी बालिका शिक्षा निकेतन के बच्चों के लिए एक दन्त और नेत्र जाँच शिविर का आयोजन किया गया। करीब 350 विद्यार्थियों की जाँच की गई और अनुवर्ती उपचार कार्ड दिए गए। टूथपेस्ट, टूथब्रश और चश्में भी वितरित किए गए।

रोटरी क्लब जालना सेंट्रल - रो ई मंडल 3132

शहर के निवासियों के लिए एक 1.2 किमी का जॉगिंग ट्रैक तैयार किया गया ताकि इस सुविधा का उपयोग करके वे स्वयं को फिट रख सकें। नियमित जॉगर्स को आकर्षित करने के लिए एक प्राकृतिक पृष्ठभूमि के बीच यह ट्रैक स्थित है।

रोटरी क्लब बॉम्बे एयरपोर्ट - रो ई मंडल 3141

प्रोजेक्ट पॉजिटिव हेल्थ के अंतर्गत, क्लब ने अँधेरी रेलवे स्टेशन पर एक दिन के लिए एक ऑटोमेटेड ऑफिस बीपी उपकरण को स्थापित किया जिसके दौरान 150 से अधिक यात्रियों के बीपी की जाँच की गई। कई मरीज अपने बीपी की जाँच करवाने हेतु क्लीनिक में जाकर अपनी बारी आने का इंतजार करने के बजाए रेलवे स्टेशन पर इस तरह की सुविधा मिलने से खुश है।

विधियाँ

रोटरी क्लब नेल्लोर - रो ई मंडल 3160

कोथावंगल्लू गाँव में एक नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न बीमारियों के लिए 160 लोगों की जाँच की गई। दवाइयाँ वितरित की गई और 20 लोगों को चश्में लगाने को बोला गया। क्लब द्वारा रोटरी आइ हॉस्पिटल और रोटरी जनरल हॉस्पिटल चलाए जा रहे है।

रोटरी क्लब SPIC नगर - रो ई मंडल 3212

एक आवासीय RYLA का आयोजन किया गया जिसमें 50 से अधिक कॉलेज के विद्यार्थियों को अन्य चीज़ों के साथ ही नेतृत्व कौशल, टीम निर्माण, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और व्यव्हार कुशलता में प्रशिक्षण दिया गया।

रोटरी क्लब कोयम्बटूर मेरीडियन - रो ई मंडल 3201

फर्स्ट स्टेप परियोजना के अंतर्गत वन केयर मेडिकल सेंटर में दो विकृति सुधारात्मक सर्जरियाँ की गई। 8 और 10 वर्षीय दो लड़कों को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और उनकी फिजियोथेरेपी की जा रही है। इस परियोजना की लागत ₹60,000 है।

रोटरी क्लब मद्रास साउथवेस्ट रो ई मंडल 3232

क्लब द्वारा प्रायोजित डी जी वैष्णव कॉलेज के रोटरेक्ट क्लब ने इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ के मानसिक रूप से पीड़ित 44 मरीजों के बाल अच्छी तरह से काटने के लिए सात हेयर स्टाइलिस्ट को रखा। वे हर माह इस परियोजना को आयोजित करने की योजना बना रहे है।

रोटरी क्लब कलकत्ता मैगनम - रो ई मंडल 3291

रोटरेक्टरों और इंडसइंड बैंक के सहयोग से रोटरी सदन में आयोजित एक कार्यक्रम में पड़ोसी क्षेत्र बांसद्रोणी के शांति रानी स्कूल की करीब 180 वंचित छात्राओं को कपड़े दिए गए।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुणाशेकरण द्वारा रुपांकन

Rotary News Subscription Remittances

You can pay the
Rotary News / Rotary Samachar
subscription online

Our Bank details:

Bank : HDFC Bank
SB Account

Branch : Montieth Road
Egmore, Chennai

A/c Name : Rotary News Trust

A/c No. : 50100213133460

IFSC Code : HDFC0003820

E mail us following details:

Name of Club

President/Secretary's name

Amount/Date of transfer/UTR Number

For physical payment by cheque or cash in bank, write **Club Name only** without prefixing "Rotary club of". Eg. Rotary Club of Delhi Central should be written: Delhi Central.

Rotary at a glance

Rotarians : 1,204,996

Clubs : 35,907

Districts : 525

Rotaractors : 168,960

Clubs : 10,192

Interactors : 321,172

Clubs : 13,964

RCC : 10,853

As on Jan 15, 2020

*Please note Interact clubs that have not reported Interact Adviser in the past two Rotary years, are placed in "Suspended" status effective Oct 1, 2019.

Membership Summary

As on Jan 2, 2020

RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract Clubs	*Interact Clubs	RCC
2981	114	4,888	253	46	27	223
2982	67	3,138	167	82	64	55
3000	126	5,429	523	186	199	210
3011	88	3,678	927	49	66	25
3012	99	3,754	961	51	60	59
3020	71	4,221	242	54	32	350
3030	91	4,997	668	95	127	286
3040	86	2,018	232	36	45	144
3053	62	2,780	484	16	37	99
3054	120	5,840	1015	76	133	475
3060	96	4,367	617	53	48	143
3070	106	3,141	446	45	20	58
3080	85	3,488	321	84	65	112
3090	78	2,018	55	37	4	122
3100	85	2,244	176	12	12	146
3110	119	3,791	361	28	7	105
3120	78	3,321	452	39	15	53
3131	135	5,454	1207	101	143	114
3132	84	3,491	362	34	67	158
3141	103	5,716	1360	115	108	88
3142	92	3,316	687	78	85	64
3150	93	3,662	390	58	88	116
3160	69	2,454	176	28	3	83
3170	128	5,738	711	67	168	165
3181	81	3,579	350	60	178	116
3182	80	3,090	262	41	47	97
3190	126	4,996	707	132	131	60
3201	145	5,627	448	103	53	50
3202	126	5,066	308	77	105	47
3211	141	4,570	343	8	23	132
3212	101	4,092	318	100	101	146
3231	91	3,724	465	50	67	355
3232	126	5,124	882	125	135	91
3240	89	3,086	413	50	363	190
3250	101	3,947	697	60	62	182
3261	71	2,646	413	16	15	43
3262	102	3,549	432	45	33	77
3291	150	3,742	760	86	74	614
India Total	**3,805**	**149,782**	**19,591**	**2,423**	**3,010**	**5,653**
3220	69	1,982	284	81	118	73
3271	88	1,405	254	60	10	18
3272	148	1,827	302	51	14	43
3281	212	5,695	885	220	36	195
3282	167	4,319	465	142	36	46
3292	122	4,844	762	130	103	115
S Asia Total	**4,611**	**169,854**	**22,543**	**3,107**	**3,327**	**6,143**

Source: RI South Asia Office

On the racks

From Oberoi to Oyo: Behind the scenes with the movers and shakers of India's hotel industry

Author : **Chitra Narayanan**
Publisher : **Penguin Portfolio**
Pages : **319; ₹399**

In this book, the author, a journalist who has covered the business of hospitality over long years, traces the origins of the hotel industry in India and tries to provide a glimpse of the future of stays. How did the Taj, the Oberoi and ITC come to dominate the hotel landscape in India? How did they cope when the international chains — Marriott, Accor, Radisson, etc — arrived, and when young disruptive challengers like Oyo emerged? The book provides a behind-the-scenes look at the industry, the business models, the personalities behind the hotels and the ongoing war for supremacy.

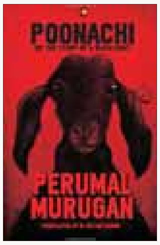

Poonachi: Or the Story of a Black Goat

Author : **Perumal Murugan (Translated from Tamil by N Kalyan Raman)**
Publisher : **Context, Westland Publication**
Pages : **179; ₹359**

Through a seeming act of providence, an old couple receives a day-old female goat as a gift from the cosmos. Thus, begins the story of Poonachi, the little orphan goat.

As you follow her story from forest to habitation, independence to motherhood, you recognise in its significant moments the depth and magnitude of your own fears and longings, fuelled by the instinct for survival that animates all life. Masterly and nuanced, Perumal Murugan's tale forces us to reflect on our own responses to hierarchy and ownership, selflessness and appetite, love and desire, living and dying. Poonachi is the story of a goat who carries the burden of being different all her life, and survives against odds. It is equally an expression of solidarity with the animal world and the female species. The tale is also a commentary on our times, on the choices we make as a society and a nation, and the increasing vulnerability of individuals, particularly writers and artists, who resist when they are pressed to submit.

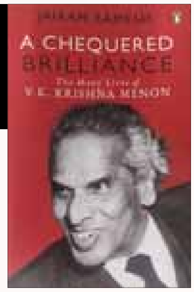

A Chequered Brilliance: The Many Lives of V K Krishna Menon

Author : **Jairam Ramesh**
Publisher : **Penguin Viking**
Pages : **776; ₹999**

In Jairam Ramesh's gigantic and well-researched biography of V K Krishna Menon, you will find all aspects of Menon's life — childhood in a rich Malayali family, his early association with the Theosophical Society, his days in London, and above all his relationship with India's first Prime Minister Jawaharlal Nehru. Did you know that he helped to found Penguin Books? This is a compelling biography of one of India's most controversial and consequential public figures. Menon continues to command our attention not just because he was Nehru's confidante and soulmate but also for many of his own political and literary accomplishments. A relentless crusader for Indian independence in the UK in the 1930s and 1940s, he was a global star at the United Nations in the 1950s before he was forced to resign as India's Defence Minister after the humiliation India suffered during the Indo-China war of 1962.

Meticulously researched and based entirely on new archival material, this book reveals Krishna Menon in all his capabilities and contradictions. It is also a rich history of the tumultuous times in which he lived and which he did so much to shape.

The beauty of this book is that you can open any page, any chapter, and it will grip you.

Compiled by Kiran Zehra
Designed by Krishnapratheesh S

प्राकृतिक न्यूज़ीलैंड आपकी सांसें थाम देता है

टीसीए श्रीनिवास राघवन

न्यूज़ीलैंड की अत्यधिक तारीफ सुनने के बाद, पिछले जुलाई में कॉलेज के हम तीन साथियों एवं हमारी पत्नियों ने न्यूज़ीलैंड जाने का फैसला किया। वह बहुत दूर है, लगभग 12,000 किलोमीटर और वहाँ पहुँचने में लगभग 20 घंटे लगते है जिस दौरान सिंगापुर में चार घंटे का एक स्टॉप लेना पड़ता है जो अपने आप में एक अनुभव है।

पूर्व में एक बार न्यूज़ीलैंड जाने परंतु साउथ आइलेंड ना देख पाने के कारण, मैंने सभी को वहाँ पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करने के लिए राज़ी कर लिया। यह बहुत ही बढ़िया निर्णय साबित हुआ। मैंने आज तक ऐसी कोई जगह नहीं देखी जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता की सीमा एवं प्रबलता से श्रेष्ठ हो। हमने पहाड़ो, वादियों, नदियों, धाराओं, झीलों, तटों, खोहों, पेड़ों, जंगलों, फूलों, ख़ुशबुओं और धरती पर सांस लेने योग्य सबसे स्वच्छ हवा के साथ मीलों-मील का सफर तय किया। सबसे बढ़कर, आसमान गहरा नीला था। यह एक ऐसी जगह है जहाँ सुंदरता नीरस बन जाती है।

लेकिन - हमेशा एक लेकिन होता है - यहाँ बहुत तेज़ हवाएं चलती है। और जब हमारे यहाँ ठंड पड़ती है उस समय यहाँ गर्मी होती है क्योंकि यह दक्षिणी गोलार्ध में है और हम उत्तरी गोलार्ध में। यहाँ तक कि नवम्बर के मध्य में जब न्यूज़ीलैंड में गर्मी की शुरुआत होती है उस वक्त भी कुछ जगहों पर कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। हमें अपने साथ मोटे जैकेट न रखने का वाकई में पछतावा हुआ।

न्यूज़ीलैंड जाने का सबसे अच्छा तरीका है छह या आठ लोगों के एक छोटे समूह में जाना। शुरुआत में ही जब हम ऑकलैंड से क्राइस्टचर्च पहुंचे तो हमने ड्राईवर सहित एक वैन को किराए पर लेने का फैसला किया। यह बहुत सही निर्णय साबित हुआ। यह सस्ता नहीं था, लेकिन मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूँ: यह भारत से बहुत सस्ता था और चालकों के जानकार, शिक्षित एवं मददगार होने की बदौलत सैर बहुत अच्छी थी। साउथ आइलेंड में आठ दिनों तक - लगभग 2000 किलोमीटर - आरामदायक सफर कराये जाने पर हमने 60,000 प्रति व्यक्ति के हिसाब से चुकाए। भारत में हमें इसकी दोगुनी कीमत देनी पड़ती।

लेकिन न्यूज़ीलैंड के होटल घटिया है। छोटे कमरे, नाममात्र की सुविधाएं, बेकार रेस्टोरेन्ट और सबसे खराब, बाथरूम इतने छोटे होते है कि नहाने के बाद आप बमुश्किल अपने आप को सुखा पाते हो। वास्तव में, उनमें से एक बाथरूम में पारभासी काँच का दरवाजा था जिसके ठीक सामने पॉट था! भयंकर।

मोटेल बहुत शानदार थे। हम साउथ आइलेंड में उनमें से पाँच में रुके - हर एक में एक रात - और हम यह देखकर चकित थे कि वे सभी खाने पकाने के सामानों, डिशवाशर वॉशिंग मशीनों एवं उच्च श्रेणी के टीवी सेटों से सुसज्जित थे। फॉक्स ग्लैशियर वाले मोटेल के छोड़कर - जिसे हम देख नहीं पाए क्योंकि बारिश शुरू हो गई थी, बाकी सभी लगभग 350 वर्गफीट के थे। यह हमारी सरकार द्वारा गरीबों के लिए बनाए जा रहे किफ़ायती आवासों के क्षेत्रफल से केवल 50 वर्गफीट कम है। बारिश समस्या हो सकती है क्योंकि हमारे सैर-सपाटे के अभियानों में एक अभियान में हम खराब मौसम के कारण नहीं जा पाये थे। लेकिन 14 दिनों के हमारे दौरे के दौरान केवल ये दो घटनाएँ थी जो हमारी योजना के अनुरूप नहीं घटी।

यह जानकर हम निराश हुये कि न्यूज़ीलैंड के भोजन में उचित विविधता नहीं है। अच्छा होगा कि आप इसके भोजन से दूर रहें ना केवल इसलिए क्योंकि यह बेस्वाद है बल्कि इसलिए भी क्योंकि यह बहुत महंगा भी है। लेकिन न्यूज़ीलैंड की बीयर और वाइन सस्ती और बढ़िया है। हमने केवल थाई और भारतीय रेस्टोरेन्टो में खाना खाया जहाँ पर्याप्त मात्रा में भोजन परोसा जाता है और हम छह लोग कुल 90 न्यूज़ीलैंड डॉलर में व्यंजन साझा कर सके।

हम चीनी पर्यटकों की संख्या को देखकर चकित थे। हम जहाँ कहीं भी गए हमने उनकी भीड़ देखी। वास्तव में, यदि न्यूज़ीलैंड सतर्क नहीं रहता है तो हो सकता है चीन उसे खरीदना चाहे - ठीक उसी तरह जैसे कुछ समय पूर्व डोनाल्ड ट्रम्प आइसलैंड खरीदना चाहते थे। ■

हम चीनी पर्यटकों की संख्या को देखकर चकित थे। हम जहाँ कहीं भी गए हमने उनकी भीड़ देखी। यदि न्यूज़ीलैंड सतर्क नहीं रहता है तो हो सकता है चीन उसे खरीदना चाहे।

मैंने आज तक ऐसी कोई जगह नहीं देखी जो इसकी प्राकृतिक सुंदरता की सीमा एवं प्रबलता से श्रेष्ठ हो।

इंटरनेशनल असेंबली, सैन डिएगो में DGEs

जमीन पर बैठे हुए, बाएं से: हरि कृष्णा नंबियार (3202); संजीव राय मेहरा (3011); शब्बीर शाकिर (3030); आर बालाजी बाबू (2981); एम सतीश बाबू (3020); सुन्निल मेहरा (3141) और एस मुत्तुपलनियप्पन (3232)।

कुर्सी पर बैठे हुए, बाएं से: रश्मि कुलकर्णी (3131); संग्राम पाटिल (3170); गजेंद्र सिंह नारंग (3040); धरमवीर सिंह भदोरिया (3053); **TRF** ट्रस्टी गुलाम वाहनवती; **RID** भरत पांड्या; **RID** कमल संघवी, **PDG** दीपक पुरोहित; ए एल चोककलिंगम (3000); सौम्या राजन मिश्रा (3262); हनमंथ रेड्डी (3150); करुनेश श्रीवास्तवा (3120) और संदीप कदम (3142)।

खड़े हुए, बाएं से: जोस माधवस्सेरी (3201); बी एल नागेंद्र प्रसाद (3190); राजाराम भट (3182); राजेश अग्रवाल (3054); हरीश मोटवानी (3132);के एल वेंकटेशन (2982); फकीर मोहंती (3261); राजीब पोखरेल (3292); थॉमस ववनिकुनेल (3211); विजय अरोड़ा (3090); आलोक गुप्ता (3012);राजन गंडोत्रा (3250);दिनेश शुक्ला (3110); दविंदर सिंह (3070); सुभाषिश चटर्जी (3240); रमेश बजाज (3080); प्रशांत जानी (3060); चिन्नापा रेड्डी (3160); एम रंगनाथ भट (3181); सुदीप मुखर्जी (3291); पी एन बी मुरुगादॉस (3212); मनीष शारदा (3100) और अजित वीरसिंघे (3220)।

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/05271 Rotary Samachar Published on 1st of every month

Rotary India Centennial Summit 2020

Biswa Bangla Convention Center
Kolkata, West Bengal, India
14th, 15th & 16th February 2020

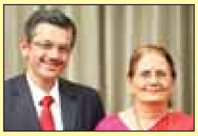

Dear Friends,

Rotary India Centennial Summit 2020 is the celebration of completion of 100 years of Rotary in India.

Rotary started in India, in the city of Kolkata on 1st January, 1920 when Rotary Club of Calcutta was chartered in what is today RI District 3291.

This summit will be the celebration of Rotary's motto 'Service above Self' and we shall do this by showcasing the work of Rotary in India in the six areas of focus. Even as we do that we shall also figure out the plans for the future.

Rotary India Centennial Summit is expected to have 5,000 delegates from more than 25 countries. The program will have celebrity speakers and top leadership of the Rotary world. It will be an excellent opportunity to meet friends from across the globe, make new friends, share success stories and take back great ideas from the event.

The lavish food court and the outstanding entertainment will add up to make this a NOT TO BE MISSED event.

You have to be there.

Sincerely,

RID Kamal Sanghvi
Convenor, RICS 2020

RID Dr. Bharat Pandya
Co-convenor, RICS 2020

The Venue

Termed as one of the largest convention centers in South Asia, Biswa Bangla Convention Center in Kolkata, West Bengal is all set to host RICS 2020. The magnificent property is a home to a convention center which can efficiently accommodate more than 4,000 guests and a cluster of lovely banquet halls.

Our Esteemed Overseas Guests

Mark Maloney
President
Rotary International

Shekhar Mehta
President Nominee
Rotary International

PRIP Gary Huang
TRF Trustee Chair

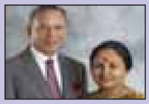
PRIP K R Ravindran
TRF Trustee Chair 20-21

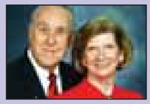
PRIP John Germ
TRF Trustee Chair 21-22

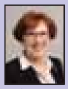
Johrita Solari
RI Director

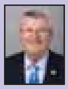
Piotr Wygnanczuk
RI Director

Mario Camargo
RI Director

Francesco Arezzo
RI Director

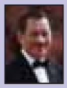
Rafael Garcia
RI Director

Dean Rohrs
RI Director

David Stovall
RI Director

Kyun Kim
RI Director

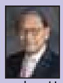
Sangkoo Yun
TRF Trustee

Brenda Cressey
TRF Trustee

Jorge Aufranc
TRF Trustee

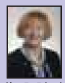
Julia D Phelps
TRF Trustee

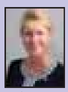
Jennifer Jones
TRF Trustee

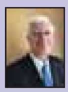
Peter Kyle
RID Elect

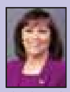
Vicki Puliz
RID Nominee

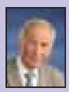
Urs Klemn
RID Nominee

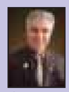
Aziz Memon
Inc. TRF Trustee

San-Lien Hsieh
Past RI Director

Fredrick Lin
Past RI Director

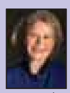
Anne Matthews
Past RI Director

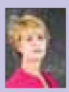
Nancy Barbee
RRFC

Sue Paget
CEO, FHAP

Welcome to Kolkata on 14th, 15th & 16th February 2020

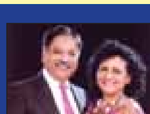
PDG Vinod Bansal
Chairman
RICS 2020

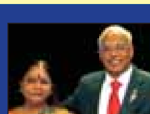
PDG Anirudha Roy Chowdhury
Jt.-Chairman
RICS 2020

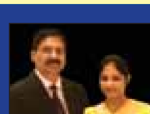
PDG Kishore Kumar Cherukumalli
Secretary
RICS 2020

Log on to **www.rics2020.org** for online registration